मदरलैण्ड वॉइस की मुहिम

#savegajraj#saveelephant

वर्ष : 2 अंक: 167 मूल्य : 4 रू.

RNI No. -DELHIN/2019/78266

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

मदरलैण्ड वॉइस

सोमवार, 08 फरवरी 2021

राष्ट्र प्रेमियों का दैनिक समाचार पत्र

दिल्ली से प्रकाशित एवं जयपुर, लुधियाना, चंडीगढ़, पटना, रायपुर, देहरादून, शिमला में प्रसारित

कुदरत का विकराल रूप

उत्तराखंड में ग्लेशियर टूटने से भारी तबाही

- चमोली के पास हुआ हादसा, 150 से अधिक लोगों के लापता होने की आशंका
- उत्तराखंड के साथ ही उत्तर प्रदेश में भी हाई अलर्ट जारी किया गया
- मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने आपदा से निपटने की आदेश दिए
- ऋषि गंगा पावर प्रोजेक्ट को भी बहुत ज्यादा नुकसान होने का अनुमान
- प्रोजेक्ट में सैकडों लोग काम कर रहे थे, कई मजदूरों के बहने की खबरें
- नदी के किनारे रहने वाले लोगों को घरों को खाली कर सुरक्षित जगहों पर जाने के आदेश
- श्रीनगर गढ़वाल धारी देवी मंदिर परिसर पुलिस प्रशासन ने खाली करवाना शुरू किया

चमौली। उत्तराखंड के चमौली में रविवार को ग्लेशियर टूटने से व्यापक तबाही होने की आशंका है। ये हादसा चमोली के रैणी गांव के पास हुआ। ग्लेशियर का प्रभाव काफी प्रकोप है वह लगातार तेजी से बह रहा है। अब तक 150 से अधिक लोगों के लापता होने की आशंका है, प्रसाशन की टीम सुरक्षा कार्यों के लिए रवाना हो गयी है। मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने हालात पर कहा है कि वह हर प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने ट्वीट किया और लिखा- चमोली ज़िले से एक आपदा का समाचार मिला है। ज़िला प्रशासन, पुलिस विभाग और आपदा प्रबंधन को इस आपदा से निपटने की आदेश दे दिए हैं। किसी भी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान ना दें। सरकार सभी जरूरी कदम उठा रही है। सीएम ने कहा कि वह मौके के लिए रवाना हो रहे हैं।

अनुमान लगाया जा रहा है कि ये एक बहुत बड़ी तबाही साबित हो सकती है क्योंकि ग्लेशियर काफी बड़ा है। इस तबाही के कारण ऋषि गंगा प्रोजेक्ट को भी बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है। अनुमान ये लगाया जा रहा है ये तबाही 2013 में आयी तबाही की तरह ही है। पूरे प्रदेश को हाई अलर्ट पर कर लिया है। एनडीआरएफ की लोगों की सुरक्षा के लिए लोगों तक पहुंच रही है। अभी ताजा खबरों के अनुसार जिस जगह ग्लेशियर टूटा वहा पर कई गांव है, इसके अलावा पास में ही सरकार का ऋषि गंगा पावर प्रोजेक्ट चल रहा था जिसमें सेकडों लोग काम कर रहे थे। कई मजदूरों के बहने की खबरें भी आ रही है। सरकार के इस प्रोजक्ट को काफी ज्यादा नुकसान हुआ है। जैसे -जैसे ये ग्लेशियर आगे बढ़ रहा है इससे काफी ज्यादा और भी नुकसान होने की खबरें हैं। प्रशाशन ने अलर्ट जारी करते हुए कहा है कि नदी के किनारे रहने वाले लोग अपना घरों को खाली कर दे और सुरक्षित जगह लगे जाए क्योंकि ये आपदा कितना नुकसान कर सकती है इसके बारे में अभी पूरी जानकारी नहीं दी जा सकती है।

चमोली जिले में ग्लेशियर फटने से अलकनंदा और धौली गंगा उफान पर है। पानी के तेज बहाव के मद्देनजर कीर्ति नगर, देवप्रयाग, मुनि की रेती इलाकों को अलर्ट पर रहने को कहा गया। पानी के बहाव में कई घरों के बहने की आशंका है। आस-पास के इलाके खाली कराए जा रहे हैं। एसडीआरएफ और फायर की टीम जोशीमठ इलाके के रेणी गांव में पहुंचकर बचाव कार्य में जुट गई है। आईटीबीपी के अनुसार, 'रेणी गांव के नजदीक धौलीगंगा में भयानक बाढ़ देखी गई है, नदी किनारे स्थित कई घर तबाह हो गए हैं। हताहतों की संख्या बढ़ने की आशंका है। आईटीबीपी के सैकड़ों जवान रेस्क्यू के लिए रवाना हो गए हैं।' अनहोनी की आशंका के चलते श्रीनगर गढ़वाल धारी देवी मंदिर परिसर पुलिस प्रशासन ने खाली करवाना शुरू कर दिया है। हरिद्वार तक में अलर्ट जारी कर दिया गया है।

संक्षिप्त समाचार

नीतीश कुमार ने उत्तराखंड घटना को बताया दुखद

पटना। उत्तराखंड के जोशीमठ से 24 किलोमीटर दूर पैंग गांव से ऊपर ग्लेशियर फटने की घटना पर बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने दुख प्रकट किया है। नीतीश कुमार ने कहा कि अभी-अभी मुझे इस घटना की जानकारी मिली है। मैं इस मसले पर अधिकारियों से बात कर रहा हूं। चूंकि ये गंगा नदी से जुड़ा मामला है, ऐसे में इस घटना के बाद यहां भी अलर्ट रहने की जरूरत है। नीतीश कुमार ने कहा कि इस मसले को लेकर हम अभी तुरंत अधिकारियों के साथ बैठक करेंगे। इससे पहले नीतीश ने ट्वीट किया कि उत्तराखंड आपदा में फंसे लोगों और राहत व बचाव कार्यों में लगे लोगों के लिए प्रार्थना। इस आपदा में पूरा बिहार उत्तराखंड के लोगों के साथ है। हमारे अधिकारी उत्तराखंड मुख्यमंत्री कार्यालय के सम्पर्क में हैं।

'युद्ध अभ्यास-20' के लिए भारत पहुंचा अमेरिकी सेना का दल

नई दिल्ली। अमेरिकी सेना के एक दल ने शनिवार को राजस्थान के सूरतगढ़ स्थित भारतीय वायुसेना कार्यालय में अपनी आमद दर्ज कराई। यह दल भारत और अमेरिकी सेना के 16वें संयुक्त सैन्य अभ्यास में शिरकत करने पहुंचा है। 'युद्ध अभ्यास-20' के नाम से यह संयुक्त कवायद सोमवार से शुरू होकर 21 फरवरी तक चलेगी। इस संयुक्त अभ्यास का आयोजन दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग के तहत किया जाता है। भारतीय सेना की दक्षिण पश्चिम कमांड ने एक ट्वीट में अमेरिकी सैन्य दल के आगमन की जानकारी दी। साथ ही बताया कि कोविड-19 प्रोटोकॉल को पूरा करने के बाद अमेरिकी सैन्य दल को महाजन फील्ड फायरिंग रेंज स्थित फॉरेन ट्रेनिंग नॉड में शिफ्ट कर दिया जाएगा। भारत में स्थित अमेरिकी दूतावास की तरफ से कहा गया कि इस अभ्यास में 250 अमेरिकी सेना और 250 भारतीय सेना के जवान शिरकत कर रहे हैं। यह वार्षिक अभ्यास प्रशिक्षण व सांस्कृतिक आदान-प्रदान के जरिये संयुक्त अंतर संचालन क्षमताओं को बढ़ाता है, जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में साझा रक्षा उद्देश्यों के जरिये स्थायी भागीदारी को बढ़ावा देने का काम करते हैं।

दूसरे विषयों पर बोलने से पहले सचिन तेंदुलकर को सावधानी बरतनी चाहिए: पवार

पुणे। किसान आंदोलन को लेकर दुनिया भर से प्रतिक्रिया आने के बीच राकांपा अध्यक्ष शरद पवार ने मशहूर क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर को नसीहत देते हुए कहा कि किसानों के बारे में बोलने के दौरान काफी सावधानी बरती चाहिए। अमेरिकी गायिका रिहाना और पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग सहित कुछ विदेशी शख्सियतों के प्रदर्शनकारी किसानों के समर्थन में ट्वीट के बाद तेंदुलकर और प्रख्यात गायिका लता मंगेशकर सहित विभिन्न हस्तियों ने सोशल मीडिया पर 'इंडिया टुगैदर' और 'इंडिया अगेन्स्ड प्रोपेगैंडा' हैश टैग से सरकार के रुख के समर्थन में ट्वीट किए थे। तेंदुलकर और मंगेशकर जैसी हस्तियों की ओर से किसान आंदोलन के संबंध में प्रतिक्रिया दिए जाने के सवाल पर पवार ने कहा कि लोगों ने कड़ी प्रतिक्रिया दी थी।

किसानों के समर्थन में 12-13 फरवरी को राजस्थान पहुंचेंगे राहुल गांधी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार के कृषि कानूनों का विरोध कर रहे किसानों को दो महीने से ज्यादा का समय बीत चुका है। देशभर से लोगों और पार्टियों का समर्थन किसानों के आंदोलन को मिल रहा है। देश की बड़ी पार्टी कांग्रेस भी लगातार किसानों के समर्थम में खड़ी है। किसानों के इस विरोध का समर्थन करने के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी दो दिनों की राजस्थान यात्रा पर जाएंगे। राजस्थान कांग्रेस महासचिव अजय माकन ने शनिवार को कहा कि किसानों के समर्थन में अपनी आवाज उठाने के लिए राहुल 12-13 फरवरी को राजस्थान पहुंचेंगे। राजस्थान कांग्रेस के प्रभारी अजय मांकन ने ट्वीट कर कहा, 'किसानों के हितों की लड़ाई लड़ने-

किसानों की आवाज बुलंद कर, केंद्र सरकार द्वारा तीनों काले कानूनों को वापस लेने हेतु संघर्ष के लिए राहुल गांधी जी, 12 एवं 13 फरवरी को राजस्थान आएँगे। राजस्थान की दौसा में दिल्ली की सीमाओं पर शिविर लगा रहे किसानों ने एकजुटता के साथ 'किसान महापंचायत' का आयोजन किया। बैठक में केंद्र सरकार द्वारा पारित तीन नए कृषि कानूनों को निरस्त करने की मांगों को किसानों ने दोहराया। बैठक में बोलते हुए, वरिष्ठ कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने कहा कि केंद्र सरकार ने इन कानूनों को संसद में लाने से पहले राज्य सरकारों और किसान संगठनों के साथ बिल पर चर्चा नहीं की थी। राजस्थान कांग्रेस के पूर्व प्रमुख ने कहा, 'जब तक इन मांगों को पूरा नहीं किया जाता है, हम पीछे नहीं हटेंगे। कांग्रेस केंद्र द्वारा पारित तीन कृषि कानूनों के खिलाफ दिल्ली की सीमाओं पर किसानों के विरोध का लगातार समर्थन कर रही है। राहुल गांधी ने ट्वीट किया: 'किसानों का शांतिपूर्ण सत्याग्रह राष्ट्र के हित में है - ये तीन कानून न केवल किसान-मजदूरों के लिए, बल्कि लोगों और देश के लिए भी खतरनाक हैं।

प्रधानमंत्री मोदी के कार्यक्रम में शामिल नहीं होंगी दीदी

कोलकाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को असम और पश्चिम बंगाल का दौरा करेंगे। वह दोपहर 3:30 बजे बंगाल के हल्दिया में एक जनसभा में भाग लेंगे। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी प्रोटोकॉल के अनुसार प्रधानमंत्री के आधिकारिक कार्यक्रम की आमंत्रित सूची में शामिल हैं। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी प्रोटोकॉल के अनुसार प्रधानमंत्री के आधिकारिक कार्यक्रम की आमंत्रित सूची में शामिल हैं। हालांकि, सूत्रों ने कहा कि मुख्यमंत्री के कार्यालय ने पीएमओ को सूचित किया है कि वह आयोजन के दौरान उपलब्ध नहीं होगी। अपनी यात्रा के पहले चरण में, प्रधानमंत्री मोदी सोनितपुर जिलों में असम के ढेकियाजुली में दो अस्पतालों की आधारशिला रखेंगे। वह राज्य राजमार्गों और प्रमुख जिला सड़कों के लिए एक कार्यक्रम 'असोम माला' भी शुरू करेंगे। मोदी इसके बाद रविवार शाम को बंगाल जाएंगे जहां भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा निर्मित एलपीजी आयात टर्मिनल का उद्घाटन करने की तैयारी है। 1,100 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित, टर्मिनल की प्रति वर्ष 1 मिलियन मीट्रिक टन की क्षमता है और यह बंगाल और अन्य पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों में घरों में एलपीजी की आपूर्ति करेगा। ट्विटर पर अपने कार्यक्रम की घोषणा करते हुए। मोदी ने कहा कि कल शाम, मैं पश्चिम बंगाल के हल्दिया में रहूंगा। वहां एक कार्यक्रम में, बीपीसीएल द्वारा निर्मित एलपीजी आयात टर्मिनल को राष्ट्र को समर्पित करेगा। प्रधान मंत्री उर्जा गंगा परियोजना के राष्ट्र डोभी दुगार्पुर प्राकृतिक गैस पाइपलाइन अनुभाग के लिए।

सरकार को लता और सचिन की प्रतिष्ठा दांव पर नहीं लगानी चाहिए: राज ठाकरे

मुंबई। किसान आंदोलन के समर्थन में विदेशी हस्तियों के ट्वीट के जवाब में भारत की तमाम दिग्गज हस्तियों द्वारा किए गए ट्वीट पर विवाद छिड़ गया है। इस मामले में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) प्रमुख राज ठाकरे ने कहा है कि केंद्र सरकार को आंदोलनरत किसानों के समर्थन में ट्वीट करने वाली विदेशी हस्तियों पर पलटवार के लिए चलाए गए अपने अभियान में लता मंगेशकर और सचिन तेंदुलकर को नहीं उतारना चाहिए था। एमएनएस प्रमुख राज ठाकरे ने कहा कि अगर अमेरिकी गायिका रिहाना और अन्य हस्तियों का नए कृषि कानूनों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे किसानों का समर्थन करना भारत के आंतरिक मामलों में दखल देने जैसा है, तो पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के समर्थन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नारा भी परेशानी भरा था। राज ठाकरे ने कहा केंद्र को लता मंगेशकर और सचिन तेंदुलकर को उसके रुख के समर्थन में ट्वीट करने के लिए नहीं कहना चाहिए था और उनकी प्रतिष्ठा को दांव पर नहीं लगाना चाहिए था। अब उन्हें सोशल मीडिया पर ट्रॉलिंग का सामना करना पड़ेगा।

सरकार से बातचीत के लिए तैयार हैं, लेकिन केंद्र को एक नया प्रस्ताव लेकर आना चाहिए : किसान संगठन

नई दिल्ली। केंद्र के नए कृषि कानूनों को रद्द करने की मांग को लेकर किसान संगठनों ने शनिवार को तीन घंटे का चक्का जाम किया था। कुछ राज्यों को छोड़ कर इस विरोध प्रदर्शन का ज्यादा असर नहीं दिखा। ऐसे में भाजपा किसान आंदोलन की आग' बुझाने के लिए पर्दे के पीछे से मुहिम तेज कर दी है। इस बीच प्रदर्शनकारी किसान संगठनों ने कहा है कि वे सरकार के साथ बातचीत के लिए तैयार हैं, लेकिन केंद्र को एक नया प्रस्ताव लेकर आना चाहिए क्योंकि विवादास्पद कृषि कानूनों को एक से डेढ़ साल तक के लिए निलंबित रखने का मौजूदा प्रस्ताव

उन्हें स्वीकार नहीं है। एक रिपोर्ट के मुताबिक भाजपा के एक नेता ने नाम न बताने की शर्त पर कहा कि उन्हें किसानों के आंदोलन की आग को ठंडा करने का एक मौका मिल गया है। उन्होंने कहा कि किसानों का चक्का जाम लगभग फेल रहा। पंजाब और हरियाणा के कुछ इलाकों में ही इसका असर देखने को मिला। जाहिर है इस चक्का जाम की आड़ में कुछ प्रदर्शनकारियों को फोटो खिंचवाने का मौका मिल गया। किसान नेता देश भर में ट्रैफिक को रोक नहीं पाए। हमें लगता है कि हम किसानों को कुछ प्रोफेशनल प्रदर्शनकारियों से अलग करने में कामयाब हो जाएंगे।

कभी कोविड-19 कर या उपकर लगाने का विचार नहीं रहा:सीतारमण

मुंबई । वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि सरकार का कभी कोविड-19 कर या उपकर लगाने का विचार नहीं रहा है। उन्होंने रविवार को मुंबई में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यह बात कही। सीतारमण ने कहा, मुझे नहीं पता कि मीडिया में कोविड-19 कर या उपकर लगाने की चर्चा कैसे शुरू हुई? हमारा कभी ऐसा विचार नहीं रहा। वित्त मंत्री ने कोविड-19 महामारी के दौरान सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का जिक्र करते हुए कहा कि जब दुनिया की विकसित अर्थव्यवस्थाएं इस महामारी से संघर्ष कर रही थीं, हमने इससे बचाव का रास्ता ढूंढ लिया था। सीतारमण ने तात्कालिक खर्च के लिए 'परिवार का कीमती सामान बेचने' के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि विनिवेश पर सरकार की स्पष्ट नीति है। पहली बार ऐसा हुआ है जबकि सरकार करदाताओं के पैसे को सोच-विचार कर खर्च कर रही है। उन्होंने कहा कि आज भारत की आकांक्षाओं और विकास जरूरतों के लिए भारतीय स्टेट बैंक के आकार के 20 संस्थानों की जरूरत है। उन्होंने कहा कि आईडीबीआई के अनुभव से विकास वित्त संस्थान (डीएफआई) का विचार आया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकार द्वारा संचालित सिर्फ एक डीएफआई होगा और इसमें निजी क्षेत्र की भूमिका होगी। सीतारमण ने अर्थव्यस्था में आ रहे सुधार का जिक्र करते हुए कहा कि पिछले तीन माह के दौरान माल एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह बढ़ा है।

ट्रैक्टर रैली के बाद अब देशभर में 'ट्रैक्टर क्रांति' का ऐलान: राकेश टिकैत

नई दिल्ली। कृषि कानूनों के खिलाफ जारी प्रदर्शन को तेज करने की हर संभव कवायद जारी है। किसान नेता राकेश टिकैत ने देशभर के किसानों से 'ट्रैक्टर क्रांति' में शामिल होने का आह्वान किया। गाजीपुर प्रदर्शनस्थल पर बीकेयू नेता राकेश टिकैत ने समर्थकों को संबोधित करने के दौरान किसान समुदाय से संपर्क साधने की कोशिश की, जिनमें से अधिकतर, खासकर दिल्ली-एनसीआर, के किसान 10 साल से अधिक पुराने ट्रैक्टर समेत डीजल से चलने वाली गाड़ियों पर प्रतिबंध के राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) के फैसले से खफा हैं। भारतीय किसान यूनियन के नेता टिकैत (51) ने कहा, 'जो ट्रैक्टर खेतों में चलते हैं, वे अब दिल्ली में एनजीटी के दफ्तर में भी चलेंगे। हाल तक, वे नहीं पूछते थे कि कौन सा वाहन 10 साल पुराना है। उनकी आखिर योजना क्या है? 10 साल से अधिक पुराने ट्रैक्टरों को हटाना और कॉरपोरेट की मदद करना? लेकिन 10 साल से अधिक पुराने ट्रैक्टर चलेंगे और (केंद्र के नए कृषि कानूनों के खिलाफ) आंदोलन भी मजबूत करेंगे। टिकैत ने कहा कि विवादास्पद कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग को लेकर चल रहे किसानों के आंदोलन में देश भर के अधिक से अधिक किसान भाग लेंगे। हाल ही में दिल्ली में 20,000 ट्रैक्टर थे, अगला लक्ष्य इस संख्या को 40 लाख करना है। उन्होंने ट्रैक्टर मालिकों से अपने वाहनों को 'ट्रैक्टर क्रांति' से जोड़ने का आह्वान किया। टिकैत ने कहा, 'अपने ट्रैक्टर पर 'ट्रैक्टर क्रांति 2021, 26 जनवरी' लिखिए। आप जहां भी जाएंगे, आपका सम्मान किया जाएगा।' इससे पहले केंद्र के नये कृषि कानूनों को रद्द करने की मांग कर रहे किसान संगठनों के तीन घंटे के 'चक्का जाम के आह्वान पर शनिवार को पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में कई प्रमुख सड़कों को प्रदर्शनकारी किसानों ने 'ट्रैक्टर-ट्रालियों से अवरूद्ध कर दिया। वहीं, अन्य राज्यों में भी छिटपुट प्रदर्शन हुए।

मार्च के बाद कभी भी आम जनता के लिए शुरू हो सकता है टीकाकरण: डॉ हर्षवर्धन

नई दिल्ली। भारत में आम जनता के लिए कोरोना वायरस की वैक्सीन आधे मार्च के बाद किसी भी समय उपलब्ध हो सकती है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ हर्षवर्धन ने शुक्रवार को संसद में यह जानकारी दी। हर्षवर्धन ने संसद में बताया कि इस चरण में 50 साल से अधिक वायु वाले लोग शामिल होंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि 50 साल से अधिक आयु वर्ग वालों को कोरोना वायरस का ज्यादा खतरा रहता है। बता दें कि भारत में कोरोना वायरस वैक्सीनेशन की शुरूआत इस साल 16 जनवरी को हुई थी। तब से लेकर फरवरी के पहले सप्ताह तक स्वास्थ्य कर्मी, पुलिस और फ्रंट लाइन वर्करों को वैक्सीन लगाई जा रही है। स्वास्थ्य मंत्री ने संसद में बताया कि वैक्सीनेशन के पहले चरण में सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के लगभग एक करोड़ स्वास्थ्य कर्मियों के टीकाकरण का लक्ष्य रखा गया था, जो कि काफी तेजी से आगे भी बढ़ रहा है। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि दूसरी चरण में लगभग 2 करोड़ फ्रंटलाइन वर्करों का टीकाकरण किया जाना है, 2 फरवरी से देश के कई स्थानों में दूसरे चरण का

वैक्सीनेशन शुरू भी हो गया है। उन्होंने कहा कि पहले और दूसरे चरण के पूरा होने के बाद तीसरा चरण शुरू होगा जिसमें 50 साल से अधिक के सभी लोगों को टीका लगाया जाएगा। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि इसके लिए एक तारीख बताना संभव नहीं हो सकता है, लेकिन संभावना है कि मार्च के दूसरे, तीसरे या चौथे सप्ताह में वैक्सीनेशन कभी शुरू हो जाएगी। मंत्री ने कहा कि आगे की वैक्सीनेशन के लिए सरकार के पास पर्याप्त खुराक है और यूनिवर्सल इम्यूनाइजेशन प्रोग्राम के तहत मौजूदा कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं को मजबूत किया गया है और टीकों के भंडारण के लिए उपयोग किया जा रहा है। 1 फरवरी तक, सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को 2 करोड़ से अधिक वैक्सीन की खुराक प्रदान की गई है।

आत्मनिर्भर भारत को समर्पित है केन्द्रीय बजट: स्मृति ईरानी

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार द्वारा वित्त मंत्री के रूप में निर्मला सीतारमण ने जो बजट पेश किया उसकी बारीक से बारीक जानकारी को तथ्यों सहित मोदी कैबिनेट के मंत्रियों को देशभर में लगाया गया है जिसके तहत आज महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने राज्य भाजपा के कार्यालय में प्रेस मीडिया से मुखातिब होकर बजट की खूबियों को गिनाया। केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कहा कि वर्तमान कोविड काल और परिस्थितियों को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत योजना को बजट समर्पित रखा जिसके तहत विकास के पैमाने को साकार करने के लिए हर विभाग को बजट अलॉर्ट किया गया सड़क निर्माण, जल जीवन मिशन, शहरी इलाको में जल जीवन स्थापित करने से लेकर कृषक कल्याण को लेकर उनका फंड दुगुना किया गया एक करोड 70 लाख किसान डिजीटल माध्यम से जुडे एक लाख करोड से ईनाम की व्यवस्था और विस्तार होगा, हर आदिवासी क्षेत्र में एकलव्य स्कूल खुलेंगे, सैनिक स्कूल खोलने की भी घोषणा की गई, कोविड वैक्सीन के लिए 35 हजार करोड रुपए का प्रावधान किया।

ग्रेटा के 'टूलकिट' से जो चीजें सामने आई हैं वो बहुत चिंताजनक: विदेश मंत्री जयशंकर

नई दिल्ली। देश में कृषि कानून को लेकर चल रहे किसान आंदोलन पर विदेशी हस्तियों की प्रतिक्रिया आने के बाद मामला गरमाता जा रहा है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने टूलकिट विवाद पर कहा कि जलवायु परिवर्तन कार्यकर्त्ता ग्रेटा थनबर्ग ने जो ट्वीट किए और 'टूलकिट' से जो चीजें सामने आई हैं वो बहुत चिंताजनक है। जयशंकर ने कहा कि टूलकिट ने काफी कुछ सामने ला दिया है और आगे भी हमें देखना होगा कि इससे और क्या चीजें निकलकर सामने आती हैं। विदेश मंत्री ने कहा कि किसान आंदोलन पर विदेशी हस्तियों का हस्तक्षेप गैर-जिम्मेदाराना था। जयशंकर ने कहा कि जिस मुद्दे के बारे में विदेशी हस्तियों को पता ही नहीं था वो उस पर अपनी राय दे रहे थे, इसलिए विदेश मंत्रालय को इस पर टिप्पणी करनी पड़ी।

दिल्ली पुलिस ने 'टूलकिट' बनाने वालों के संबंध में गूगल और अन्य सोशल मीडिया कंपनियों से ईमेल आईडी, डोमेन यूआरएल और कुछ सोशल मीडिया अकाउंट की जानकारी देने को कहा। जलवायु परिवर्तन कार्यकर्त्ता ग्रेटा थनबर्ग ने एक 'टूलकिट' ट्विटर पर साझा किया था। दिल्ली पुलिस के 'साइबर सेल' ने 'भारत सरकार के खिलाफ सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक युद्ध' छेड़ने के लक्ष्य से 'टूलकिट' के 'खालिस्तान समर्थक' निमार्ताओं के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की थी।

पुलिस के अनुसार, 'टूलकिट' में एक खंड है, जिसमें कहा गया है... 26 जनवरी से पहले हैशटैग के जरिए डिजिटल हमला, 23 जनवरी और उसके बाद ट्वीट के जरिए तूफान खड़ा करना, 26 जनवरी को आमने-सामने की कार्रवाई और इन्हें देखें या फिर दिल्ली में और सीमाओं पर किसानों के मार्च में शामिल हों। पुलिस ने बताया कि दस्तावेज 'टूलकिट' का लक्ष्य भारत सरकार के प्रति वैमनस्य और गलत भावना फैलाना और विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृति समूहों के बीच वैमनस्य की स्थिति पैदा करना है।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

साइबर सेल उत्तर-पश्चिम जिला पुलिस ने 4 साइबर आरोपियों को किया गिरफ्तार

» विजय गौड़ विशेष संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस साइबर क्राइम पोर्टल के ऑनलाइन पोर्टल माध्यम से साइबर सेल उत्तर-पश्चिम जिला पुलिस को शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि उसने अपने मोबाइल से एक मोबाइल नंबर पर कॉल किया, जिसमें एक प्रतिष्ठित मोटर्स प्राइवेट लिमिटेड से एक कार्यकारी के रूप में अपना परिचय दिया तथा लिमिटेड कंपनी में नौकरी का आश्वासन दिया ।शिकायतकर्ता ने बताया की उन्हें 275 / - रजिस्ट्रेशन फीस , 2200 /- रुपया ड्रेस फीस और 5500 / - रुपया सिक्योरिटी राशि के रूप में मोबाइल नंबर से जमा करवाने के लिए कहा गया। शिकायतकर्ता ने बातचीत के अनुसार राशि जमा की। अपने फर्जी टेलीफोनिक साक्षात्कार के बाद, शिकायतकर्ता को एक प्रतिष्ठित मोटर्स प्राइवेट लिमिटेड की नौकरी की पुष्टि के आशय का पत्र भी मिला। उसकी ई-मेल आईडी पर बाद में, जब शिकायतकर्ता ने कथित व्यक्ति को ड्यूटी पर आने के विषय में पूछा तो कथित व्यक्ति उसका फोन उठाने से बचने लगा। शिकायतकर्ता ने कथित व्यक्तियों को कई बार फोन किया, तो उन्होंने उसका फोन उठाना बंद कर दिया। शिकायतकर्ता ने दिनांक 21.01.2021 को शिकायत दर्ज कराई। प्रारंभिक जांच करने के बाद, थाना जहांगीर पुरी में मामला दर्ज किया गया था।मामले की संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए, मनोज पंत सहायक पुलिस आयुक्त के निर्देशन में एवं इंस्पेक्टर अजय कुमार के नेतृत्व में गठित टीम में एसआई हिमांशु बाल्यान, एसआई सीताराम, एचसी संजीत, एचसी मनीष, एचसी मनोज कॉन्स्टेबल गुराव सिंह को शामिल किया गया गहन जाँच के बाद पुलिस की समझबूझ से 4 गिरफ्तार आरोपी व्यक्ति राजा राजपूत इंदर नाथ रमेश यादव साजन से 14 मोबाइल फोन, 2 लैपटॉप, 3 एटीएम कार्ड, 7 सिम कार्ड, 1 पासबुक और कथित खाते की चेकबुक और कॉलिंग डेटा बरामद किया गया। पूछताछ के बाद आरोपी राजा राजपूत ने खुलासा किया कि उसने अपने सहयोगी रमेश यादव और राहुल के साथ मिलकर करीब 8 महीने पहले कॉल सेंटर खोला है और नौकरी के नाम पर लोगों को ठगना शुरू कर दिया है। मामले की आगे की जांच की जा रही है।

कृषि कानून को लेकर किसानों के समर्थन में आई सपा नेत्री मेनका त्यागी

» मौसम खान

लोनी। देश की राजधानी दिल्ली में देशभर के किसानों द्वारा जारी आंदोलन को लेकर समाजवादी पार्टी की नेत्री ने एक प्रेसवार्ता का आयोजन किया।इस मौके पर सपा नेत्री मेनका त्यागी ने कहा है कि कृषि कानूनों के खिलाफ पिछले दो महीने से भी ज्यादा समय से किसानों का प्रदर्शन जारी है। जिसमे बहुत से किसान शहीद भी हुए है, और आज भी किसान कृषि कानून के विरोध में देश की राजधानी दिल्ली के बॉर्डर पर डटे है। सरकार का कहना है कि ये तीनों कानून किसानों के हित में है। लेकिन किसान सरकार के इस दावे को मानने तैयार नही है, सवाल ये भी है कि एसी कमरों में बैठकर बनाया गया ये काला कानून, क्या किसान की समस्या को समझता है। एसी कमरे में बैठकर क्या सरकार धूप की तपिश, बारिश की चुभन, सर्दी की ठिठुरन और लू के थपेड़ों का एहसास कर पायी होगी। अगर नही तो किसानों की समस्याओं को किसानों से बेहतर सरकार कैसे समझ सकती है। सपा नेत्री मेनका त्यागी ने कहा है कि हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है, और समाजवादी पार्टी किसानों की अपनी पार्टी है। ऐसे में किसानों के संघर्ष में हम उनके साथ हैं। समाजवादी पार्टी किसान घेरा कार्यक्रम के जरिए किसानों तक अपना समर्थन पहुंचाने के साथ सपा सरकार की किसान कल्याणकारी योजनाओं की भी जानकारी देगी। सपा नेत्री मेनका त्यागी ने कहा है कि केंद्र सरकार को तीनों काले कानून वापस लेते हुए निर्दोष किसानों और किसान नेताओ पर से देशद्रोही जैसी संगीन धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है। उनके ऊपर से इन धाराओं को हटाया जाए। क्योंकि वह बिल्कुल निर्दोष है।

संक्षिप्त समाचार

बुराड़ी के स्कूल संचालकों से मिले एप्सा अध्यक्ष, संचालकों की समस्याएं सुनी

मदरलैंड संवाददाता, नई दिल्ली ।अफोर्डेबल प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन (एप्सा) के अध्यक्ष लक्ष्य छाबड़िया ने बुराड़ी के विभिन्न स्कूलों के संचालकों के साथ बैठक की। बैठक के दौरान उन्होंने स्कूल बंद होने के चलते संचालकों को हो रही विभिन्न परेशानियों पर चर्चा की और उनके समाधान का भरोसा दिलाया। एप्सा अध्यक्ष लक्ष्य छाबड़िया ने बताया कि इस बैठक में करीब एक दर्जन स्कूल संचालकों ने भाग लिया। संचालकों ने बताया कि स्कूल नहीं खुल पाने के चलते उन्हें काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है। खासतौर पर प्राइमरी स्कूलों की हालत काफी नाजुक है और वे बंद होने की कगार पर पहुंच गए हैं। इसके अलावा स्कूल संचालकों को लैंड नॉर्म्स और मान्यता की समस्या से भी जूझना पड़ रहा है। लक्ष्य छाबड़िया ने सभी संचालकों को आश्वासन दिया कि वे जल्द ही इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए एमसीडी और दिल्ली सरकार से मिलेंगे।

समाज सेवा के लिये हमेश तत्पर रहते है गौरव चिकारा

मदरलैंड संवाददाता, नई दिल्ली। गौरव चिकारा जिला महामंत्री हिन्दू जागरण मंच,बिजनौर जो कि गाव तिसोतरा के निवासी है जिले के युवाओं में एक उभरता हुआ नया नाम है। नजीबाबाद विधानसभा के तिसोतरा का रहने वाला ये युवा एक हिन्दूवादी चेहरे के रूप में तेजी से उभर रहा नाम है। लव जिहाद का विषय हो या कहि हिंन्दू उत्पीड़न का मामला हो गौरव तुरन्त सक्रिय हो जाते है। बिना किसी लालच के यही व्यवहार उन्हें अन्य से अलग बनाता है। अब तक 4 बार ब्लड डोनेट कर चुके है ।गौ हत्या ,मंदिरों में तोड़ फोड़ होने पर लड़ाइयां मुख्यत लड़ते है। इससे पूर्व में एक बड़ा आंदोलन जिले में एक हिन्दू बेटी को लव जिहाद से बचाने के लिए चला चुके है। और बहुत सी बेटियो को इनके द्वारा न्याय मिल चुका है। आये दिन जिले में घटने वाली हिन्दू उत्पीड़न की घटनाओं का समाधान करने के लिए ततपर रहते है। श्री राम मंदिर के लिए राम मंदिर सम्पर्ण अभियान में नागल सोती प्रखण्ड में अपनी अहम भूमिका निभा रहे है।

शैक्षणिक अवकाश अधिकार नहीं, संस्थान की जरूरत पर निर्भर : हाईकोर्ट

नई दिल्ली ।दिल्ली हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया है कि उच्च शिक्षा हासिल करना हर व्यक्ति का अधिकार अवश्य है, लेकिन यदि वह किसी संस्थान में सेवारत है तो वह वहां के तय नियमों से बंध जाता है। ऐसे में उच्च शिक्षा के लिए अवकाश संस्थान की नीति के तहत ही मिल सकता है। दिल्ली हाईकोर्ट ने यह टिप्पणी करते हुए दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल के एक डॉक्टर की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें उसने सरकार की तरफ से शैक्षणिक अवकाश नहीं देने के फैसले को चुनौती दी थी। न्यायमूर्ति वी. कामेश्वर राव ने अपने फैसले में कहा कि किसी को अवकाश दिया जाना संस्थान की आवश्यकता और वहां की जरूरतों के आधार पर ही तय किया जा सकता है। दरअसल दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल में बाल रोग विशेषज्ञ के तौर पर कार्यरत डॉ. रोहित कुमार ने चंडीगढ़ स्थित पीजीआई से एमएस/एमडी करने के लिए शैक्षणिक अवकाश की अनुमति मांगी थी। अस्पताल प्रबंधन की तरफ से उन्हें अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी कर देने के बावजूद दिल्ली सरकार ने कोरोना महामारी के कारण अवकाश देने से इनकार कर दिया था।

बुराड़ी को मिलेगा जाम से मुक्तिः संजीव झा

» संध्या कुमारी

नई दिल्ली। बीते कुछ वर्षों से बुराड़ी में घुसते ही सबसे बडी समस्या रोजाना की जाम होती है। सुबह में स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर होती है, लेकिन दोपहर बाद से लेकर रात के नौ बजे तक बहुत बुरा हाल होता था। लोगों ने इसकी शिकायत कई बार विधायक से की। विधायक संजीव झा ने जनता की इस समस्या के समाधान के लिए बुराड़ी पुस्ता चैड़ीकरण पोल लाइट परियोजना की शुरूआत कर दी है। इसका क्षेत्रीय जनता स्वागत कर रही है। रविवार को बुराड़ी पुस्ता चैड़ीकरण पोल लाइट परियोजना का उदघाटन करते हुए विधायक संजीव झा ने कहा कि हमने क्षेत्र की समस्या को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सामने रखा। इस पर बातें हुईं। उसी का नतीजा है कि अब क्षेत्र की जनता को जाम से मुक्ति मिलेगी। विधायक ने कहा कि विधानसभा चुनाव के दौरान जनता से किए हर एक वायदे को लेकर आम आदमी पार्टी की सरकार संकल्पबद्ध है। इस वर्ष के प्रारंभ में आप सभी के आशीर्वाद से आज बुराड़ी पुस्ता चैड़ीकरण पोल लाइट परियोजना की शुरूआत कर दी गई है। उन्होंने बताया कि लगभग 40 करोड़ रुपये की लागत से हिरन की बांध से जगतपुर गांव तक पुस्ते को चौड़ा करने के साथ प्रत्येक 50 मीटर की दूरी पर पोल लाइट लगाने की योजना है।

कादीपुर के नंगली पूना निवासी और आम आदमी पार्टी के नेता राजबीर सिंह ने कहा कि यही तो आम आदमी पार्टी के हर नेता और कार्यकर्ता का चरित्र है। हम जनता से जो भी वादे करते हैं, उसको अवश्य पूरा करते हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से हमारे विधायक संजीव झा लगातार क्षेत्र के विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, वह अनुकरणीय है। इसमें हर क्षेत्रीय लोगों का अपेक्षित है।

अतिक्रमण के खिलाफ अभियान में की गई कार्यवाई

» नवीन दास

गाजियाबाद। रविवार को मशाल पार्क गंदा नाला होते हुए टाउनहॉल चौराहे तक अवैध रूप से पैंठ लगाकर निगम की सड़क पर व नाले पर अतिक्रमण किये जाने की शिकायत प्राप्त हुई थी। जिसमें अतिक्रमण के कारण आने जाने वाले लोगों को परेशानी हो रही थी जिसके सम्बन्ध में दो दिन लगातार मुनादी भी कराई गयी जिसके तत्वधान रविवार को अतिक्रमण कर सड़क पर अवैध रूप से पैंठ का संचालन होता पाया गया। उक्त अतिक्रमण को हटाने का अभियान सुधीर शर्मा जोनल प्रभारी सिटी जोन के नेतृत्व में नवयुग मार्केट पुलिस चौकी इंचार्ज रंजीत सिंह व घंटाघर पुलिस चौकी इंचार्ज दिनेश कुमार एवं कर अधीचक गजेंद्र कुमार व निगम परिवर्तन दल के सहयोग से अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाया गया। उक्त अभियान में 55 लोहे के तख्त व 4 लकड़ी के तख्त जब्त किए गए।

इस कार्यवाही के सम्बंध में सिहानी गेट थाना व कोतवाली इंचार्ज को पुनः अतिक्रमण न होने देने हेतु पत्र भी दिया गया है।

बजरंग दल हिन्दुस्तान को किया गया सम्मानित

» मदरलैंड संवाददाता

लोनी। हिन्दु संस्कृति को जागृत करने के लिए भारतवर्ष में जगह जगह पर हिंदू संस्कृति के कार्यक्रम होते रहते हैं। जिसमें एक महत्वपूर्ण विषय भागवत कथा है। भागवत कथा में सभी धर्म संस्थापक के जीवन के बारे में बताया जाता है। हमारा कर्तव्य बनता है कि अपने सभी धर्म संस्थापकों के रास्ते पर चलकर अपने धर्म को मजबूत बनाने का कार्य करे। धर्म को मजबूत करने के लिए बजरंग दल हिंदुस्तान ने यह बीड़ा उठाया है। आज गाजियाबाद में रविन्द्र राठौड़ जी के द्वारा हो रही भागवत कथा में बजरंग दल हिंदुस्तान का स्वागत किया गया। जिसमें मुख्य तौर पर गौरक्षा विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गोला गौरक्षक, गाजियाबाद जिले के जिला अध्यक्ष कुंवर अनुपम ठाकुर व लोनी नगर अध्यक्ष सचिन पाल पहुंचे। राहुल गोला गौरक्षक ने अपने धर्म को बचाने के लिए युवाओं से अनुरोध किया कि अपनी सभ्यता को अपनाये। जिला अध्यक्ष कुंवर अनुपम ठाकुर ने कहा कि हमारी संस्कृति को बचाने के लिए मातृशक्ति का बहुत बड़ा योगदान रहा है, क्योंकि हमारी मातृशक्ति ही योद्धाओं को जन्म और शिक्षा देती है। हमारा कर्तव्य है कि उन माताओं और बहनों की सुरक्षा करें। इस दौरान वार्ड संयोजक सूरज ठाकुर, रवि उपाध्याय, आशीष झा, बाउंसर गौलू ठाकुर, आकाश,अभय त्यागी, राहुल ठाकुर, आकाश सैनी, वीर बघेल, सचिन गडरिया, संदीप शिसोदिया, सचिन तोमर, सुमित पंडित,सितिन पाल, हिमांशु पंडित, विशाल ठाकुर, यशपाल नागर, राकेश प्रजापति वह अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सुप्रसिद्ध गायक प्रदीप की 106 वी जयंती पर गीत माला संपन्न

» मदरलैंड संवाददाता

गाज़ियाबाद। रविवार केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध गीत 'ए मेरे वतन के लोगो' दूर हटो ए। दुनिया वालो,साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल आदि गीतों के रचयिता प्रदीप कुमार को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 'गीत माला' का आयोजन ऑनलाइन जूम पर किया गया।यह कोरोना काल में 170 वां वेबिनार था। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आज हर कोई परिवार में,कार्यालय में,दुकान में तनाव में जी रहा है,ऐसे समय में संगीत एक औषधि है जो राहत देने व आनंद देने का कार्य करता है गीतकार प्रदीप के गीत एक नई ऊर्जा पैदा करते हैं।प्रमुख रूप से प्रवीण आर्य,वीना वोहरा,श्रुतिवीर,सुदेशवीर, यशोवीर आर्य,सुदेश आर्या,मृदुल अग्रवाल,माया आर्या, सुरेश हसीजा, उर्मिला आर्या, प्रतिभा कटारिया, जनक अरोड़ा, आशा आर्या आदि ने गीतों से सराबोर कर दिया।कार्यक्रम की अध्यक्षता समाज सेवी भारत भूषण धूपड़ ने की व पत्रकार सुषमा शर्मा,शिक्षाविद् प्रवीन भाटिया ने शुभकामनाएं प्रदान की।

श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ के तत्वधान में निधि समर्पण का कार्यक्रम संपन्न

» स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ (दिल्ली) के तत्वाधान में श्रीराम जन्मभूमि निधि समर्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उत्तर भारत के प्रसिद्ध संत स्वामी वीर सिंह अधिकारी उपाख्य हितकारी महाराज शनिवार को दिल्ली के मोतीबाग स्थित मोची गांव में आयोजित निधि समर्पण अभियान के एक कार्यक्रम में शामिल हुए। हितकारी महाराज मोची गाँव नानकपुरा दिल्ली में निधि संग्रह के लिए समाज में गए. संत हितकारी महाराज ने वहां उपस्थित सभी समाज के लोगों से श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण के लिए सहयोग करने की अपील की। उन्होंने 509 वर्ष पुराने गुरु रविदास विश्राम धाम मंदिर तुगलकाबाद के पुनर्निर्माण का मार्ग सुलभ करने पर विहिप का आभार प्रकट करते हुए कहा कि मार्च में सद्गुरु स्वामी निरंजनदास महाराज के दिल्ली आगमन पर उनके द्वारा पांच ईंटें रखवाकर वहां मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू होगा जिसमें समाज के सभी लोग सहयोग करेंगे। श्री गुरु रविदास मंदिर, नानकपुरा, मोचीबाग गांव में संपन्न निधि समर्पण कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप आलोक कुमार, कार्याध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद उपस्थित रहे।इस अवसर पर आलोक कुमार ने कहा कि निधि समर्पण कार्यक्रम में समरसता का ऐसा अद्भुत दर्शन हो रहा है, जो साक्षात भगवान मयार्दापुरुषोत्तम राम जी के जीवन दर्शन का साक्षात्कार करने जैसा है। सन्त स्वयं लोगों के द्वार जाकर मंदिर निर्माण के लिए निधि संग्रहित कर रहे हैं। ऐसा आदर्श स्वयं भगवान राम जी ने अपने जीवन में प्रस्तुत किया था। अर्थात हम सभी सन्तों के दर्शन के साथ मंदिर निर्माण के लिए अपना भाग देने का शुभ अवसर एक साथ मिल रहा है। इस अवसर पर आलोक कुमार जी ने कहा कि अयोध्या में बनने जा रहे भगवान श्री राम के भव्य मंदिर में प्रभु श्री राम के जीवन की कथनी और करनी दोनों का पूरा विश्व जगत साक्षात्कार करेगा।

अयोध्या में विराट धर्मशाला बनने का मेरा सपना है : प्रधान जगदीश प्रसाद अग्रवाल

» मदरलैंड संवाददाता

जय कालका माँ चैरिटेबल ट्रस्ट के पदाधिकारियो व सदस्यो का दल हर माह मे अम्बेडकर नगर के विराट सिनेमा हाल से 60-70 सदस्यो के साथ माता कालका जी मंदिर तक की पद यात्रा करते है। इस यात्रा में प्रधान जगदीश प्रसाद अग्रवाल महामंत्री अनिल कुमार मित्तल केशियर संतोष कुमार मंगल प्रमुख भूमिका निभाते है। प्रधान जगदीश प्रसाद अग्रवाल ने बताया कि जय कालका माँ चैरिटेबल ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य है कि भगवान श्री राम के जन्म स्थान अयोध्या मे विराट धर्मशाला बनना। प्रधान जगदीश प्रसाद अग्रवाल हमेशा सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते रहते है जिससे उनकी एक अलग पहचान है। उनका कहना है कि अयोध्या में विराट धर्मशाला बनने से यहां के लोग रामलला के दर्शन करने जाएंगे और उन्हें रहने में कोई परेशानी नहीं होगी। इस कार्य के लिए वह दिन रात लगे हुए हैं। और उनकी यह इच्छा है कि क्षेत्र में लोग अयोध्या में रामलला के दर्शन करने जाएं और उन्हें किसी तरह की असुविधा ना हो।

एस एस आर्य स्पोर्ट्स एकादमी में 11वीं वूशू प्रतियोगिता संपन्न

» अजय प्रताप सिंह

नई दिल्ली। विगत एक साल से ठहर गये जीवन को स्कूलों और खेल प्रतियोगिताओं के प्रारब्ध से मानों संजीवनी मिल गयी है। यह मानव की ह्र बीता हुआ बीसार देह्न की कहावत से सीखने की जहां इच्छा को दशार्ता है वहीं विकट परिस्थितियों में भी मानव के हार न मानने की प्रवृति को दशार्ता है। कोरोना काल में मानव जाति को जनधन की अपार हानि तो उठानी ही पडी, लेकिन अब कल की ओर देखने का समय है। पढ़ाई और खेलों के आयोजन के पीछे यही सद्भावना छिपी है। सुप्त हो गयी जीवन की रफ्तार को आज नोएडा की एस एस स्पोर्ट्स एकादमी में फिर से पटरी पर लौट आने का शानदार मौका मिला, तब मिला जब उत्तर प्रदेश वूशू एशोसियेशन ने अल्पकालिक नोटिस पर जिला वूशू प्रतियोगिता के आयोजन की जिम्मेदारी दी।एस एस स्पोर्ट्स एकादमी के संचालक विकास भाटी जी ने इस महत्वपूर्ण भूमिका को शानदार तरीके से आयोजन कर सही सिद्ध कर दिया। इस प्रतियोगिता में 6 वूशू एकादमियों के 70 प्रतियोगियों ने भाग लेकर भव्य बना दिया।आपको बता दें कि वूशू कुश्ती और बाक्सिंग के मिश्रण वाला खेल है। जो ताकत और फूर्ती का शानदार मिश्रण इस खेल में देखने को मिलता है। यूपी में नोएडा आल ओवर टीम चेंपियन है। नोएडा के खिलाड़ियों का न सिर्फ यूपी वरन देश में भी डंका बजता है। इसका जहां यहां की भौगोलिक परिस्थिति और जलवायु इसमें सहायक होते हैं, क्योंकि यहां ग्रामीण परिवेश से निकले बच्चे काफी बलिष्ठ होने के साथ ही ऊंचे डील डोल वाले होते हैं जिसका उन्हें अपने विपक्षी पर बढत बनाने में फायदा मिलता है। एस एस स्पोर्ट्स एकादमी पल्ला में आयोजित इस प्रतियोगिता के विभिन्न भार वर्ग के 40 खिलाड़ियों ने 11 से 14 फरवरी को 19वीं राज्य जूनियर और सीनियर (महिला पुरुष) चैंपियनशिप के लिये क्वालिफाई कर लिया है। जहां व्यक्ति और टीम चैंपियन का फैसला होगा। आयोजन समिति के अध्यक्ष विकास भाटी के अलावा जिला वूशू एसोसिएशन के सचिव अजय शर्मा, राष्ट्रीय खिलाडी नीरज चाहर तथा कोच आनंद भाटी की देखरेख में आयोजन का सफल समापन हुआ।

दिल्ली सरकार का अभियान फरिश्ते दिल्ली के का बने हिस्सा

फरिश्ते दिल्ली के परियोजना में मदद करने वाले को किया जाएगा सम्मानित

» शैलेंद्र पचौरी

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने एक बहुत ही अच्छी योजना चलाई है फरिश्ते दिल्ली के। इस योजना के तहत अब तक 10635 से अधिक लोगों की जान बचाई जा चुकी हैं। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने बताया कि लोग स्वयं आगे आकर इस योजना में शामिल हो रहे हैं और एक दूसरे को मदद कर रहे हैं। दुर्घटना में घायल लोगों की मदद करना और उनकी जान बचाना ही इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। दुर्घटना में घायल लोगों की मदद आप भी कर सकते हैं। किसी की जिंदगी बचाना पुण्य का काम है। आप भी किसी के लिए फरिश्ता बन सकते हैं। सड़क दुर्घटना में घायल को अस्पताल ले जाने में संकोच नहीं करें, आपसे पुलिस किसी भी तरह की पूछताछ नहीं करेगी। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि हादसे के बाद पहला घंटा गोल्डन आवर होता है। इस दौरान पीड़ित अस्पताल पहुंच जाए तो उसकी जान बचाई जा सकती है। हादसे के पीड़ित को अस्पताल पहुंचाने वाले को रू2000 की प्रोत्साहन राशि और सर्टिफिकेट मिलता है। इसके अलावा हादसा पीड़ित व्यक्ति का किसी भी अस्पताल में पूरा इलाज फ्री किया जाता है। अतः दुर्घटना में घायल लोगों की मदद अवश्य करें। अक्सर लोग यह सोचते हैं कि किसी दुर्घटना में घायल व्यक्ति की मदद करने पर उन्हें पुलिस परेशान करेगी और उसे कोर्ट का चक्कर लगाना पड़ेगा लेकिन अब ऐसा नहीं है। बल्कि इसके विपरीत अब दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की मदद करने वाले को सम्मानित किया जाएगा उसे कतई परेशान नहीं किया जाएगा क्योंकि दिल्ली सरकार ने उसे दिल्ली का फरिश्ता घोषित कर दिया है।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

ऑल इंडियन रिपोर्टर एसोसिएशन की मासिक बैठक संपन्न

» अजय सक्सेना

मैनपुरी। ऑल इंडियन रिपोर्टर एसोसिएशन मैनपुरी की मासिक बैठक रविवार को कचहरी रोड स्थित किशोर ट्रेडर्स पर आईरा संगठन के आगरा मंडल संरक्षक बृज किशोर सक्सैना (किशोर इटावी) की अध्यक्षता में आयोजित की गई । इस बैठक में संगठन के सदस्यों ने बढ़ चढ़कर भागीदारी की, इस बैठक में संगठन के मंडल संरक्षक ब्रज किशोर सक्सैना ने सभी पत्रकारों को संगठन के विषय में जानकारी दी बैठक को संबोधित करते हुए मंडल संरक्षक किशोर जी ने पदाधिकारियों तथा सदस्यों को जानकारी देते हुए बताया के आईरा पत्रकारों का एक ऐसा राष्ट्रीय संगठन है जो पत्रकारों के हितों मैं संघर्षशील है उन्होंने बताया कि आईरा के राष्ट्रीय चेयरमैन डॉक्टर तारिक जाकी जी ने विगत दिन गृह मंत्रालय भारत सरकार को एक ज्ञापन प्रेषित कर उत्तर प्रदेश में हो रहे पत्रकार उत्पीड़न की घटनाओं पर एतराज जताया है और पत्रकारों के खिलाफ दर्ज की जा रही फर्जी एफ आई आर आर को तत्काल प्रभाव से निरस्त करने की मांग की है राष्ट्रीय चेयरमैन डॉक्टर तारिक जाकी ने कहां है कि उत्तर प्रदेश प्रदेश में अपनी नाकामी छुपाने के लिए भाजपा सरकार पत्रकारों के खिलाफ धड़ाधड़ मुकदमा दर्ज करा रही है जो प्रेस की आजादी पर सीधा हमला है उन्होंने दिए ज्ञापन में कहां है कि यदि इन घटनाओं पर तत्काल रोक नहीं लगाई गई तो ऑल इंडियन रिपोर्टर्स एसोसिएशन सड़क से लेकर न्यायालय तक संघर्ष करने को बाध्य होगा।

वही जिला अध्यक्ष अजय सक्सेना ने अनेकता में एकता की बात कहते हुए सभी पत्रकार बंधुओं को आपसी भेदभाव बुलाकर एक साथ संगठित होकर रहने की बात कही अंत में जिला महासचिव अजय किशोर ने सभी सदस्यों का धन्यवाद व्यक्त किया। इस मौके पर जिला संरक्षक डॉ० उदय भान सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष लख्मी चंद बघेल, रविंद्र मिश्रा, शिवनंदन, पंकज शाक्य, डॉक्टर अभिषेक मिश्रा, रजत चतुर्वेदी, राहुल शाक्य, शिवम कुमार, संजय सक्सेना, निर्दोष कुमार, मोहम्मद आसिफ आदि लोग उपस्थित रहे

अपमिश्रित शराब के साथ 4 अभियुक्तगण गिरफ्तार

» पूजा जैन

शहजादनगर। थाना शहजादनगर पुलिस द्वारा ककरव्वा रेलवे फाटक के पास से 04 अभियुक्त गणों महेश सैनी पुत्र लाल सिंह सैनी निवासी मिलक किच्छा राम पंजाब नगर थाना सिविल लाइन, विजय सिंह पुत्र राजाराम निवासी मिलक किच्छा राम पंजाब नगर थाना सिविल लाइन, सतेंद्र सिंह पुत्र वेदराम निवासी खैरुल्लानगर थाना भोट, कौशल सक्सेना पुत्र महेश चंद निवासी अस्दुल्लापुर होली चौक थाना मिलक को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तगण 03 मोटरसाइकिल पर अपमिश्रित शराब के भरे हुए 31 पव्वे, 35 लीटर अपमिश्रित शराब, 109 खाली पव्वे, 80 ढक्कन, 01 बाल्टी, 01 कीप, 01 मग्गा, 01 बोतल करिमल एवं यूरिया बरामद हुआ। इस संबंध में थाना शहजाद नगर रामपुर पर सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजीकृत कर कार्यवाही की जा रही है।

नाबालिग लड़की को भगा ले जाने के मामले में रिपोर्ट दर्ज

» मदरलैंड संवाददाता

गढमुक्तेश्वर। गढ कोतवाली क्षेत्र के एक गांव से नाबालिग 17 वर्षीय लडकी को बहला फुसलाकर ले जाने के मामले में लडकी के पिता की तहरीर पर दो लोगो को नामजद करते हुऐ रिपोर्ट दर्ज कराई गई है।गढ कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी एक व्यक्ति ने अपनी 17 वर्षीय लडकी के बहला फुसलाकर ले जाने के मामले में गढ नगर क्षेत्र निवासी दो लोगो को नामजद करते हुऐ रिपोर्ट दर्ज कराई है। इस संबंध में गढ कोतवाली प्रभारी शीलेश कुमार का कहना है कि पीडित की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर घटना की जांच करते हुऐ लडकी की तलाश शुरू कर दी है।

संक्षिप्त समाचार

प्रशासन की पार्क खाली कराने की कार्यवाही से तहसील में हडकम्प

मदरलैंड संवाददाता, मैनपुरी। जनपद मैनपुरी की तहसील किशनी मे तहसील भवन के सामने पार्क हे तु आरक्षित की गयी जगह पर वकीलों तथा बैनामा लेखकों के बस्ते रखना जिलाधिकारी को रास न आया। विगत तहसील दिवस पर उन्होने उप जिलाधिकारी रामशकल मौर्य को पार्क में रखे सभी बस्तों को हटाकर पार्क खाली करने का मौखिक आदेश दिया।चूंकि कुछ वकीलों ने अपने बस्ते रखने की जगह को सीमेन्टिड कर दिया तो बैनामा लेखकों ने भी पार्क में अपने बस्ते रख लिये।परन्तु पार्क के सोंदर्यकरण के कारण ठेकेदार काम नही कर पा रहा था।पार्क खाली करने के आदेश के वाद वकीलों ने न्यायालयों का बहिष्कार कर दिया।18दिनों बाद एस डी एम ने पुलिस वल के साथ पार्क खाली कराना शुरू किया तो कुछ वकीलो व बैनामा लेखकों ने अपने वस्ते तहसील भवन के पीछे लगा लिये जबकि कुछ बस्ते अभी भी नहीं हटे हैं।एस डी एम मोर्य का कहना है कि शीघ्र ही उपनिबंधक कार्यालय भी तहसील भवन के पीछे शिफ्ट कर दिया जायेगा।ऐसे लोगों को भी चिन्हित किया जा रहा है जो न वकील हैं न लायसेंसधारी बैनामा लेखक लेकिन वह बस्ता डाले हुए हैं।

अवैद्य शराब के मामले में आरोपी की तलाश में पटना पुलिस की दबिश

मदरलैंड संवाददाता, आगरा। बिहार से आयी पटना पुलिस ने अवैद्य शराब के कारोबार में संलिप्त मनसुखपुरा क्षेत्र निवासी एक युवक के घर पर दबिश दी। जहां से आरोपी फरार हो गया। महगोली निवासी राजेन्द्र शर्मा ने नाम से बिहार पटना में किराये पर चल रहे एक गोदाम में करीब दो करोड़ रुपये की अवैद्य शराब का बडा जखीरा पकड़ा गया।जिसमें पटना पुलिस ने गोदाम के स्वामी सहित अन्य लोगों को जब गिरफ्तार किया तो गोदाम किराये पर रामेन्द्र शर्मा महगोली के नाम पर निकला जिसपर पुलिस ने आरोपी के घर महगोली में दबिश दी। जहां से आरोपी सहित पिता व छोटा भाई फरार है। वही ग्रामीणों की मानें तो रामेन्द्र बिहार में कोई बडा कारोबार करता है जहां से लाखों रुपये महीने घर भेज रहा है। वही इस मामले की जानकारी मिलते ही ग्रामीण दंग रह गये। आरोपी के घर पर मां पत्नी व छोटे भाई की पत्नी ही है जिनकी मानें तो रामेन्द्र पटना में चूना फैक्ट्री में काम करते थे।मालिक ने पीना का कारोबार करने के लिये इनके नाम से गोदाम किराये पर लिया था। जिसमें मालिक ने इनको जानबूझकर फसाया है। थानाध्यक्ष मनसुखपुरा गोरव सब्बरवाल ने बताया कि आरोपी की तलाश की जा रही है।

फेसबुक पर टिप्पणी को लेकर विवाद, रिपोर्ट दर्ज

गढमुक्तेश्वर। सिंभावली क्षेत्र के गांव हरौडा निवासी एक व्यक्ति ने चार लोगो पर फेसबुक पर समाज को लेकर गलत टिप्पडी करने ओर शिकायत करने पर गाली गलौच व मारपीट करने का आरोप लगाते हुऐ उनके विरुद्व रिपोर्ट दर्ज कराई है। थाना सिंभावली क्षेत्र के गांव हरौडा निवासी युद्ववीर सिंह ने सिंभावली पुलिस को तहरीर देते हुऐ बताया कि उसी फेसबुक पर जुडे कुछ लोगो ने उसके समाज को लेकर गलत टिप्पडी की थी जिसको लेकर जब उसने इसका विरोध किया तो हरौडा मोड पर चार लोगो लवकेश सिंह, भूरे उर्फ सत्यनेत्र, अकुंर, गोल्डी ने उसके साथ गाली गलौच करते हुऐ मारपीट भी की इतना ही नही उसे जान से मारने की धमकी भी दी गई। इस संबंध में सिंभावली थानाध्यक्ष राहुल चैधरी का कहना है कि पीडित की रिपोर्ट दर्ज करके मामले की जांच की जा रही है।

पालिकाध्यक्ष ने किया सड़क का शिलान्यास

मदरलैंड संवाददाता, हाथरस। पालिका अध्यक्ष आशीष शर्मा द्वारा प्रकाश टेक्सटाइल पर रोड का शिलान्यास किया गया। इस अवसर वहां के निवासियों द्वारा पालिका अध्यक्ष का दुपटटा पहनकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर पालिका अध्यक्ष द्वारा बताया गया कि यहां इस रोड के शिलान्यास से यहां की निवासियों को कापफी राहत मिलेगी और आने जाने वाले निवासियों को कापफी सुविध होगी। इस अवसर पर पालिका अध्यक्ष के साथ सभासद नारायण लाल, पालिका परिषद के अवर अभियंता एम सी सारस्वत व वहां के निवासी उपस्थित थे।

एंटी कोविड वैक्सीन की 536 डोज हुई निष्प्रभावी

अवनीश त्यागी, बिजनौर। संपूर्ण देश के साथ ही बिजनौर में कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए पहले चरण में के 6 सत्र पूरे हो चुके हैं एंटी कोविड-19 की 536 डोज खराब हो चुकी है। इस संबंध में अधिकारियों का कहना है कि लक्ष्य के सापेक्ष स्वास्थ्य कर्मियों का बूथ पर न पहुंचने के कारण ऐसा हुआ है। जनपद में अब तक 9740 स्वास्थ्य कर्मी और 729 राजस्व अधिकारियों कर्मचारियों को एंटी कोविड-19 चीटोस दी गई है 4 और 5 फरवरी को स्वास्थ्य कर्मियों को अंतिम मौका दिया गया था। लेकिन शासन ने टीकाकरण से छूटे लगभग 4557 स्वास्थ्य कर्मियों को एक बार फिर से 15 फरवरी तक के लिए मौका दिया है। जिले में 16 जनवरी से एंटी कॉपिड वैक्सीन डोज देने की शुरूआत अग्रिम पंक्ति के कोरोना योद्धा कर्मियों से की गई। अब तक 1622,28, 29 जनवरी और 4,5 फरवरी को प्रथम चरण के 6 सत्र में टीकाकरण किया गया है। कोविड-19 पर कुल 14297 स्वास्थ्य कर्मियों का डाटा अपलोड है। इनमें से अब तक 9740 स्वास्थ्य कर्मी और 729 राजस्व अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रतिरक्षित किया जा चुका है। वर्तमान में 4557 स्वास्थ्य कर्मियों का टीकाकरण किया जाना है। इन्हें मैप राउंड के दौरान 15 फरवरी को आखरी मौका दिया जाएगा। इसके चलते शुरू से लेकर अब तक बॉयल की सील खुलने के बाद लगभग 536 डेज का उपयोग नहीं हो सका।

ग्राम पंचायत अहिरवा के किसानों के सामने रोजी-रोटी का संकट गहराया

» मदरलैंड संवाददाता

मैनपुरी। जनपद मैनपुरी के भोगांव तहसील के अंतर्गत आने वाले ग्राम पंचायत अहिरवा के मझरा नगला दीपा, राम नगर, नगला लउ, नगला भसुआहार गांव के किसानों के आगे रोटी रोजी का संकट गहरा गया है।ग्रामीणों का कहना है कि वर्ष 1982 में तत्कालीन ग्राम प्रधान ने बंजर जमीन पर पट्टे दिए थे जो किसी कारणवश पट्टो की फाइल डीएम साहब के यहाँ सुनवाई के लिए न्यायालय में विचाराधीन है।जिसकी अभी जांच चल रही है। ग्रमीणों का आरोप है मामला डीएम साहब के कोर्ट में विचाराधीन होने के बाजजूद भी समय समय पर ग्राम प्रधान द्वारा 40 हजार रुपया बीघा के हिसाब से किसानों ठगा जा रहा है। चार बार 2009,2020,,1982 व 1988 पट्टे दिए जा चुके हैं।किसानों का कहना है कि पचास सालों से हम किसानों ने बंजर जमीन को उपजाऊ बनाया है ग्रामीणों का आरोप है कि ग्राम प्रधान और लेखपाल की काली करतूतों से किसानों की जमीनों पर खड़ी फसल को नष्ट किया जा रहा है। पीड़ित किसानों ने डीएम से मिलकर न्याय की गुहार लगाई है।

एसपी की बदसुलूकी से बेहद तकलीफ है: मुफ़्ती महबूब अली

» मदरलैंड संवाददाता

रामपुर। मजलिस ए शूरा जामा मस्जिद रामपुर के इमाम शहर मुफ़्ती महबूब अली ने प्रेस को जारी बयान में कहा कि मैं मुफ्ती महबूब अली इमाम शहर व मुफ़्ती जिला रामपुर को बताना चाहता हूं कि पुलिस की तरफ से मुझे और मेरे साथियों को जो नोटिस आए थे और पुलिस ने 4 फरवरी 2021 सुबह 11:00 बजे बुलाया था, हम सब 4 फरवरी को पहले डीएम से मिले। उसमें डीएम ने कहा कि कप्तान आज बिलासपुर में है आप हजरात 6 फरवरी को तशरीफ लाएं उसमें कप्तान होंगे और उनके सामने बात हो जाएगी। लेकिन 6 फरवरी को कप्तान के इन्तहाई काबिले एतराज रवैए की वजह से हम लोग वहां से वापस आ गए। लिहाजा मैं और मेरे साथी यानी मजलिसे शूरा के अराकीन पुलिस को कानून का एहतराम करते हुए ताऊन देने के लिए कल भी तैयार थे और आज भी तैयार है। मुझे और मजलिसे शूरा के अराकीन को पुलिस के रवैए और खुसूसन एसपी की बदसलूकी से बेहद तकलीफ है। जिसके लिए मेरा दिल बेचैन है और उस पर गौर व फिक्र कर रहे हैं और जबकि डीएम ने उम्दा रवैया इख्तियार किया जो काबिले तारीफ है और डीएम की गुजारशात पर हम लोग मीटिंग में शरीक होते हैं मगर अब हम बेहद अफसोस में हैं और शहर व जिला के लोगों को उस वाके से बहुत बेचैनी है।

भाजपाइयों ने गिनाई सरकार की उपलब्धियां

» मदरलैंड संवाददाता

आगरा। महानगर आगरा के भाजपा कार्यकताओं ने राज्यसभा सांसद राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम का प्रथमबार आगरा आगमन पर जोरदार स्वागत किया। राज्यसभा सांसद ने सरकार की उपलब्धियां गिनाई। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों का कोई अहित नहीं कर रही हैं। विरोधी दल उन्हें गुमराह कर उकसाने का काम कर रहे है।

योगी सरकार ने आगरा के लिए मैट्रो रेल के लिए करोड़ों रुपये का प्रोजेक्ट दिया। कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम ब्रज क्षेत्र अध्यक्ष रजनीकांत महेश्वरी उत्तर प्रदेश के मंत्री डॉ जीएस धर्मेश चो उदयभान सिंह सांसद एसपी सिंह बघेल प्रदेश में मंत्री अंजुला सिंह माहौर विधायक राम प्रताप सिंह चौहान पुरूषोत्तम खंडेलवाल विधायक महेश गोयल महामंत्री यादवेंद्र शर्मा उपाध्यक्ष सुधीर राठौर राहुल सागर डा रामबाबू हरित टी एन अग्रवाल ब्रज क्षेत्र महिला अध्यक्ष बबीता चौहान विमल जैन मीडिया प्रभारी ऋषि अग्रवाल रश्मि सिंह संजय अरोड़ा मनोज गर्ग मनीष साहू योगेश गौतम अनिल शर्मा नीरज गुप्ता रंजना सिंह पवार श्याम बाबू महेश शर्मा आदि मौजूद रहे। महानगर अध्यक्ष भानु महाजन ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। संचालन हेमंत भोजवानी ने किया।

जगनेर में मुख्यमंत्री आरोग्य मेले के दौरान मरीज को दी गई एक्सपायरी दवा

» शंकरदेव तिवारी

आगरा। जगनेर ब्लॉक के नव प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नौनी पर मुख्यमंत्री आरोग्य मेले में मरीज के इलाज के दौरान एक्सपायरी दवा देने का मामला सामने आया है।आपको बता दें कि नौनी निवासी सिकन्दर खान दवा कराने के लिए नौनी के नव प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मुख्यमंत्री आरोग्य मेले में पहुंचा। चिकित्सक से जांच कराकर जब वह दवा लेने के लिए दवा वितरण काउंटर पर गया तो वितरण करने वाले कर्मी ने उसे पैरासीटामोल आईपी 500 एमजी एक्सपायरी दवा दे दी। उसकी एक्सपायरी की तिथि जनवरी 2021 थी। सिकन्दर जब दवा लेकर घर पहुंच रहे तो रास्ते में उन्होने अपने एक साथी को दवा दिखाई। साथी की नजर एक्सपायरी डेट पर पड़ी। वह एक्सपायरी तिथि देख कर आश्चर्यचकित हो गया। तुरन्त स्वास्थ्य केंद्र पहुंचा। वहीं स्वास्थ्य केंद्र दवा वितरण कर्मी से शिकायत की। करीब 15 मिनिट तक दोनों में झड़प होती रही। वहीं पीड़ित सिकन्दर खान ने पत्रकारों को पूरा मामला बताया कि नौनी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज के नाम पर मरीजों की जिदगी के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। दोषियों पर कार्रवाई करने की जरूरत है। सिकन्दर ने इस मामले को लेकर पदाधिकारी तक से शिकायत करने की बात कही। वहीं इस मामले में आगरा सीएमओ आरसी पांडे ने जगनेर सीएचसी अजीत सिंह को जांच कर रिपोर्ट देने के निर्देश दिए है।

विद्यार्थियों को मिशन-शक्ति महोत्सव से जोड़ने के लिए होगी प्रतियोगिताओं का आयोजन: बंटी ग्रोवर

» मदरलैंड संवाददाता

आगरा। छठवें अंतर्राष्ट्रीय ताज रंग महोत्सव के पोस्टर का विमोचन एक कार्यक्रम में किया गया। सर्वप्रथम महोत्सव के सभी संरक्षकों एवं अतिथियों ने विधि-विधान से समस्त कलाओं के देवता नटराज एवं सरस्वती मां के समक्ष नारियल समर्पित कर दीप प्रज्वलन किया उसके बाद पोस्टर विमोचन किया गया। महोत्सव संयोजक अलका सिंह ने बताया कि इस बार महोत्सव की थीम 'मिशन शक्ति' को समर्पित रहेगी, अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों के साथ एक मंच पर शहर की नृत्य, नाटक, संगीत, गायन, अवेयरनेस, काव्यपाठ, ड्राइंग एंड पेंटिंग, किड्स फैंसी ड्रेस, पारम्परिक परिधान, फैशन शो एवं फोटॉग्राफी आदि की प्रतिभाओं को भी अंतर्राष्ट्रीय मंच प्रदान किया जाएगा। क्षेत्राधिकारी कोतवाली एवं मिशन शक्ति प्रभारी दीक्षा सिंह ने बताया कि 'उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित मिशन शक्ति' का मूल उद्देश्य महिलाओं में आत्मविश्वास एवं जागरूकता पैदा करना है। जो हेल्प लाइन नंबर सरकार द्वारा जारी किए गए हैं उनको जन जन तक पहुंचाना है, इसलिए आगरा पुलिस विभाग में कार्यरत सभी महिला कर्मियों व अधिकारियों को भी महोत्सव से जोड़ा जाएगा जिससे मेहमान कलाकार भी 'मिशन शक्ति' की सार्थकता को समझें और जन जन तक पहुंचायें।

महोत्सव समन्वयक बंटी ग्रोवर ने बताया कि स्थानीय डांस व म्यूजिक एकेडमी, स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों को भी महोत्सव से जोड़ने के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है।

पोस्टर विमोचन के समय मुख्य अतिथियों में उपस्थित रहे क्षेत्राधिकारी कोतवाली दीक्षा सिंह, डॉ.पंकज महेन्द्रू, डॉ.राहुल राज, नितेश शर्मा, रजत अस्थाना, दीपक कालरा, दिनेश अग्रवाल, दीपक शर्मा, सविता कालरा एवं डॉ. आनंद टाइटलर। गणमान्य अतिथियों में एस.के.बग्गा, डॉ. अतुल कुलश्रेष्ठ, टोनी फास्टर, अधर शर्मा, विजय लक्ष्मी शर्मा व सोनम भास्कर। कार्यक्रम में व्यवस्था संभाली रितु गोयल, लालाराम तैनगुरिया, शरद जैन, मिथलेश शाक्य आदि ने।

ग्लैशियर फटने पर बाढ की संभावना को देखते हुऐ गढमुक्तेश्वर में प्रशासन अलर्ट

» मदरलैंड संवाददाता

गढमुक्तेश्वर। उत्तराखण्ड में ग्लैशियर फटने ओर ऋषि डेम को भारी छति होने पर अलकनंदा नदी में बाढ के हालात होने के बाद गढमुक्तेश्वर क्षेत्र में पुलिस प्रशासन गंगा किनारे के रहने वाले ग्रामीणो को बाढ की संभावना को देखते हुऐ अलर्ट रहने को कहा है। ब्रजघाट व गंगा खादर में गंगा के टापू व रेत में लगे तंबू, तख्त आदि को हटवाया गया है।

रविवार को जैसे ही उत्तराखण्ड में ग्लैशियर फटने ओर ऋषि डेम को भारी छति होने पर अलकनंदा नदी में बाढ के हालात होने की सूचना हापुड जिला प्रशासन को मिली तो पुलिस प्रशासन सक्रिय हो गया। ब्रजघाट व गंगा किनारे के गांवो में हापुड के एडीएम जयनाथ यादव, सीडीओ उदय सिंह, एसपी नीरज कुमार जादौन, एसडीएम विजय वर्धन तोमर, एएसपी सर्वेश कुमार मिश्रा तथा तहसील प्रशासन का स्टॉफ पहुंच गया। अधिकारियों ने ग्रामीणो को उत्तराखण्ड की घटना की जानकारी देते हुऐ गंगा किनारे के रहने वाले ग्रामीणो को बाढ की संभावना को देखते हुऐ अलर्ट रहने की चेतावनी दी है। ब्रजघाट व गंगा खादर में गंगा के टापू व रेत में लगे तंबू, तख्त आदि को हटवाया गया है। बरसात के समय बनाई जाने वाली बाढ चैकीयों पर कर्मचारियों की तैनाती करके उन्हें 24घण्टे अलर्ट रहने के निर्देश दिये गये है।

शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की नियुक्ति पर लगी रोक हटाने की भी मांग

» मदरलैंड संवाददाता

बिजनौर। माध्यमिक शिक्षणेत्तर संघ के प्रदेश आवाह्न पर बिजनौर संगठन के जिलाध्यक्ष मुकेश सिन्हा के नेतृत्व में शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने प्रदेश शासन में लंबित मांगों का आठ सूत्रीय एक ज्ञापन नजीबाबाद क्षेत्र के माननीय विधायक तसलीम अहमद को दिया। शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने योग्यता धारी शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को शिक्षक पद पर पदोन्नति देने, राजकीय के समान अवकाश नकदीकरण देने, पुरानी पेंशन व्यवस्था बहाल करने, प्रबंध समिति में भागेदारी करने, चिकित्सा सुविधा, पदोन्नति में सीसीसी सर्टिफिकेट की बाध्यता समाप्त करने,22बी का लाभ देने आदि मांगों को पूरा कराने की मांग की। विधायक तसलीम अहमद ने शिक्षक पद पर पदोन्नति व अवकाश नकदीकरण की जायज मांग को विधानसभा में उठाने का भरोसा दिया। इस अवसर पर संरक्षक मौ यामीन सैफी, वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष अनुज चतुर्वेदी, निरीक्षक बिरजेश गोस्वामी, राधेश्याम शर्मा, सरदार खां उपस्थित रहे।

भाजपा सरकार किसान व जन विरोधी रू जयंत चैधरी

» कांति प्रसाद

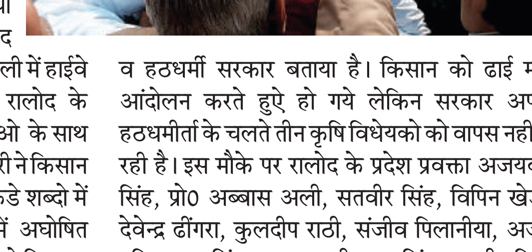

गढमुक्तेश्वर। सिंभावली में रालोद के राष्ट्रीय महासचिव जयंत चैधरी का हाईवे पर दिल्ली से अमरोहा जाते समय पार्टी के पदाधिकारीयों एवं कार्यकर्ताओ ने फुल मालाओ के साथ जोरदार स्वागत किया। जयंत चैधरी ने किसान आंदोलन को लेकर भाजपा की नीतियों की आलोचना करते हुऐ भाजपा को जन विरोधी व हठधर्मी सरकार बताया है।रविवार को रालोद के राष्ट्रीय महासचिव जयंत चैधरी का सिंभावली में हाईवे किनारे किसान डिग्री कालिज के सामने रालोद के पदाधिकारीयों एवं कार्यकर्ताओ ने फुल मालाओ के साथ जोरदार स्वागत किया।इस मौके पर जयंत चैधरी ने किसान आंदोलन को लेकर भाजपा की नीतियों की कडे शब्दो में निंदा करते हुऐ कहा कि भाजपा शासन में अघोषित इमरजैंसी जैसा माहौल बना दिया गया है। जिससे किसान, गरीब मजदूर सहित सभी वर्ग पीडित दिखाई दे रहे हैं। केवल कुछ पुंजिपतियों के लाभ के लिए ही यह सरकार काम कर रही है। जयंत चैधरी ने भाजपा को जन विरोधी व हठधर्मी सरकार बताया है। किसान को ढाई माह आंदोलन करते हुऐ हो गये लेकिन सरकार अपनी हठधमीर्ता के चलते तीन कृषि विधेयको को वापस नही ले रही है। इस मौके पर रालोद के प्रदेश प्रवक्ता अजयवीर सिंह, प्रो0 अब्बास अली, सतवीर सिंह, विपिन खेडा, देवेन्द्र ढींगरा, कुलदीप राठी, संजीव पिलानीया, अजय पुनिया, अरविंद भारद्वाज, बीरपाल सिंह, मनवीर सिंह, धन सिंह, नेत्रपाल सिंह, रोहित, तेजवीर सिंह, धर्मेन्द्र, शिव कुमार त्यागी, राहुल पवांर, मनजीत, नरेश, नितिन, सोनू, विरेन्द्र, निशांत आदि मौजूद रहे।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

किठौर ने प्रोग्राम में पहुंचे जिला पंचायत सदस्य नवाजिश मंजूर

» मदरलैंड संवाददाता

किठौर। रविवार को पूर्व कैबिनेट मंत्री शाहिद मंजूर के पुत्र नवाजिश मंजूर एक प्रोग्राम में शामिल हुए इस प्रोग्राम में उन्होंने किसानों का समर्थन करने की बात कही और कहा कि वर्तमान सरकार ने जो यह काला कानून लॉकर सभी किसान भाइयों को परेशान किया है हम उसके खिलाफ हैं और पूरी समाजवादी पार्टी इस काले कानून का विरोध करती है उन्होंने आगे कहा कि प्रदेश में इस समय जो सरकार चल रही है उसमें मजदूर, व्यापारी किसानों का भला नहीं है यह पूजी पतियों की सरकार है जिसको पूंजीपति ही चला रहे हैं आज उनके साथ मुख्य रूप से शाहजहांपुर के पूर्व प्रधान वाहिद कुरेशी, मुमताज आलम, मारीफुल्लाह खान , रियासत मंद खान , सुंदर खटीक, नसीब आलम खान, सदाकत मंद खान, नगर पंचायत के पूर्व चेयरमैन शम्स परवेज तमशीर आलम खान आदि लोग साथ दें।

विकासखंड स्तर पर आयोजित होगी खुली ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता

» शकील सैफी

मेरठ। जिला युवा कल्याण एवं प्राविद अधिकारी, मेरठ ने बताया कि जनपद के 11 विकास खण्डो में विकास खण्ड स्तर की खुली ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा। उन्होने बताया कि प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के इच्छुक पुरूष एवं महिला खिलाडी प्रतिभाग करेंगे तथा प्रतियोगिता में कोविड-19 हेतु भारत सरकार एवं उ प्र सरकार द्वारा जारी गाइडलाईन का अनुपालन कराने के निर्देष भी उच्च स्तर से दिये गये है।उन्होने बताया कि प्रातः 10 बजे से 7 फरवरी 2021 को संजय गाधी पी जी कालिज सरूरपुर खुर्द तथा सर्व हितकारी इण्टर कालिज किनानगर रजपुरा तथा 8 फरवरी 2021 को गाधी शताब्दी इण्टर कालिज कैली, खरखौदा, बी पी इण्टर कालिज भराला विकास खण्ड दौराला तथा सर्वोदय इण्टर कालिज ग्राम पाचली खुर्द, जानी खुर्द में खुली ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा।

दवा, बीज की बिक्री में किसानों के साथ बड़ा खेल

» नीरज चक्रपाणि

हाथरस। जनपद में बड़ा आलू उत्पादक क्षेत्र है, जहां पर सबसे अधिक फसल के लिए खाद, दवा और बीज की खपत होती है। ऐसे में इसका सीधा फायदा यहां के बीज विक्रेता उठा रहे हैं। किसानों को खूब लूटा जा रहा है।

मौजूदा दौर में फसलों के कम उत्पादन के पीछे जमीन की उर्वरा शक्ति की कमी के अलावा एक बहुत बड़ी समस्या है । दिनदहाड़े उनके यहां डकैती हो रही है। सभी खाद बीज विक्रेताओं पर तो यह बात लागू नहीं होती क्योंकि कुछ ईमानदारी से भी कार्य करते है, वही कुछ बीज विक्रेता किसानों को दिनदहाड़े लूट रहे हैं। उनकी मेहनत की कमाई से अपनी जेबें भर रहे हैं। दरअसल बीज विक्रेता बड़े पैमाने पर गोरख धंधा कर रहे हैं। एक्सपायर खाद, बीज व कीटनाशकों को बेचकर। अब भला आप सोचेंगे कि यहां अधिकतर किसान तो अनपढ़ हैं वह इनके पैकेट पर दर्ज या चस्पा या छपे उत्पादन की तारीख व एक्सपायरी तारीख को पढ़ नहीं पाते होंगे। जी नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है। उत्पादन की तारीख भी दुरुस्त है। और एक्सपायरी डेट भी दुरुस्त है। ऐसे में आपके जेहन में एक सवाल जन्म लेगा, तो इसमें गोरख धंधा है, क्या?

बहुत बड़ा गोरखधंधा खाद बीज कीटनाशक आदि खेती किसानी के डिब्बाबंद उत्पादों में। जब ये एक्सपायर हो जाते हैं, तब ऐसे विक्रेता इन्हें कचड़े मैं नहीं फेंकते या कंपनी को नहीं लौटाते। बल्कि कुछ स्थानीय प्रिंटरों की मदद से एक गंदा खेल खेलते हैं। सबसे पहले उस डब्बे पर दर्ज तारीखों को बड़ी सफाई से मिटाया जाता है। मानो पहले से कोई अंक दर्ज ही ना हो। बिल्कुल कोरा।उसके बाद डॉट मैट्रिक्स प्रिंटर की मदद से हुबहू कंपनी की तरह फिर से उस पर नई तारीखों के साथ प्रिंट कर दिया जाता है। अब किसान के सामने जब ऐसे उत्पाद आते हैं तो वह वही देखते पढ़ते हैं जो उन्हें दिखाया पढ़ाया जाता है। किसान खुशी खुशी ऐसे उत्पाद लेकर अपने खेतों में जाते हैं बीज बोते हैं उसे अच्छी तरह फलने फूलने के लिए खाद डालते हैं और कीटों के आक्रमण से बचाने के लिए ऐसे ही कीटनाशकों का प्रयोग करते हैं। अब भला ऐसे में कैसे फसल अच्छा होगा? कीटों से कैसे बचाव होगा। क्या किसानों के लिए बेची जा रही खाद बीज कीटनाशक की जांच के लिए कोई तैनात है? क्या अगर है तो इतने बड़े पैमाने पर दिनदहाड़े ऐसी डकैती हो कैसे रही है? किसान रो रहे हैं। कुछ कीजिए उनके आंसू को पूछिए। ऐसे काला कारोबार करने वालों पर सख्ती कीजिए। हमारे अन्नदाता को बचाइए।

किसानों को बधुंआ बनाने पर तुली है वर्तमान सरकार :विवेक बंसल

» मदरलैंड संवाददाता

अलीगढ़। काले कृषि कानूनों की मांग को लेकर लगभग 2 माह से भी अधिक समय से खुले आसमान के नीचे भयंकर शीतकाल में अन्नदाता किसान आन्दोलन कर रहे हैं। किसानों के आन्दोलन को बल प्रदान करने के उद्देश से कांग्रेस पार्टी निरंतर उनको समर्थन दे रही है। इसी क्रम में अखिल भारतीय कांग्रेस कमैटी के हरियाणा प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी विवेक बंसल के नेतृत्व में कांग्रेसजनों ने कोल विधानसभा के अंतर्गत विकास खंड धनीपुर के ग्राम ईशनपुर में पदयात्रा करके इन काले कानूनों के विषय में किसानों को जागरूक किया। पदयात्रा के दौरान विवेक बंसल ने ग्रामीणों के साथ ट्रैक्टर चलाकर पदयात्रा का नेतृत्व किया ग्राम में स्थित पुलिस चैकी के कर्मियों को जब इस बात की भनक लगी तो पुलिस कर्मियों ने उनकी इस ट्रैक्टर पदयात्रा को रोकने का प्रयास किया। इस अवसर पर विवेक बंसल ने कहा कि देश की वर्तमान सरकार किसानों को बंधुआ मजदूर बनाने पर अमादा है लेकिन कांग्रेस पार्टी ऐसा नहीं होने देगी क्योंकि ये सरकार अपने बड़े उधोगपति मित्रों को आर्थिक लाभ पहुँचाने के उद्देश से ये हथकंडे अपना रही है लेकिन किसान सरकार इन मंसूबों को पूर्ण रूप से विफल करने के लिये कमर कसे हुए है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि कांग्रेस पार्टी आपके इस संघर्ष में पूर्ण रूप से आपके साथ है। इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख किसानों और कांग्रेसजनों में मुकेश दुबे, अलीमउद्दीन पूर्व प्रधान, राधेश्याम दुबे, गुलबशर खान, लाल सिंह बघेल, अलीम खान, समीर खान, वीरपाल सिंह, प्रभुदयाल, रामप्रकाश दुबे, उपेन्द्र दुबे, हनीफ खान, खलील अहमद, इकराम अली, सतीश कुमार सिंह, वकील कुमार, के साथ साथ ठाकुर अनिल सिंह चैहान, गोपाल मिश्रा, हिमांशु दिनेश, शाहिद खान, बिजेंद्र सिंह बघेल, नरेन्द्र मिश्रा, सचिन शर्मा, अंचित शर्मा, पिंकू बघेल, आदि थे।

जमीन के लालच में भाई ही बना भाई का दुश्मन

अलीगढ़। थाना पिसावा में जमीनी विवाद के चलते भाई ही भाई का दुश्मन बन गया और घर सो रहे छोटे भाई की गर्दन पर बड़े भाई ने फरसे से जानलेवा हमला कर लहूलुहान कर दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने गम्भीर हालत में युवक को उपचार के लिए जेएन मेडिकल कॉलेज ले जाया गया है। जहां उसका उपचार चल रहा है।

जलालपुर निवासी विजेंद्र सिंह पुत्र जोधराज सिंह के अनुसार उसका बड़ा भाई प्रेम सिंह करीब बीस वर्ष पहले ही गांव से अपनी जमीन बेचकर फरीदाबाद चला गया था। अब वह पुनः गांव में पीड़ित की जमीन को हड़पना चाहता है। संभ्रांत लोगों के कहने पर उसने अपने भाई को 50 गज जमीन गांव में रहने को दे दी, लेकिन वह अब खेत पर भी बुरी नीयत डाल रहा है, जिसके चलते कुछ दिन पूर्व पीड़ित का भाई प्रेम सिंह गांव में आ गया और घेर पर बने कमरे में सोने लगा। घटना रविवार सुबह की है। जब पीड़ित विजेंद्र घर पर सो रहा था तभी अचानक उसके बड़े भाई प्रेम सिंह ने चारपाई के ऊपर कपड़े से ढके फरसे को निकाल लिया और छोटे भाई विजेंद्र की गर्दन पर वार कर दिया। फरसा लगते ही वह खून से लथपथ हो गया, जिसकी चीख-पुकार सुनकर ग्रामीण मौके पर पहुंच गए, जिन्हें देखकर आरोपित मौके से भाग गया। सूचना पर पहुची पुलिस ने घायल को उपचार व डॉक्टरी परीक्षण के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। जहां से घायल को मेडिकल रेफर कर दिया गया है। थाना प्रभारी जितेंद्र सिंह भदोरिया ने बताया कि जमीन पर कब्जा विजेंद्र सिंह का है। प्रेम सिंह अपनी जमीन को बेचकर 20 वर्ष पूर्व फरीदाबाद चला गया था। आज धोखे से बड़े भाई प्रेम सिंह ने छोटे भाई विजेंद्र सिंह के ऊपर फरसे से हमला कर दिया। आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

पंच मुखेश्वर बगीची पर अवैध कब्जे की शिकायत पर पहुचें हिन्दूवादी

किसी कीमत पर बगीची पर कब्जा नही होने दिया जायेगा: अभिषेक

» मदरलैंड संवाददाता

हाथरस। तरफरा रोड हाथरस स्थित पंच मुखेश्वर बगीची पर स्थित मंदिर व कुआं आदि को भूमाफियाओं द्वारा कब्जा करने की नियत से क्षतिग्रस्त करने की सूचना एवं स्थानीय लोगों के बुलाने पर हिंदू जागरण मंच के प्रदेश उपाध्यक्ष अभिषेक रंजन आर्य भाजपा के जिला मंत्री श्रीमती संध्या आर्य भाजपा के बूथ अध्यक्ष रामगोपाल कुशवाहा आदि लोग मौके पर पहुंचे और मौके पर उपस्थित दर्जनों स्थानीय लोगों की समस्या को सुना स्थानीय लोगों ने बताया कि इस बगीची पर सैकड़ों साल से आसपास के क्षेत्रा के लोग पूजा करते हैं एवं सैकड़ों वर्षो से छोटे-मोटे कार्यक्रम स्थानीय लोग इसी बगीची पर आयोजित करते आए हैं लेकिन कुछ भू-माफिया प्रशासन से सांठगांठ करके इस बगीची की भूमि पर कब्जा कर रहे हैं एवं अवैध निर्माण कर रहे हैं और भू माफियाओं ने बिना किसी परमिशन के बगीची में लगे हुए हरे पेड़ों को काट दिया है। भाजपा की जिला मंत्री श्रीमती संध्या आर्य ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार का स्पष्ट आदेश है की भू माफिया के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो और पूर्व में किए गए किसी भी अवैध कब्जे को तत्काल हटाया जाए भाजपा शासन में किसी कीमत पर भी अवैध कब्जा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मौके पर उपस्थित हिंदू जागरण मंच के प्रदेश उपाध्यक्ष अभिषेक रंजन आर्य ने स्थानीय लोगों को आश्वासन दिया कि इस संबंध में उनकी बात को उच्चाधिकारियों के समक्ष रखा जाएगा और मंदिर एवं कुआं आदि को किसी भी कीमत पर क्षतिग्रस्त नहीं होने दिया जाएगा सुप्रीम कोर्ट का आदेश है कि यदि मंदिर कुआं आदि का उपयोग जनता करती है तो उसके स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। मौके पर उपस्थित दर्जनों लोगों ने भू माफिया के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

राजनीतिज्ञों के महाकुम्भ में नहीं है कोरोना के नियम

» मदरलैंड संवाददाता

अलीगढ़। अखिल भारतीय वैश्य एकता परिषद का रविवार को अलीगढ़ में राष्ट्रीय अधिवेशन व महाकुंभ में कोरोना के नियमों की पालन करते हुए करने की बात कही गई थी वह सब बातें हवा होती दिखाई दे रही हैं। सम्मेलन की भीड़ को देखकर लगता ही नहीं कि देश में कोरोना महामारी का दौर चल रहा है। एक भी राजनीति पार्टी ऐसी नजर नहीं आ रही, जिसने नियमों की धज्जियां न उड़ाई हों। हैरानी तो इस बात की है कि यह तस्वीरें लगभग सभी पार्टियों के बड़े नेताओं की ओर से अपने ट्वीटर हैंडल या फेसबुक पेज पर भी डाली जाती हैं। वहीं वैश्य एकता परिषद के कार्यक्रम में बारहसैनी महासभा के नेशनल प्रेसीडेंट एलडी वार्ष्णेय का अपमान किया गया। उन्हें मंच पर स्थान नहीं दिया गया और वह प्रेस गैलरी मैं बैठ कर नेता लोगों का संबोधन सुनते रहे। उधर राष्ट्रीय अधिवेशन व महाकुंभ के इस माहौल को देखकर लगता है कि कोविड-19 के यह नियम केवल कुछ खास दिनों व आम लोगों के लिए ही लागू किए गए हैं। सत्ता प्राप्ति के लिए न तो किसी नियम की परवाह की जा रही है और न ही किसी को कोई रोकने वाला बचा है। खासकर तब जब सत्ताधारी नेता ही नियम की धज्जियां उड़ाएंगे तो दूसरी पार्टियों को कौन रोकेगा? आम दिनों में पुलिस लोगों के सरेआम चालान काट रही है लेकिन राजनीतिक अखाड़े में सबकुछ खुल्लम-खुला ही चल रहा है। कोई भी राजनेता इस गैर-कानूनी घटनाओं के खिलाफ बोलने के लिए भी हिम्मत नहीं जुटा पा रहा है। वहीं दूसरी तरफ विशेषज्ञों का कहना है कि सर्दियों में कोरोना की दूसरी लहर उठ सकती है। चाहे पिछले कई दिनों से कोरोना के नए मरीजों में गिरावट दर्ज की जा रही है लेकिन सामाजिक फैलाव चिंताजनक है। प्रधानमंत्री के कोरोना के खिलाफ जन आंदोलन,ह्यजब तक दवाई नहीं, तब तक ढ़िलाई नहींह्ल का कुछ भी असर नजर नहीं आ रहा। क्या मीडिया में चल रही इन तस्वीरों को लेकर देश का स्वास्थ्य विभाग कोई कदम उठाएगा? उत्तर प्रदेश राज्य के अलीगढ़ मण्ड़ल में कोरोना नियमों की धज्जियां उड़ाना और भी खतरनाक साबित हो सकता है जहां स्वास्थ्य सेवाएं बिल्कुल भी मजबूत नहीं है। केन्द्र व राज्य सरकार दोनों को इस मामले में कानून लागू करवाने के लिए दृढ़ता व निष्पक्षता से काम करना होगा।

27 केन्द्रो पर मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेला आयोजित

» मदरलैंड संवाददाता

हाथरस। जनपद के 27 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर रविवार सुबह से मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य मेले में 67 चिकित्सकों और करीब 180 पैरामेडिकल स्टापफ ने लगभग 2141 मरीजों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें उचित परामर्श दिया और दव वितरित की। दो शहरी सहित 25 ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो पर मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेलों का आयोजन हुआ। मेलों में आए विभिन्न बीमारियों से पीड़ित करीब 2141 मरीजों के स्वास्थ्य का परीक्षण कर उन्हें दव दी गई। इनमें 902 पुरुष, 828 महिलाएं और 411 बच्चे शामिल रहे। इस दौरान प्रधनमंत्री आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत लगभग 78 गोल्डन कार्ड बनाए गए। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. बृजेश राठौर तथा अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. मधुर कुमार ने कोमरी, टिकारी और बसई काजी के केन्द्रो का निरीक्षण किया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. बृजेश राठौर ने बताया कि मेले में चिकित्सा अधिकारियों के साथ अन्य स्टापफ द्वारा पूरी मुस्तैदी के साथ लोगों की स्वास्थ्य जांच के साथ दवाएं भी मुहैया करा रहा है। नोडल अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. मधुर कुमार ने बताया कि मेले में कोविड 19 की जाँच, बुखार समेत मौसमी बीमारियों की जांच व इलाज, गर्भवती व बच्चों का टीकाकरण तथा परामर्श सेवाएं, कुपोषित बच्चों का चिन्हीकरण एवं उनके उपचार हेतु समुचित कार्यवाही, दवा और सभी पैथालॉजी की जांच निःशुल्क, आंखों की निःशुल्क जांच, क्षय रोग की जांच, परिवार नियोजन के अस्थायी साध्न तथा नसबंदी के लिए पंजीकरण, प्रधनमंत्री जन आरोग्य योजना एवं मुख्यमंत्री जन आरोग्य अभियान की जानकारी तथा पात्रा लाभार्थियों के आयुष्मान गोल्डन कार्ड वितरण, चिकित्सा व उपचार के अलावा संदर्भन की सुविध, गर्भावस्था, प्रसवकालीन व जन्म पंजीकरण का परामर्श, बच्चों में डायरिया, निमोनिया रोकने के लिए परामर्श सुविध, मलेरिया, डेंगू, पफाइलेरिया व कुष्ठ की स्क्रीनिंग, बीपी, शुगर, मुख, स्तन एवं सर्वाइकल कैंसर की स्क्रीनिंग, तंबाकू और मद्यपान छोड़ने के लिए परामर्श, बुखार समेत मौसमी बीमारियों की जांच, गर्भवती व बच्चों का टीकाकरण, दवा और सभी पैथालॉजी की जांच निःशुल्क, हेपेटाइटिस-बी आदि सुविधएं दी गई हैं।

मासूम बच्ची को न्याय दिलाने वाले पुलिसकर्मी को किया सम्मानित

» मदरलैंड संवाददाता

हाथरस।चंदपा थाना क्षेत्रा में एक डेढ़ वर्षीय बच्ची के साथ उसी के गांव के व्यक्ति द्वारा दुष्कर्म की घटना कारित की गई थी। परिजनों की सूचना पर तत्काल थाना चंदपा पर अन्तर्गत धरा 376/2 च भादवि व 5/6 पोक्सो अध्निियम का अभियोग पंजीकृत कर पुलिस द्वारा आरोपी को तत्काल गिरफ्रतार कर जेल भेजा गया था। विवेचक प्रभारी निरीक्षक थाना चंदपा श्रीमती नीता रानी द्वारा फारेन्सिक साक्ष्य संकलन कर गुणवत्ता पूर्वक विवेचना पूर्ण कर मात्रा 11 दिन में अभियुक्त के विरुद्व आरोप पत्रा न्यायालय में प्रेषित किया गया था।

प्रभारी निरीक्षक थाना चंदपा, पैरोकार सिपाही श्याम सुन्दर के द्वारा न्यायालय में अभियोग की सशक्त पैरवी की गई एवं ए.डी.जी.सी. राजपाल सिंह दिसवार की सहायता से गवाहों एवं माल को समय से न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। जिसके फलस्वरूप न्यायालय द्वारा अभियुक्त वीरेन्द्र को मात्रा 23 दिनों के भीतर ही आजीवन कारावास व एक लाख रुपए का अर्थदण्ड से दण्डित किया। उल्लेखनीय है कि जनपद में प्रथम बार किसी कोतवाली का कार्यभार महिला निरीक्षक को सौंपा गया है जिसे श्रीमती नीता रानी द्वारा कर्तव्यनिष्ठ तथा समर्पित होकर निष्पादित किया जा रहा है।

प्रभारी निरीक्षक थाना चंदपा श्रीमती नीता रानी, ने श्याम सुन्दर ;पैरोकार, राजपाल सिंह दिसवार ;ए.डी.जी.सी.द्ध की कार्य कुशलता, दक्षता एवं अभियोग में की गई प्रभावी पैरवी की प्रशंसा करते हुए पुलिस अधेक्षक विनीत जायसवाल ने पुलिसकर्मी को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

राजाओं के पास धन की कमी पूरी करते थे भामाशाह:ओम बिरला

» अर्जुन वार्ष्णेय

अलीगढ़। वैश्य समाज को आगे बढ़ाएं ताकि सामूहिकता के साथ देश राष्ट्र की सेवा समर्पण का काम कर सके उक्त उदगार आगरा रोड स्थित एक फार्म हाउस में अधिवेशन को संबोधित करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने दिये उन्होंने कहा कि इस देश के अंदर वैश्य समाज का राष्ट्र निर्माण में बड़ा व्यापक योगदान रहा है। आजादी की लड़ाई हो आजादी के बाद नए भारत के निर्माण की बात हो। आजादी की लड़ाई में भी विश्व कल्याण में समाज ने बहुत बड़ा योगदान दिया और उसके पहले राजाओं के राज में भी जब राजा युद्ध लड़ते थे। उन्हें अपने राज को बचाने व हिंदू को बचाने के लिए देश को बचाने के लिए उस समय राजाओं के पास भी धन की कमी हो जाती तो भामाशाह के रूप में आप जैसे लोग सहयोग करते थे। आज भी वही संस्कार है, आज भी वही विचार हैं कि किस तरीके से हम नए भारत के निर्माण में अपना सहयोग करें। नए भारत के निर्माण में सहयोग करना है तो सबको सामूहिक रूप से सहयोग करना होगा और इसीलिए वैश्य समाज आजादी के बाद इस देश में कल-कारखाने हो या उद्योग, व्यापार ताकि हम देश को एक नई गति की ओर ले जा सके।

अधिवेशन के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में अहम योगदान देने वाली 40 हस्तियों को मरणोपरांत भामा शाह रत्न से नवाजा जाएगा। यह सम्मान इनके स्वजनों को दिया जाएगा। इनमें महान संगीतकार रवींद्र जैन, राम मंदिर आंदोलन के प्रेणता अशोक सिंघल, अभिनेता भारत भूषण, पूर्व मुख्य मंत्री सीवी गुप्ता, पूर्व विधायक केके नवमान शामिल हैं।

मुख्य संयोजक व राष्ट्रीय महासचिव मानव महाजन ने बताया नगर विकास राज्य मंत्री महेश गुप्ता व राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमंत गुप्ता ने तैयारियों का जायजा लिया। महाकुंभ के विशिष्ट अतिथि कैबिनेट मंत्री कपिल देव अग्रवाल, नगर विकास राज्यमंत्री महेश गुप्ता, स्वास्थ्य राज्यमंत्री अतुल गर्ग, कैबिनेट मंत्री रवींद्र जायसवाल, प्रभारी मंत्री सुरेश राणा भाजपा ब्रज क्षेत्र अध्यक्ष रजनीकांत माहेश्वरी, सांसद सतीश गौतम, मध्य प्रदेश के मंदसौर सांसद सुधीर गुप्ता होंगे। लोकसभा अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा व अलीगढ़ माहेश्वरी महासभा की ओर से आगरा रोड पर सिंघल धर्मकांटा के पास रामकुमार सादानी इंडस्ट्रीज में आयोजित सम्मान समारोह में शामिल होंगे। इसके बाद वे दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगे।

एनए कल्चरल सोसायटी द्वारा सम्मान समारोह आयोजित

» **विनोद कुमार**

चंडीगढ़। एनए कल्चरल सोसायटी चंडीगढ ने अपने सम्मान समारोह में साहित्यकार और मिडियाकर्मियों को सम्मानित किया। यह समारोह सेक्टर 37 में आयोजित हुआ। इसमें सुप्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार प्रेम विज, प्रसिद्ध साहित्यकार एवं चंडीगढ़ ब्यूरो चीफ डॉ. विनोद शर्मा, सीनियर फोटो जर्नलिस्ट सुनील शर्मा और फोटो जर्नलिस्ट संतांशु शर्मा को पत्रकारिता एवं साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। उनको यह सम्मान संस्था की अध्यक्षा पायल और शैली तनेजा ने प्रदान किया। इस मौके पर सम्मानित सदस्यों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

पंचकूला वासियों ने काफी मतदान कांग्रेस के पक्ष में किया: चौ. चंद्रमोहन

» **मदरलैंड संवाददाता**

पंचकूला। हाल ही में हुए नगर निगम पंचकूला के चुनावों में वार्ड नं 16 (चंडीकोटला, भीड़ घग्गर, चंडीमंदिर, नाडा, चौंकी) से कांग्रेस प्रत्याशी रहे दयाल सिंह पूर्व सरपंच द्वारा चंडीकोटला में विशाल जनसभा का आयोजन करके मतदाताओं व वार्डवासियों द्वारा साथ व समर्थन के लिए धन्यवादी सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें सेकड़ो की संख्या में उनके समर्थक पहुंचे तो वही हरियाणा सरकार के पूर्व डिप्टी

सीएम चंद्रमोहन जी ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। दरअसल, चौ. चन्द्रमोहन ने कहा कि आने वाले समय मे सभी अन्य वार्डो में कांग्रेस पार्टी के कार्यकतोओं, मतदाताओं व निवासियों का आभार व्यक्त किया जाएगा। पंचकूला वासियों ने काफी मतदान कांग्रेस के पक्ष में किया है जिससे पार्टी को धरातल पर मजबूती मिली है।इन धन्यवाद कार्यक्रमों से न केवल पार्टी कार्यकताओं का उत्साह बढ़ेगा तो वही आगामी चुनावों में भी पार्टी के पक्ष में सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे।

इस दौरान कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि शर्मा, पूर्व मेयर उपिंदर आहलुवालिया, धनेंद्रवालिया, हेमन्त किगरं अच्छरू राम, बालक राम मुसाफिर, विनोद पूर्व पार्षद, दीपांशु बंसल एनएसयूआई आरटीआई सेल के राष्ट्रीय कन्वीनर,, अमन दत्त शर्मा, ओम शुक्ला, जगमोहन भनोट, केएस नागरा, चतर सिंह समेत अन्य नेताओ ने सम्बोधित किया तो बैठक में सेकड़ो की संख्या में लोग मौजूद रहे। अच्छरू राम ने सभा का मंच संचालन किया।

संक्षिप्त समाचार

नए कृषि कानूनों को अविलंब निरस्त करे केंद्र सरकार: बादल

चंडीगढ़। शिरोमणि अकाली दल (शिअद) प्रमुख सुखबीर सिंह बादल ने केंद्र सरकार से किसानों की मांग स्वीकार करने और कृषि कानूनों को बिना और देरी किए निरस्त करने की मांग की है। सुखबीर बादल ने केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र तोमर से सवाल किया कि वह एक भी ऐसे दल का नाम बताएं जोकि किसानों का प्रतिनिधि है और उसने तीन कृषि कानूनों का स्वागत किया हो? उन्होंने कहा कि कृषि मंत्री को संसद में यह धारणा बनाकर लोगों को गुमराह करना बंद करना चाहिए कि ये कानून सभी को स्वीकार्य हैं। तोमर ने शुक्रवार को कहा था कि सरकार ने कृषि कानूनों में संशोधन करने की किसानों की मांग यदि मान ली है तो इसका यह मतलब नहीं है कि इन तीनों कानूनों में कोई खामी है। बादल ने अमृतसर में कहा केंद्र सरकार को इसे प्रतिष्ठा का सवाल नहीं बनाना चाहिए। इसके बजाय, उसे किसानों की आवाज को सुनना चाहिए और तीनों कानूनों को बिना देरी किए रद्द करना चाहिए। बादल ने पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह पर भी निशाना साधा और उन पर भाजपा के साथ छद्म रूप में काम करने का आरोप लगाया। साथ ही उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री ने 26 जनवरी से लापता पंजाबी युवाओं का पता लगाने के लिए कोई कदम नहीं उठाया है। शिअद अध्यक्ष ने एक बयान में कहा है कि मुख्यमंत्री का यह कर्तव्य था कि वह इस मुद्दे को मजबूती से भाजपा नीत केंद्र सरकार के सामने उठाते। उन्होंने आरोप लगाया कि अमरिंदर सिंह ऐसा करने में नाकाम रहे हैं।

गायिका ने की पंजाबी लोक गीतों के जादू को फिर से जगाने की पहल

» **मदरलैंड संवाददाता**

चंडीगढ़। पंजाबी गायिका किरण कौर अपनी दिलकश आवाज के माध्यम से पंजाबी लोक गीतों के जादू को फिर से जगाने पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। 'आवाज पंजाब दी ' फेम वाली गायिका किरण कौर ने हाल ही में अल्पसंख्यक मंत्रालय द्वारा लखनऊ में आयोजित 14-दिवसीय समारोह हुनर हाट में भी प्रस्तुति दी। वह जुत्ती कसूरी, बूहे बारिया, अज्ज दी दिहाड़ी जैसे पंजाबी लोकगीतों को अपनी आवाज दे रही हैं। इन गीतों के बोल तो पुराने ही रहेंगे, हालांकि इनका संगीत रीमिक्स किया जाएगा और इन्हें एक नये रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

किरण कौर ने कहा, 'पंजाबी लोकगीत सदाबहार हैं। इनमें पंजाबी संस्कृति और इतिहास का सही सार छुपा होता है। गीत और संगीत न केवल युवाओं की आत्मा को छूएगा, बल्कि उन्हें अपनी जड़ों से भी जोड़े रखेगा।'

मैं एक बीते युग के करिश्मे को वापस लाने के उद्देश्य से प्रयास कर रही हूं।'

फाइलें जलाने के मामले को रफा दफा करने की साजिश: कांग्रेस

» **मदरलैंड संवाददाता**

चंडीगढ़। शहर के पॉश एरिया की प्रॉपर्टी की फाइलों को जलाने व उसके बाद आरोपियों को बचाने पर अध्यक्ष प्रदीप छाबड़ा ने बीजेपी के नेताओं को आड़े हाथों लेते हुआ कहा मुख्य आरोपियों को पकड़ना तो दूर जिन ऑफिसरों के कहने पर चपड़ासी ने फाइलें जलाई थी अब उन्हें किन के कहने पर बचाया जा रहा है कौन से भू माफिया इसमें शामिल है कौन से ऑफिसर शामिल क्या ये अब भाजपा के नेताओं के करीबी है तभी तो नहीं इन्हे बचाया जा रहा है! गरीब लोगों के घरों में नोटिस भेजे जा रहे है उनके घर तोड़े जा रहे है उनकी कोई सुनवाई नहीं है। चुनाव से पहले मकानों में बदलाव का लॉलीपॉप देखकर वोट लेने की भाजपाइयों की चाल शहरवासी समझ चुके है। जब से एस्टेट ऑफिस में फाइलों को जलाया गया है तब से बीजेपी के नेताओं के मुहँ में दही जम गई है। सीसीटीवी कैमरे में कैद आरोपियों को पकड़ा बीजेपी राज में मुश्किल हो गया है। फाइलों को जलाने वाला चपड़ासी जिन ऑफिसरों व भू माफिया के कहने पर व फोन पर बातचीत कर रहा है उन्हें अब तक क्यों नही गिरफ्तार किया गया। बीजेपी का कौन सा नेता इसमें शामिल है और कौन कौन आरोपियों को बचाने की कोशिश कर रहा है सब सीबीआई की इंक्वायरी में शामिल होगा तो ही दूध का दूध पानी का पानी होगा। कांग्रेस इस मुद्दे को जनता तक लेकर जाएगी ओर जल्द ही इसपर अपना आगे की रणनीति तय करेगी।

पीसीए द्वारा पूरे पंजाब में जिला स्तर पर खेल को बढ़ावा देने हेतु टूनार्मेंट को दीं मंजूरी

चंडीगढ़। पंजाब स्तरीय ट्राइडेंट इंटर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट कप की शुरूआत क्रिकेट की प्रमोशन के तहत राज्य के उन जिलो में की गई, जिनमें क्रिकेट के प्रति बच्चों की दिलचस्पी दूसरे जिलों की तुलना में काफी कम है। टूनार्मेंट ट्राइडेंट इंटर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट कप 2021 को पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन ने मंजूरी दे दी है। इस टूनार्मेंट को ट्राइडेंट ग्रुप ऑफ कंपनी द्वारा प्रायोजित किया गया है।

खेल को बढ़ावा देने मकसद से ही ट्राइडेंट ग्रुप के अध्यक्ष और पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन मोहाली के अध्यक्ष पद्म श्री राजिंदर गुप्ता की देख रेख में जिला स्तर पर 50 ओवर के एक दिवसीय क्रिकेट मैचो का आज से आगाज हो गया।

सैंट्रल जीएसटी ने किया 32 फर्जी फर्मों के नेटवर्क का पदार्फाश, 2 गिरफ्तार

लुधियाना। सैंट्रल गुड्स एंड सर्विस टैक्स कमिश्नरेट (सीजीएसटी) की एंटी इवेजन शाखा ने लुधियाना में 32 फर्जी फर्मों के एक गठजोड़ का पदार्फाश किया है। ये फर्में गुरबक्श लाल उर्फ हैप्पी नागपाल द्वारा ऑप्रेट और मैनेज की जाती थीं। इन फर्मों द्वारा लगभग 427 करोड़ की बोगस बिलिंग की गई है, जिसमें लगभग 65 करोड़ का फर्जी आईटीसी शामिल है। इस मामले में हैप्पी नागपाल की मदद उसके 2 साथी संदीप कुमार उर्फ पुरी पुत्र अशोक पुरी व राजिंदर सिंह कर रहे थे। साथ ही दोनों की कई फर्मों में हिस्सेदारी भी थी जिन्हें विभाग ने 5 फरवरी को गिरफ्तार किया है जबकि मास्टर माइंड गुरबक्श लाल उर्फ हैप्पी नागपाल फरार है। विभाग ने अपनी कार्रवाई को बिजनैस इंटैलीजैंस एंड फ्रॉड एनालिटिक्स (बीआईएफए) सॉफ्टवेयर के तहत अंजाम दिया है। विभाग को सॉफ्टवेयर की मदद से धोखाधड़ी और कर चोरी का पता लगाने में कामयाबी मिली है। इन 32 बोगस फर्मों द्वारा जिन फर्मों को बिल बेचे गए हैं, विभाग की अगली कार्रवाई उन पर होगी। पता चला है कि उक्त आरोपी अधिकतर आयरन व स्क्रैप डीलर्स को बिल बेचते थे। जिन पर जीएसटी की स्लैब सबसे अधिक है।

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने आज करनाल में रेलवे भूखंड पर नगर निगम की ओर

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने आज करनाल में रेलवे भूखंड पर नगर निगम की ओर से करीब 88 लाख रुपए की लागत से तैयार करवाए गए भव्य पार्क को जनता को समर्पित किया। इस पार्क का नाम बाबा साहेब डॉ0भीमराव अम्बेडकर के नाम पर रखा गया है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने उपस्थित नागरिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यहां के निवासियों की एक पुरानी मांग पूरी हुई है और जहां एक समय में गंदगी रहती थी वहां आज खूबसूरत पार्क बनने से लोगों को बड़ी राहत मिली है। अब नागरिक इस पार्क में सैर-सपाटा व घूमकर सुकून पा सकेंगे। उन्होंने बताया कि यह पार्क करीब डेढ एकड़ में बना है, इसमें हाई मास्ट लाईट, बोलार्ड लाईट, ओपन जिम, बच्चों के खेलने के लिए झूले, विभिन्न प्रकार के सजावटी पौधे, गैजिबो, बैंच, फुटपाथ व दीवारों पर चित्रकारी की गई है। मुख्यमंत्री ने बताया कि इसके साथ लगते रेलवे के अन्य खाली पड़े भूखंड की भी साफ-सफाई कर इसे सुंदर बनाया जाएगा, इसके लिए रेलवे से बात करेंगे। लोगों की मांग पर यहां एक टिकट खिडकी भी खोली गई है, जो जल्दी ही शुरू होगी। लाईन पार एरिया के लोगों की वर्षो पुरानी फुट ओवर ब्रिज बनाने की मांग भी पूरी हो गई है। इसका कार्य प्रगति पर है और जल्द ही पूरा होने वाला है।

अपने सम्बोधन में मुख्यमंत्री ने नशे जैसी बुराई को समाज से दूर रखने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि इस समस्या के समाधान के लिए सामूहिक जागरूकता अभियान चलते रहना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोई भी नशा दृढ़ इच्छा शक्ति से छोड़ा जा सकता है। मुख्यमंत्री ने उपस्थित लोगों को नशे से दूर रहने का संकल्प करवाया।

महापौर श्रीमती रेनू बाला गुप्ता ने मुख्यमंत्री की ओर से करनाल के लोगों को दी गई विकास सौगातों के लिए उनका धन्यवाद किया और कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में करनाल निरंतर आगे बढ़ रहा है।

लिफ्ट देकर बुजुर्ग से पांच लाख रुपये ठगे

गुड़गांव। सदर थाना एरिया के राजीव चौक पर गुरुवार दोपहर कुछ युवकों ने एक बुजुर्ग को लिफ्ट देकर लाखों की ठगी कर ली। युवकों ने बालाजी जाने की बात कहकर युवक को कार में बैठाया। इसी दौरान बातों में लगाकर उसका पैसों वाला पैकेट बदल दिया। देर रात बुजुर्ग को सेक्टर-50 एरिया में एक प्राइवेट स्कूल के निकट छोड़कर फरार हो गए। पुलिस ने इस बारे में शिकायत के बाद केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस वारदात स्थल के आसपास के सीसीटीवी खंगालकर मामले की जांच कर रही है। सदर थाना पुलिस को राजस्थान के गांव हिडौन करोली निवासी 66 वर्षीय मुरारी लाल ने गुरुवार शाम शिकायत दी। इसमें बताया कि वह गुड़गांव में एक ठेकेदार से पांच लाख रुपये की पेमेंट लेने के बाद राजस्थान जाने के लिए राजीव चौक पर किसी वाहन का इंतजार कर रहा था। दोपहर करीब पौने बारह बजे वहां पर एक कैब आकर रुकी। कैब में पहले से ड्राइवर सहित तीन युवक सवार थे। इन्होंने बुजुर्ग के सामने कैब रोककर पूछा कि उनको कहां पर जाना है।

पंजाब ने ठोस कचरा अलग करने और घर-घर एकत्रीकरण का लक्ष्य 100 प्रतिशत हासिल किया

» **मदरलैंड संवाददाता**

चंडीगढ़। पंजाब ने नगर निगम के ठोस कचरे को अलग करने और इसकी घर-घर से एकत्रीकराण के लक्ष्य को लगभग 100 प्रतिशत हासिल कर लिया है। इसके अलावा जिला स्तर पर प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए 14 जिला पर्यावरण योजनाएँ तैयार की गई हैं।

यह खुलासा मुख्य सचिव श्रीमती विनी महाजन ने जस्टिस (सेवामुक्त) जसबीर सिंह की अध्यक्षता में सतलुज और ब्यास नदियों के लिए एन.जी.टी. की तरफ से नियुक्त निगरानी कमेटी के साथ विचार-विमर्श के बाद किया। उन्होंने कमेटी को भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार पर्यावरण के सुधार के लिए हर संभव प्रयास कर रही है और राज्य के नागरिकों को साफ और सुरक्षित पीने लायक पानी मुहैया करवाने के लिए वचनबद्ध है।

श्रीमती महाजन ने यह भी भरोसा दिया कि सरकार कृषि प्रधान राज्य में बायोमैडीकल और प्लास्टिक अवशेष समेत ठोस अवशेष प्रबंधन के लिए यत्न और तेज करेगी।

पूर्व मुख्य सचिव एस.सी. अग्रवाल, पर्यावरण प्रेमी बाबा बलबीर सिंह सीचेवाल (दोनों मैंबर) और तकनीकी माहिर डॉ. बाबू राम के पैनल ने मुख्य सचिव को खास संदर्भ सहित राज्य के पर्यावरण के साथ जुड़े विभिन्न मुद्दों, नदियों में पानी की गुणवत्ता में सुधार लाने और शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अवशेष प्रबंधन बारे बताया। यह कमेटी नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल द्वारा विशेष तौर पर पर्यावरण के साथ सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों को देखने के लिए साल 2019 में गठित की गई थी।

पिछले 2 सालों में राज्य की सबसे अहम उपलब्धि ब्यास नदी के दो हिस्सों में पानी की गुणवत्ता में जरुरी स्तर (क्लास-बी) का सुधार लाना रहा है। इससे यह नदी ऐसे मापदण्डों वाली देश की एकमात्र नदी बन गई है।

इसके अलावा 500 करोड़ रुपए के साथ लुधियाना में से गुजर रही सतलुज नदी की सहायक नदी, गंदा बूढ्ढा नाला के प्रदशण की समस्या को हल करने के लिए डेयरी अवशेष के लिए सिवरेज ट्रीटमेंट प्लांट और ऐफलूएंट ट्रीटमेंट प्लांट लगाना है। उम्मीद जताई जा रही है कि इन प्लांटों के शुरू होने से सतलुज नदी के पानी की गुणवत्ता में काफी सुधार होगा।

इसके अलावा सतलुज नदी में गिरने वाले औद्योगिक प्रदूषण को रोकने के लिए 105 एम.एल.डी क्षमता वाले कॉमन ऐफलूएंट ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किये गए हैं।

मीटिंग में अतिरिक्त मुख्य सचिव जल स्रोत, प्रमुख सचिव स्थानीय निकाय, चेयरमैन पंजाब प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, डायरैक्टर ग्रामीण विकास एवं पंचायत और डायरैक्टर पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन भी शामिल थे।

चंडीगढ़ भाजपा द्वारा बजट पर बुद्धिजीवी सम्मेलन का आयोजन

» **मदरलैंड संवाददाता**

चंडीगढ़। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा गत दिनों लोकसभा में पेश किए गए वर्ष 2021-2022 के केंद्रीय बजट की समीक्षा करने और उस पर चर्चा करने के लिए चंडीगढ़ भाजपा ने सेक्टर 37 स्थित 'लॉ भवन' में बुद्धिजीवी सम्मेलन का आयोजन किया। प्रदेशाध्यक्ष अरुण सूद की अध्यक्षता में हुए इस सम्मेलन में केंद्रीय वाणिज्य एवं औद्योगिक राज्यमंत्री सोम प्रकाश मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे जबकि राष्ट्रीय कार्यकारी समिति सदस्य एवं पूर्व प्रदेश अध्यक्ष संजय टंडन, मेयर रवि कांत शर्मा, प्रदेश महामंत्री चन्द्रशेखर, रामवीर भट्टी व बार कॉउन्सिल के सदस्य राजकुमार चौहान सहित बड़ी संख्या में शहर के प्रतिष्ठित वकील, डॉक्टर, इंडस्ट्रियलिस्ट, व्यापारी और अन्य गणमान्य व बुद्धिजीवी वर्ग ने इस सम्मेलन में हिस्सा लिया।

इस अवसर पर बोलते हुए केंद्रीय राज्य मंत्री सोम प्रकाश ने कहा कि इस वर्ष का केंद्रीय बजट देश के लिए आशा की नई किरण लेकर आया है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2021-2022 का केंद्रीय बजट 130 करोड़ भारतीयों की प्रतिज्ञा और क्षमता में विश्वास को पुनः जागृत करता है। यह बजट अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए रणनीति को बदलने का एक अच्छा प्रयास है इसमें कारपोरेट संकट को समाप्त करने तथा सुधारों के सिलसिले जारी रखने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। वैश्विक महामारी करोना के बाद स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। कोरोना वैक्सीन के लिए 35000 करोड रुपए का प्रावधान किया गया है। बुनियादी ढांचे के खर्च में बढ़ोतरी महत्वपूर्ण राजनीतिक बदलाव अर्थव्यवस्था के लिए बूस्टर डोज का काम करेंगे।

बजट में किसानों के बारे में जिक्र करते हुए मंत्री सोम प्रकाश ने बताया कि सरकार किसानों की आय को दोगुना करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में किसान समुदाय के कल्याण के लिए कई सुधार एवं उपाय किए गए हैं जिनमें किसान क्रेडिट कार्ड के दायरे में विस्तार, पीएम फसल बीमा योजना, पीएम-किसान से लेकर हाल ही में अधिसूचित कृषि कानून 2020 शामिल हैं। किसान आंदोलन के बारे में बोलते हुए कहा कि कृषि आंदोलन को लेकर सरकार चिंतित हैं और बराबर नजर बनाये रखी है, हालांकि सरकार निरंतर संवाद करते हुए उनकी आशंकाओं पर ईमानदारी से विचार कर रही है और कृषि कानूनों के प्रावधानों को सौहार्दपूर्ण ढंग से दुरुस्त करने के लिए सरकार ने अपनी इच्छाशक्ति दिखाई है। पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन के लिए ऋण प्रवाह पर ध्यान केंद्रित करते हुए बजट में कृषि ऋण लक्ष्य को बढ़ाकर 16.5 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया है। स्वमित्व योजना के दायरे को सभी राज्यों/ केंद्रशासित प्रदेशों तक बढ़ाना, एपीएमसी को मजबूत करना और ई-एनएएम के दायरे में कई अन्य मंडियों को लाना, सूक्ष्म सिंचाई निधि को दोगुना करते हुए 10,000 करोड़ तक बढ़ाना, ग्रामीण बुनियादी ढांचा विकास निधि को बढ़ाना और बेहतर कीमत सुनिश्चित करने के लिए जल्द खराब होने वाले 22 उत्पादों के लिए ऑपरेशन ग्रीन योजना का विस्तार आदि किसानों को सशक्त बनाने के लिए बजट की अन्य महत्वपूर्ण बातें हैं। उन्होंने किसान आंदोलन के शीघ्र समाप्त होने की कामना की।

इसी प्रकार कमजोर वर्ग को सशक्त बनाने के स्टैंड अप इंडिया के लिए आवश्यक मार्जिन रकम को 15 प्रतिशत तक घटा दिया गया है और कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से संबंधित ऋण को भी उसमें शामिल किया गया है। अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए मैट्रिक के बाद की छात्रवृत्ति में सुधार किया गया है और 750 एकलव्य मॉडल स्कूलों की स्थापना के लिए बजट में वृद्धि की गई है। इन उपायों से समाज के दलित वर्ग के उत्थान में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि मजबूत अर्थव्यवस्था का आधार है यह बजट कोविड महामारी की वजह से दुनिया के सामने स्वास्थ्य के साथ-साथ आर्थिक चुनौती भी पैदा हुई है। भारत जैसे बड़ी जनसंख्या वाले देश के लिए यह चुनौती और बड़ी थी। भारत को एक तरफ कोविड के संकट से लोगों को बचाना वहीं आर्थिक चुनौती का सामना करना था। भारतीय जनता पार्टी आज गौरव के साथ अपने नेतृत्व का अभिनंदन करती है कि उन्होंने न सिर्फ मानवीयता का परिचय देते हुए लोगों के जीवन को प्राथमिकता दी बल्कि आर्थिक चुनौतियों के बीच देश की अर्थव्यवस्था को भी संभालने में सफल रहे।

मोहाली नगर निगम चुनाव

पूर्व मेयर वफादारी बदलने में माहिर: बलबीर सिद्धू

बलबीर सिद्धू ने 25 से अधिक चुनावी सभाओं को संबोधित किया

» **मदरलैंड संवाददाता**

चंडीगढ़। मोहाली नगर निगम चुनाव के लिए कांग्रेस के अभियान को तेज करते हुए, पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री और स्थानीय मौजूदा कांग्रेस विधायक, बलबीर सिद्धू ने रविवार को रिशव जैन, राज रानी जैन, कुलवंत सिंह कलेर, विनीत मलिक, प्रभजोत कौर सिद्धू, बलजीत कौर व रविंदर सिंह सहित पार्टी के उम्मीदवारों के समर्थन में 25 से अधिक चुनावी सभाओं को संबोधित किया।

बलबीर सिद्धू ने मोहाली के पूर्व मेयर कुलवंत सिंह को निहित स्वार्थों के लिए वफादारी बदलने के लिए लताड़ लगाई।

सिद्धू ने कहा, किसान आंदोलन के चलते अकाली दल की हालत बहुत खराब है और अकाली दल के लिए कोई भविष्य नहीं देखने के बाद पूर्व मेयर ने अकाली दल से पीछा छुड़ाकर अपना अलग गुट बना लिया।

यह पहली बार नहीं है जब पूर्व मेयर ने वफादारी बदली है। वास्तव में वह वफादारी को बदलने में मास्टर हैं। लेकिन इस बार मोहाली के लोग उन्हें सबक सिखाएंगे, सिद्धू ने कहा।

मोहाली नगर निगम चुनाव में कांग्रेस की जीत सुनिश्चित करने के लिए मोहाली के लोग अपना मन बना चुके हैं। मोहाली में कांग्रेस ही एकमात्र पार्टी है जो नगर निगम चुनाव में एकजुट है, जबकि विरोधियों को 50 वार्डों के लिए उम्मीदवारों को नामांकित करना मुश्किल था।

किसान आंदोलन ने भाजपा और अकाली दल को बेनकाब कर दिया है। जनता मूर्ख नहीं है। मोहाली मतदाता शिक्षित है यह अच्छी तरह से समझते है कि कौन सी पार्टी सामुदायिक कल्याण के लिए काम करती है और कौन जनता पर दमनकारी नीतियों को लागू करने के लिए जानी जाती है। उन्होंने कहा कि वास्तव में मोहाली नगर निगम चुनाव मोहाली के लोगों के लिए एक सुनहरी मौका है कि वे विरोधी दलों को दरकिनार कर एक मिसाल कायम करें और कांग्रेस की जीत सुनिश्चित करें।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

बुजुर्गों का ख़्याल रखना हमारा कर्तव्य

“ चलिए अब बीते दिनों मध्यप्रदेश की औद्योगिक नगरी इंदौर में घटित एक घटना का जिक्र करते हैं। जिसने पूरी मानव जाति को शर्मसार कर दिया। इंदौर नगर निगम स्वच्छता में नम्बर वन बने रहने की चाहत में इतना नीचे गिर गया कि वह अपने ही शहर के बुजुर्गों को जानवरों की तरह ट्रक में भरकर शहर के बाहर फेंक दिया। ऐसे में समझ नहीं आता कि कहां गई वह संस्कृति जिसमें हमें बड़ो का सम्मान करने की शिक्षा दी जाती है। भारतीय परंपरा में तो पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, जानवरों यहां तक की पत्थरों की भी पूजा करने का विधान बताया गया है। फिर आज हमारे समाज ने अपने ही बुजुर्गों को दर दर की ठोकर खाने के लिए कैसे छोड़ दिया है। यहां चंद पंक्तियां याद आ रही है। जो रामधारी सिंह दिनकर की कृति कुरुक्षेत्र से ली गई है। ”

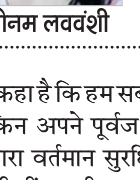

सोनम लववंशी

किसी ने सच ही कहा है कि हम सब कुछ बदल सकते है, लेकिन अपने पूर्वज नहीं। उनकेबिना न ही हमारा वर्तमान सुरक्षित है और ना ही भविष्य की नींव रखी जा सकती है। हमारे पूर्वज ही इतिहास से भविष्य के बीच की कड़ी होते है। इन सबके बावजूद अफसोस की आज हम अपने पूर्वजों का सम्मान तक नहीं कर पा रहे है और न ही उनकी दी हुई सीख पर अमल कर पा रहे हैं। मातृ देवों भवः, पितृ देवों भवः से अपने जीवन का आरम्भ करने वाला मनुष्य इतना स्वार्थी हो जाएगा कि वह अपने पहले गुरु यानी मां और पिता को ही वृद्धावस्था में दर-किनार कर देगा। इसकी कल्पना तो किसी माँ बाप ने नहीं की होगी।

चलिए अब बीते दिनों मध्यप्रदेश की औद्योगिक नगरी इंदौर में घटित एक घटना का जिक्र करते हैं। जिसने पूरी मानव जाति को शर्मसार कर दिया। इंदौर नगर निगम स्वच्छता में नम्बर वन बने रहने की चाहत में इतना नीचे गिर गया कि वह अपने ही शहर के बुजुर्गों को जानवरों की तरह ट्रक में भरकर शहर के बाहर फेंक दिया। ऐसे में समझ नहीं आता कि कहां गई वह संस्कृति जिसमें हमें बड़ो का सम्मान करने की शिक्षा दी जाती है। भारतीय परंपरा में तो पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जानवरों यहां तक की पत्थरों की भी पूजा करने का विधान बताया गया है। फिर आज हमारे समाज ने अपने ही बुजुर्गों को दर दर की ठोकर खाने के लिए कैसे छोड़ दिया है। यहां चंद पंक्तियां याद आ रही है। जो रामधारी सिंह दिनकर की कृति कुरुक्षेत्र से ली गई है। जिसमें युधिष्ठिर भीष्म पितामह के पास जाते हैं है। फिर भीष्म पितामह कहते हैं कि धर्मराज यह भूमि किसी की, नहीं क्रीत है दासी, हैं जन्मना समान परस्पर, इसके सभी निवासी। सबको मुक्त प्रकाश चाहिए, सबको मुक्त समीकरण, बाधारहित विकास, मुक्त आशंकाओं से जीवन।

अब ऐसे में अगर इस धरती पर जन्म लेने वाले सभी व्यक्ति के पास समान अधिकार है। फिर कोई सरकार या सरकारी मुलाजिम कैसे किसी को सिर्फ इसलिए भगा सकता क्योंकि वह बुजुर्ग और भिखारी है। क्या हम सिर्फ बातों में ही संस्कृति के खेवनहार बचें हैं। एक तरफ तो समाज मे बच्चें बड़े होकर अपने माता-पिता को दर-दर भटकने के लिए छोड़ देते। ऊपर से अगर शासन-प्रशासन भी निर्लज्जता पर उतारू हो गया। फिर कहाँ जाएंगे बुजुर्ग लोग। वैसे हम तो वसुधैव कुटुम्बकम की भावना रखने वाले देश के लोग हैं। फिर आधुनिकता की दौड़ में इतना अंधे कैसे हो रहें कि अपने संस्कारों को ही तिलांजलि देने पर तुले हैं। क्या यही आधुनिकता है, जिसमें अपनों का सम्मान करना ही भूल जाए? हम तो विश्वगुरु बनने की राह में आगे बढ़ रहे है फिर कैसे अपने जीवन के प्रथम गुरु के साथ बदसलूकी पर उतर आए? ये सच है कि भागदौड़ भरी जिंदगी में हम अपने लिए ही समय नही निकाल पाते है, तो फिर अपनों की जिम्मेदारियों का ख्याल कैसे रखें? लेकिन जिस मां- बाप ने जन्म दिया उसकी जिम्मेदारी से मुंह तो मोड़ नहीं सकते। हम यह क्यों भूल जाते है कि जिस माँ ने अपनी जिंदगी का सबसे बड़ा दर्द सहन कर हमें इस दुनिया में जन्म दिया है। जिस पिता ने हमें उंगली पकड़कर चलना सीखाया। जिसने हमे इस लायक बनाया की हम सही गलत का फर्क समझ सके। फिर जिस वक्त उन्हें हमारे सहारे की जरूरत फिर हम कैसे मुकर सकते?

एजेबल नामक एक गैर सरकारी संगठन के सर्वे में यह बात सामने आई है कि देश में हर चौथा बुजुर्ग आदमी अकेले रहने को मजबूर है। 2018 में किए गए सर्वेक्षण की माने तो देश के 60 वर्ष से अधिक आयु वाले 52 प्रतिशत बुजुर्ग पारिवारिक उत्पीड़न का शिकार हो रहे है। 63 फीसदी बुजुर्ग स्वयं इस बात को मानते है कि उनका अपना ही परिवार उन्हें बोझ मानता है। हमारे संविधान का अनुच्छेद- 21 प्रत्येक मनुष्य को गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार देता है। जब अपने ही इस अधिकार में बाधा बन जाए तो समाज को यह समझना चाहिए कि हम किस दिशा में आगे बढ़ रहे है। वैसे हमारे समाज की यह बहुत बड़ी बिडम्बना है कि हम बेटों की चाहत में इतने अंधे हो जाते है कि बेटियों को वह प्यार ही नही दे पाते है जिसकी वे असल हकदार होती है। आज भी हमारे समाज मे पुरुषवादी मानसिकता भरी हुई है। हम आज भी बेटे को कुलदीपक मानते है। तो वही बेटियों को पराया धन मानते है। यही कुलदीपक अपने ही जन्मदाता को वृद्धा आश्रम छोड़ कर चले जाते है। उन्हें जीते जी मार डालते है। हमारे समाज मे भेदवाव की जड़े भी समाज को खोखला कर रही है। जहां बेटियों को तो अपना समझा जाता है लेकिन बहुओं को वह सम्मान नही दिया जाता है। लोग तो यह तक भूल जाते है कि आज जो हमारी बहु है वह किसी ओर की बेटी भी होगी। लेकिन यही दोहरी मानसिकता समाज मे कलह की सबसे प्रमुख वजह बन जाती है।

आज न केवल समाज को जागरूक होने की आवश्यकता है बल्कि बुजुर्गों पर हो रहे अत्याचार पर सरकार को भी कड़े कानून बनाना चाहिए। जिससे हमारे बुजुर्ग भी सम्मनपूर्वक अपना जीवन जी सके। हमे समझना होगा कि हमारे बुजुर्ग हमसे क्या कहना चाह रहे है। आज हमने उन्हें सुनने की बजाए अपनी सुनाना शुरू कर दिया है। यही वजह है कि आज समाज मे आपराधिक प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। आज हम पुरानी इमारतों को तो सहेजकर रखना चाहते है, वही हमारे घर के बुजुर्गों को बेसहारा आंसू बहाने के लिए छोड़ रहे है। जो बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है।

संपादकीय

कोरोना की जंग

पिछले साल मार्च में कोरोना की रोकथाम के मद्देनजर लागू किए गए लॉकडाउन के बाद से अब तक देश महामारी से उबर नहीं सका है। लेकिन इससे निपटने के जितने भी इंतजाम किए गए, सावधानियां बरती गई, उसका फायदा जरूर मिला है। वरना शुरूआती दौर में जितने बड़े पैमाने पर महामारी की मार की आशंका जताई जा रही थी, उसके मुकाबले हमारे देश में इसका असर काफी कम देखा गया। इसकी वजह यह रही कि समय रहते सरकार ने अपने स्तर पर बचाव से लेकर इलाज तक के मोर्चे पर ठोस कदम उठाए, जहां जरूरत हुई सख्ती की गई। नतीजतन, इसके संक्रमण की दर को कम किया जा सका। एक पहलू यह भी रहा कि हमारे देश की आबोहवा, आम जनजीवन में खानपान और जीवनशैली के बीच आम लोगों के भीतर कुछ अपने स्तर पर रोग प्रतिरोधक क्षमता ने भी कोरोना की मार की तीव्रता को सीमित रखा। यही वजह रही कि डर और वास्तविक खतरे के बावजूद आज देश ऐसी स्थिति में पहुंच सका है, जहां राहत की सांस ली जा सकती है।इसके समांतर हकीकत यह है कि अगर ह्यसावधानी हटी, दुर्घटना घटीइ जैसे सामान्य संदेशों का खयाल नहीं रखा गया तो हम यह अंदाजा लगा सकते हैं कि इसके खमियाजे क्या हो सकते हैं। यह भारत सहित दुनिया भर के देशों ने देखा है और आज भी इससे पूरी तरह उबरना एक बड़ी चुनौती है। लेकिन इस बीच कोरोना के संक्रमण की स्थिति और उसके प्रसार पर नजर रखने के लिए कराए गए सीरो सर्वेक्षण से ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि इस विषाणु से बहुत सारे लोग संक्रमित हुए और उससे पार भी पा गए। तीन दिन पहले आईसीएमआर यानी भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के महानिदेशक ने पिछले साल सात दिसंबर से आठ जनवरी के बीच कराए गए तीसरे राष्ट्रीय सीरो सर्वेक्षण के निष्कर्षों के आधार पर बताया कि अब तक 18 वर्ष और इससे ज्यादा उम्र के 28,589 लोगों में से करीब 21 फीसद में पूर्व में कोरोना विषाणु की चपेट में आने का पता चला। जबकि 10 से 17 वर्ष की आयु के लगभग 25 फीसद बच्चों में भी इसकी पुष्टि हुई। सर्वेक्षण जब किया गया, तब टीका लगना शुरू नहीं हुआ था।जाहिर है, इस सर्वेक्षण के नतीजे चिकित्सकीय उपायों के समांतर यह संकेत भी देते हैं कि देश में एक बड़ी आबादी ऐसी है जो कोरोना विषाणु से संक्रमित हुई और उससे उबर गई। यानी बहुत सारे लोगों के भीतर विषाणु से लडे के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो चुकी है। इस महामारी को जिस स्तर के खतरे के रूप में देखा जा रहा है, उसमें भारत में अगर लोगों के भीतर खुद ही इससे लडे के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता तैयार हो रही है तो यह एक बड़ी राहत की बात है।

मोदी का मास्टर स्ट्रोक चलेगा क्या........

मुस्ताअली बोहरा

“ किसान तीनों कानूनों को पूरी तरह वापस लेने की मांग पर अडे.हुए हैं। सरकार का कहना है कि बातचीत के जरिए इन कानूनों में संशोधन किया जा सकता है लेकिन किसान चाहते हैं कि सरकार इन तीनों कानूनों को निरस्त करे। किसान संगठन कृषि उत्पादों की एमएसपी से कम मूल्य पर खरीद को दंडनीय अपराध के दायरे में लाने और धान–गेहूं की फसल की सरकारी खरीद को सुनिश्चित करने की मांग कर रहे हैं। दूसरी ओर केन्द्र सरकार ने गतिरोध खत्म करने के लिए किसान नेताओं, संगठन के प्रतिनिधियां से कई दौर की बात की है और एमएसपी जारी रखने, एपीएमसी की व्यवस्था के लिए तैयार है। सरकार इस बात के लिए भी तैयार है कि किसान और निजी कंपनियों में किसी विवाद का फैसला सब डिविजनल मजिस्ट्रेट के जरिए ही नहीं होगा, बल्कि किसानों के सामने अदालत जाने का विकल्प भी होगा। ”

किसान आंदोलन : ना तुम जीते......... ना हम हारे

आम बजट पेश करने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि इस बजट के दिल में गांव और किसान है। जाहिर सी बात है कि किसान आंदोलन के इतना लंबा खिंच जाने की उम्मीद पीएम सहित किसी को नहीं थी। ये माना जा रहा था कि या तो सरकार कोई ना कोई रास्ता निकाल लेगी या फिर किसानों का सब्र टूट जाएगा। लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं। अलबत्ता गणतंत्र दिवस पर किसानों ने परेड निकाल कर इतिहास में एक नई इबारत जरूर लिख दी। गणतंत्र दिवस के दिन किसान परेड के दौरान हुई हिंसा ने भी कई सवालों को जन्म दे दिया। किसान, तीनों कृषि कानून को वापस लेने की अपनी मांग पर अडिग हैं तो दूसरी ओर सरकार बातचीत के जरिए संशोधन करने और इस समस्या का हल निकालने की बात बार बार कह रही है। कृषि मंत्री और विभागीय आला अफसरों ने इस बात की पूरी कोशिश की कि नए कानूनों के लाभ बताकर और जरूरत के हिसाब से आश्वासन देकर आंदोलन खत्म करवा लिया जाए लेकिन ऐसा हो नहीं सका। किसान नेताओं की काबलियत इस बात से भी जाहिर हो गई कि वो कानून अथवा सरकारी भाषा की लाग लपेट में नहीं आए। इतने लंबे चले किसान आंदोलन से सभी को ये भी पता चल गया कि ये आंदोलन किसी राजनीतिक पार्टी के बहकावे में नहीं किया गया है। किसान अपनी परेशानी और आशंकाओं के चलते ही सड़क पर हैं। अब, खुद प्रधानमंत्री मोदी भी आंदोलन के बढ़ते दायरे से चितिंत नजर आ रहे हैं और इससे ये माना जा सकता है कि मोदी के हस्तक्षेप के बाद ही गतिरोध खत्म हो सकेगा। जो तीन नए कृषि कानून हैं उनमें कृषक उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन व सरलीकरण) कानून-2020, कृषक (सशक्तीकरण व संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा पर करार कानून-2020 और आवश्यक वस्तु (संशोधन) कानून-2020 शामिल है।

पिछले करीब ढाई महीने से देश की राजधानी दिल्ली की सीमा पर पंजाब, हरियाणा और कुछ दूसरे राज्य के किसानों का प्रदर्शन जारी है. ये किसान अध्यादेश के जरिए बनाए गए तीनों नए कृषि कानून को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। किसानों के आव्हान पर आठ दिसंबर को भारत बंद आहूत किया गया था जिसे करीब दो दर्जन विपक्षी राजनीतिक पार्टियों और दिगर किसान संगठनों का भी समर्थन मिला था। किसान आंदोलन के दौरान केंद्र सरकार और किसान नेताओं के बीच एक दर्जन बार बैठक और बातचीत हुई लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला।

- आखिर प्रदर्शन क्यों

इन कानूनों के जरिए मौजूदा एपीएमसी (एग्रीकल्चर प्रोड्यूस मार्केट कमिटी) की मंडियों के साथ ही निजी कंपनियों को भी किसानों के साथ अनुबंधीय खेती, खाद्यान्नों की खरीद और भंडारन के अलावा बिक्री करने का हक होगा। आंदोलित किसानों को आशंका है कि सरकार किसानों से गेहूं और धान जैसी फसलों की खरीद को कम करते हुए बंद कर सकती है, ऐसा हुआ तो किसान पूरी तरह बाजार या निजी कंपनियों के भरोसे हो जाएगें। देखा जाए तो तीनों कानून में एपीएमसी मंडियों को बंद करने या एमएसपी सिस्टम खत्म करने की बात का जिक्र नहीं है लेकिन किसानों को आशंका है कि निजी कंपनियों के आने से आखिर में वो उन्हीं के भरोसे हो जाएंगे। किसानों को लगता है कि निजी कंपनियों के आने से सरकार अनाज की खरीदी कम कर देगी। इन्हीं आशंकाओं के चलते पहले पंजाब के किसानों से विरोध शुरू किया और फिर हरियाणा के किसान इसमें शामिल हो गए। धीरे धीरे दूसरे राज्यों के किसान भी इस विरोध प्रदर्शन में शामिल हो गए और फिर विपक्षी राजनीतिक दलों ने भी इस विरोध प्रदर्शन का समर्थन कर दिया।

नए कानूनों के तहत किसान अपने कृषि उत्पादों की खरीद बिक्री एपीएमसी मंडी से अलग खुले बाजार में भी कर सकते हैं लेकिन किसानों का कहना है कि मंडियों से बाहर बाजार दर पर अपनी उपज बेचने का शुरू में तो फायदा हो सकता है लेकिन बाद में एमएसपी की तरह तय दर पर भुगतान मिलेगा इसकी कोई गारंटी नहीं होगी, हो सकता है बाद में न्यूनतम समर्थन मूल्य भी ना मिल पाए। नए कानून में अनुबंधित खेती को मंजूरी दी गई है, तात्पर्य ये है कि थोक विक्रेताओं, प्रोसेसिंग इंडस्ट्रीज और प्राइवेट कंपनी से किसान सीधे एग्रीमेंट कर अनाज का उत्पादन कर सकते हैं। किसान अपनी उपज का दाम खुद तय कर सकते हैं। लेकिन किसानों का कहना है कि निजी कंपनियां उपज की गुणवत्ता के आधार पर मोलभाव कर सकती हैं या फिर खरीदी रोक सकती हैं। नए कानूनों के जरिए आवश्यक वस्तुओं की सूची से दलहन, तिलहन, प्याज और आलू को हटा दिया गया है। सरकार का कहना है कि इससे इन उत्पादों के भंडारण पर कोई रोक नहीं होगी, इससे निजी निवेश आएगा और कीमतें स्थिर रहेंगी। इस मामले में किसानों का तर्क है कि निजी कपंनियां इन उपज का व्यापक रूप से भंडारण करने लगेंगी और कीमतें बढाने के लिए इन उपज की कृत्रिम कमी पैदा की जाएगी।

- तीनों कानून वापस लेने पर अडे.हैं किसान

किसान तीनों कानूनों को पूरी तरह वापस लेने की मांग पर अडे.हुए हैं। सरकार का कहना है कि बातचीत के जरिए इन कानूनों में संशोधन किया जा सकता है लेकिन किसान चाहते हैं कि सरकार इन तीनों कानूनों को निरस्त करे। किसान संगठन कृषि उत्पादों की एमएसपी से कम मूल्य पर खरीद को दंडनीय अपराध के दायरे में लाने और धान-गेहूं की फसल की सरकारी खरीद को सुनिश्चित करने की मांग कर रहे हैं। दूसरी ओर केन्द्र सरकार ने गतिरोध खत्म करने के लिए किसान नेताओं, संगठन के प्रतिनिधियां से कई दौर की बात की है और एमएसपी जारी रखने, एपीएमसी की व्यवस्था के लिए तैयार है। सरकार इस बात के लिए भी तैयार है कि किसान और निजी कंपनियों में किसी विवाद का फैसला सब डिविजनल मजिस्ट्रेट के जरिए ही नहीं होगा, बल्कि किसानों के सामने अदालत जाने का विकल्प भी होगा।

- ये भी जानें

विभिन्न राज्यों में स्थानीय नियमों के तहत सरकारी एजेंसी अथवा आधिकारिक आढ़तियों के जरिए किसानों से उपज की खरीद बिक्री के लिए एग्रीकल्चर प्रोड्यूस मार्केट कमेटी यानि एपीएमसी का गठन किया गया है। महाराष्ट्र में इस तरह की करीब तीन सौ कमेटियां मौजूद हैं। बिहार में तो सन 2006 में ऐसी कमेटियों को भंग कर दिया गया था। सरकार का तर्क है कि अगर एपीएमसी के साथ ही निजी कंपनियां उपज खरीदी बिक्री करती हैं तो किसानों को साथ ही उपभोक्ताओं को भी फायदा होगा। जबकि किसानों का कहना है कि पहले तो निजी कंपनियां किसानों को अच्छी कीमतें देंगी जिससे एपीएमएसी मंडियां बंद हो जाएंगी और इसके बाद कंपनियां अपनी मनमानी करेंगी। एपीएमसी मंडियां बंद हो जाएंगी तो न्यूनतम समर्थन मूल्य भी खत्म हो जाएगा।

- एमएसपी की जरूरत क्यों

दरअसल, किसानों को उनकी उपज का न्यनूतम मूल्य मिल सकें इसके लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की व्यवस्था लागू की गई थी। यदि बाजार में कीमतें गिरने लगती हैं तो भी सरकार उपज एमएसपी पर खरीदती है। इससे किसानों को घाटा नहीं होगा। यहां ये बताना लाजमी होगा कि कृषि मंत्रालय कृषि लागत एवं मूल्य आयोग के आंकड़ों के हिसाब से एमएसपी निर्धारित करता है। वर्तमान में करीब दो दर्जन फसलों की खरीद एमएसपी के हिसाब से होती है। वैसे, किसानों का कहना है कि गेहूं और धान का भंडारण बड़े पैमाने पर किया जाता है और इसलिए सरकार इन दोनों उपज को एमएसपी पर खरीदती है बाकी फसलों को तो किसान एमएसपी पर बेच ही नहीं पाते। यही वजह है कि किसान चाहते हैं कि एमएसपी की गारंटी हो अन्यथा निजी कंपनियां किसानों को कीमतें कम करने के लिए मजबूर सकती हैं। हालांकि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कई बार कह चुके हैं कि एमएसपी को समाप्त नहीं किया जाएगा और सरकारी खरीद भी जारी रहेगी. लेकिन सरकार यह भरोसा लिखित में देने को तैयार नहीं है।

- ये है माजरा

नए कानूनों को लेकर पंजाब और हरियाणा के किसान बड़ी तादाद में प्रदर्शन कर रहे हैं, ऐसे में ये सवाल उठना भी लाजमी है कि दिगर राज्यों के किसान इतने आंदोलित क्यों नहीं है। असल में, पंजाब, हरियाणा और उत्तरप्रदेश में कुल उपज का 90 फीसदी हिस्सा एपीएसी की मंडियों में बेचा जाता है। करीब छ दशक पहले देश में अनाज संकट के दौरान पंजाब, हरियाणा और यूपी के किसानों को अनुदान की दरों पर बीज, खाद, खेती के उपकरणों पर कर्ज आदि दिया गया था। इसके बाद इन राज्यों से गेहूं और धान की खरीदी भी सरकार ने की थी। जब केन्द्र सरकार ने अध्यादेश के जरिए इन विधेयकों को कानून बनाया तो इसका विरोध पंजाब और फिर हरियाणा से शुरू हो गया। जब किसानों की मांग पर सुनवाई नहीं हुई तो यहां के किसान दिल्ली की सीमा पर पहुंच गए। धीरे धीरे प्रदर्शन व्यापक हो गया और दिगर राज्यों के किसान भी इस विरोध प्रदर्शन में शामिल हो गए। असम, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, असम, छत्तीसगढ़, ओडिशा आदि में भी किसानों ने रैली निकालकर नए कानूनों के विरोध में अपना आक्रोश जाहिर किया। तीन दर्जन से ज्यादा किसान संगठन और इससे जुड़े हजारों किसान दिल्ली में प्रदर्शन कर रहे हैं। अपनी मांगों को लेकर किसानों ने भारत बंद भी आहूत किया। इस बंद को दो दर्जन से ज्यादा राजनीतिक दलों ने समर्थन दिया था। इतना ही नहीं गणतंत्र दिवस पर भी किसानों ने देश की राजधानी दिल्ली में टेज्क्टर परेड निकालकर प्रदर्शन किया।

...हरिद्वार महाकुंभ को भविष्य में हुए हादसों की पुनरावृत्ति से बचाने की आवश्यकता

कई महाकुंभ ऐसे भी हुए है जो भीड़ के कारण हुए हादसों,महामारी और लीक से हटकर हुई घटनाओं के कारण हमेशा याद किये जाते है।सन 2020 देश और दुनिया ने लॉक डाउन के साथ बिताया।लेकिन लॉक डाउन का इतिहास भी महाकुंभ के साथ जुड़ा है। देवभूमि हरिद्वार में सन 1879 में हुए महाकुंभ के समय भारी गन्दगी फैलने के कारण हरिद्वार महाकुंभ हैजे की चपेट में आ गया था।हैजा फैलने पर गढ़वाल के सहायक आयुक्त को महाकुंभ में लॉक डाउन लगाने का आदेश देना पड़ा था।हैजा फैलने पर उस समय हरिद्वार महाकुंभ में यात्री अपने बीमार सहयात्रियों और मर चुके सहयात्रियों को छोड़ कर डर के मारे भागने लगे थे। जब इस बदतर हालत की गढ़वाल के सहायक आयुक्त को जानकारी मिली तो उन्होंने अपने कर्मचारियों को सड़कों पर पड़े शवों का अंतिम संस्कार करने के आदेश दिए। साथ ही गढ़वाल सहायक आयुक्त ने कुंभ में आये हुए यात्रियों को जहां है , वही रुकने का आदेश भी दिया।ताकि हालात पर नियंत्रण किया जा सके। उस समय प्रशासन ने महाकुंभ से लगे गांव में दवाइयां और चिकित्सक भी लोगो के उपचार के लिए भेजे थे। उस समय के लॉकडाउन में भी एक गांव से दूसरे गांव जाने पर कड़ा प्रतिबंध लगाया गया था।जो कई दिनों तक प्रभावी रहा।उत्तराखंड मामलों के जानकार डॉ अतुल शर्मा को आशंका नजर आ रही है कि इस कोरोना महामारी संकट के चलते इस साल का महाकुंभ भी प्रभावित हो सकता है, साथ ही कोरोना का साया हरिद्वार महाकुंभ पर पड़ने का भी भय बना हुआ है।जिसके लिए सावधानी बरतने की आवश्यकता है। महाकुंभ के आयोजन की अनुमति तो मिल गई।लेकिन सावधानी के साथ ही महाकुंभ की समय सीमा भी घटा दी गई।जो महाकुंभ जनवरी में आरंभ होने वाला था वह अब मार्च में होगा। महाकुंभ की घटनाओं के अतीत में झांके तो पता चलता है कि हरिद्वार कुंभ के दौरान जब जब भी हैजा फैला उसका विस्तार देश के अन्य हिस्सों में भी हुआ और साथ ही गढ़वाल मंडल के लिये संक्रामक बीमारियां आमजन के लिए महा मारक सिद्ध हुई।

इतिहास के पन्नो को पलट तो पता चलता है कि गढ़वाल मण्डल क्षेत्र में सन-1857, सन1867 एवं सन1879 में हैजा महामारी बनकर आया था,जिसने सैकड़ो लोगो को असमय मौत दे दी थी। लेकिन अधिकांश रूप में हरिद्वार महा कुंभ के बाद महा कुंभ क्षेत्र में हुई भारी गन्दगी ही हैजा फैलने का कारण बनी थीं। सन-1857 एवं सन 1879 का हैजा धार्मिक नगरी हरिद्वार से लेकर उत्तर भारत के आखिरी गांव माणा तक फैल गया था। जिसके मूल में हरिद्वार महाकुंभ के बाद शुरू हुई चार धाम यात्रा में संक्रमित तीर्थयात्रियों के शामिल होने से हैजा नामक महामारी फैल गई थी। सन-1897 में हैजा की रोकथाम के लिए महामारी रोकथाम अधिनियम अस्तित्व में लाया गया था।इसके आने के बाद सन 1882 में फिर से फैले हैजे के दौरान तत्कालीन गढ़वाल मंडल आयुक्त ने सन 1879 की तर्ज पर पुनः इलाके में लॉकडाउन लागू करते हुए एक संक्रमण वाले जिले के लोगों के दूसरे जिले में जाने पर प्रतिबंध लगा दिया था।

इस बात का उल्लेख हिमालयन गजेटियर के अंक 3 में भी मिलता है। जिसमे ई.टी. एटकिन्सन ने उल्लेख किया है कि हैजे के दौरान गढ़वाल के चारधाम यात्रा मार्ग पर अगर कोई हैजा पीड़ित मर जाता था तो उसके सहयात्री उसके शव को वहीं सड़क पर छोड़कर आगे बढ़ जाते थे और सहयात्री की मौत को नियति का आदेश मान लेते थे। इसी प्रकार संक्रमित यात्रियों के सामान को ढोने वाले देवभूमि के पोर्टर यानि माल वाहक जब अपने गांव में जाते थे तो वे वहां भी संक्रमण फैला देते थे। जिस कारण पूरा का पूरा गांव ही संक्रमित हो जाता था।जिससे बड़ी संख्या में गांव के लोग भी मर जाते थे।क्योंकि उस समय स्वच्छता की तरफ गांव के लोगो का ध्यान नहीं होता था। किसी भी गांव में हैजा फैलने पर गांव के लोग बीमार को बिना इलाज के ही मरने के लिए जंगल अकेला छोड़कर भाग जाते थे।उस समय जो लोगगांव में मर जाते थे उनके शवों को जलाया तक नहीं जाता था। शवो के सड़ने के कारण उसके विषाणु वातावरण में फैल जाते थे।जिससे हवा दूषित हो जाती थी और पेयजल भी प्रदूषित हो जाता था।जो आबादी में रह रहे लोगो के लिए जानलेवा साबित हो जाता था। उस समय महाकुंभ के साथ साथ चारधाम यात्रियों के द्वारा कई कई दिनों का पकाया हुआ बासी खाना खाने और प्रदूषित जल पीने के कारण भी हैजा जैसी महामारियां फैल जातीं थीं। सरकार केगजेटियर के मुताबिक हैजे की महामारी से गढ़वाल मंडल में वर्ष 1903 में 4017 लोगो की मौत हो गई थी।

डॉ श्रीगोपाल नारसन

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक संजय कुमार उपाध्याय द्वारा हैल्थ ऑफ भारत व दैनिक अमन प्रेस आर. जेड.-138, रविनगर एक्सटेंसन, नियर पार्क हॉस्पिटल, न्यू दिल्ली-110018 से मुद्रित एवं एस-503ए स्कूल ब्लॉक, शक्करपुर दिल्ली-110092 से प्रकाशित। सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली न्यायालय में ही किया जाऐगा। संपादकः संजय कुमार उपाध्याय। आर.एन.आई नं. DELHIN/2019/78266

कोरोना के म्यूटेशन का पैटर्न को वैज्ञानिकों ने समझा

लंदन। वैज्ञानिकों ने कोरोनावायरस के म्यूटेशन का पैटर्न समझ लिया है। इससे वैज्ञानिकों को ये समझ में आ गया है कि कोरोना वायरस कैसे प्रतिरोधक क्षमता से विकसित एंटीबॉडीज से बच रहा है। इस स्टडी से भविष्य में यह पता चलेगा कि कोरोना वायरस कैसे वर्तमान सभी वैक्सीन और इलाज पद्धतियों से बच रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग के वैज्ञानिकों ने यह पता लगा लिया है कि कोरोनावायरस अपने जेनेटिक सिक्वेंस के उस हिस्से को डिलीट कर दे रहा है यानी खत्म कर दे रहा है जिससे उसकी बाहरी परत यानी स्पाइक प्रोटीन का शेप बदल जाता है। कोरोनावायरस की बाहरी कंटीली परत को स्पाइक प्रोटीन कहते हैं। ये शरीर की कोशिकाओं से जाकर चिपकता है। इसके काटे कोशिकाओं की बाहरी परत को भेदकर वायरस के अंदर मौजूद जीनोम को कोशिकाओं के अंदर छोड़ देते हैं। इसके बाद वायरस शरीर में मौजूद एंटीबॉडी से संघर्ष करता है या फिर खुद को विकसित करके और वायरस पैदा करता है। इस स्टडी में साइंटिस्ट्स ने स्पाइक प्रोटीन के 1.50 लाख जीन सिक्वेंस जमा

किए। ये सिक्वेंस पूरी दुनिया से इकट्ठा किए गए थे। जब इनकी स्टडी की गई तो पता चला कि कई वैरिएंट डिलिशन म्यूटेशन कर रहे हैं। यानी अपने जेनेटिक सिक्वेंस के उस हिस्से को डिलिट कर रहे हैं, जिससे बाहरी परत तैयार होती है। स्टडी करने के बाद पता चला कि वायरस जिस तरीके से वैक्सीन और एंटीबॉडीज से खुद को बचाते हैं या फिर धोखा देते हैं वो बेहद सेलेक्टिव प्रोसेस है। दुनिया भर के सिक्वेंस की स्टडी करने के बाद साइंटिस्ट को पता चला कि करीब 9 वैरिएंट ऐसे हैं दुनिया में जो कोरोना मरीजों के लिए आज भी चिंता का विषय है। स्टडी में एक बड़ी बात सामने ये आई है कि कोरोनावायरस के नए म्यूटेशन वाले रूप बेहद खतरनाक हैं। ये किसी भी वैक्सीन और एंटीबॉडी के न्यूट्रीलाइजिंग कैपेसिटी यानी हमला करने की ताकत से खुद को बचा लेती हैं। अगर किसी मरीज की प्रतिरोधक क्षमता कम है तो और वह 74 दिनों से संक्रमित है तो उसकी मौत हो सकती है। यानी वायरस से बचने का कोई तरीका नहीं। कोरोनावायरस और इंसानी शरीर की इम्युनिटी के बीच चूहे-बिल्ली का खेल हो रहा है। इसे साइंटिस्ट समझने की कोशिश कर रहे थे। अब जाकर ये बात समझ में आई है कि कोरोनावायरस कैसे खुद को लगातार बदल रहा है। वह कैसे खुद को म्यूटेट कर रहा है। इनमें से कुछ बदलाव बेहद चिंताजनक और भयावह हैं। इस स्टडी को करने वाले यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग के रिसर्चर केविन मैक्कार्थी कहते हैं कि इस समय यूके और साउथ अफ्रीका का वैरिएंट बेहद चिंताजनक है। ये भयावह है। यह इवोल्यूशन है लेकिन बेहद तेजी से हो रहा है। अगर ये ऐसे ही बदलता रहा तो पूरी दुनिया को वैज्ञानिकों और डॉक्टरों की कौम को पूरे समय नई-नई वैक्सीन और इलाज का तरीका निकालना पड़ेगा।

चीन भी नेपाल को देगा कोरोना वैक्सीन की 5 लाख खुराकें

बीजिंग। चीन ने नेपाल को अनुदान के रूप में दी जाने वाली कोविड-19 वैक्सीन की पहली खेप भेज दी है। चीनी अधिकारियों ने बताया कि नेपाल को अनुदान के रूप में कोरोना वैक्सीन की 5 लाख खुराकें भेजी जाएंगी। नेपाल के विदेश मंत्रालय ने बताया कि चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने अपने नेपाली समकक्ष प्रदीप ग्यावली के साथ शुक्रवार शाम को फोन पर बात की और उन्हें आश्वासन दिया कि टीका सहयोग में चीन नेपाल को प्राथमिकता देगा। इसमें बताया गया कि वांग ने घोषणा की कि चीन अनुदान के आधार पर नेपाल को कोविड-19 टीकों की 500000 खुराकें देगा। चीन के मुताबिक ग्यावली के साथ बातचीत में वांग ने कहा कि नेपाल को कोविड-19 टीकों की तत्काल आवश्यकता है जिसे चीन महत्वपूर्ण मानता है और उसने सहायता के रूप में टीकों की पहली खेप उसे देने का फैसला लिया है। काठमांडू में चीन के दूतावास की ओर से हाल में कहा गया था कि चीन नेपाल को टीकों की 300000 खुराकें देगा जिससे नेपाल के 150000 लोग लाभान्वित हो सकते हैं। दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के बीच हुई बातचीत में चीन ने नेपाल को 500,000 खुराकें देने का फैसला किया है। चीन के इस फैसले को बीजिंग की टीका कूटनीति के प्रयासों के रूप में देखा जा रहा है। गौरतलब है कि 22 जनवरी को भारत ने नेपाल को कोविड-19 की दस लाख खुराकें भेंट की थीं।

संक्षिप्त समाचार

संयुक्त राष्ट्र के अगले महासचिव के चयन की प्रक्रिया शुरू, विश्व निकाय के 193 सदस्य देश लेंगे निर्णय

जेनेवा। संयुक्त राष्ट्र के अगले महासचिव के चयन की प्रक्रिया शुक्रवार को शुरू हो गई है। इस विश्व निकाय के 193 सदस्य देशों को इसके मुख्य राजनयिक एवं संचालन अधिकारी के पद के लिए उम्मीदवारों के नाम सौंपने को कहा गया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष वोल्कान बोजकिर और संयुक्त राष्ट्र में ब्रिटेन की राजदूत एवं सुरक्षा परिषद की इस महीने की अध्यक्ष बारबरा वुडवर्ड के एक संयुक्त पत्र पर डिजिटल हस्ताक्षर करने के बाद प्रक्रिया की आधिकारिक शुरुआत हुई। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुतारेस का मौजूदा कार्यकाल 31 दिसम्बर को समाप्त होगा। गुतारेस ने पिछले माह घोषणा की थी कि वह पांच साल के दूसरे कार्यकाल के लिए अपनी उम्मीदवारी पेश करेंगे। संयुक्त राष्ट्र में होंडुरास की राजदूत मैरी एलिजाबेथ फ्लोरेस फ्लेक ने भी विश्व निकाय के सभी सदस्य देशों को एक पत्र भेजा है और कहा है कि अभी भी कोई महिला महासचिव नहीं बनी है। उन्होंने सदस्यों देशों से महिला उम्मीदवारों के नाम भेजने करने का आग्रह किया है। महासभा 15 सदस्यीय सुरक्षा परिषद की सिफारिश पर महासचिव का चयन करती है। परिषद में पांच स्थाई सदस्य अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटेन और फ्रांस हैं और उनके पास वीटो का अधिकार है, इसलिए उनका समर्थन महत्वपूर्ण है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन पहले ही दूसरे कार्यकाल के लिए गुतारेस का समर्थन कर चुके हैं। वुडवर्ड और बोजकिर ने कहा कि उम्मीदवारों के साथ अनौपचारिक संवाद मई या जून तक सुरक्षा परिषद के चयन प्रक्रिया शुरू करने से पहले होगा। इस संबंध में वुडवर्ड ने ट्वीट किया कि सुरक्षा परिषद और महासभा अध्यक्षों ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव के चयन और नियुक्ति की प्रक्रिया की शुरुआत की है।

शिकागो के पुलिसकर्मी पर लगा हत्या की कोशिश और झूठ बोलने का आरोप

शिकागो। शिकागो के एक पुलिस अधिकारी पर हत्या की कोशिश करने समेत अन्य आरोप लगाए गए हैं। अदालत के रिकॉर्ड के अनुसार, जोसफ कैबरेरा (38) पर शराब के नशे में 22 वर्षीय व्यक्ति पर गोली चलाने और फिर यह झूठ बोलने का आरोप लगाया गया है कि उक्त व्यक्ति ने उसपर हमला किया था और उसे जमीन पर गिरा दिया था, जिसके बाद उसने गोली चला दी। अभियोजकों ने कहा कि कैबरेरा के झूठे बयान के कारण व्यक्ति के साथ अपराधी की तरह व्यवहार किया और उसे हिरासत में लिया। इस व्यक्ति को बाद में बिना कोई आरोप लगाए छोड़ दिया गया था। अभियोजकों ने कहा कि पीड़ित और उसकी 21 वर्षीय प्रेमिका एक कार में बैठे थे, तभी कैबरेरा पीछे से उनके पास पहुंचा और उसने उनसे सवाल किया कि क्या उन्हें एम्बुलेंस की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि पीड़ित एवं उसकी प्रेमिका को यह बात अजीब लगी, लेकिन उन्होंने कहा कि वे ठीक हैं। इसके बाद में कैबरेरा उनकी पीछे वाली कार में बैठा रहा, जिसके कारण दोनों को असहज महसूस हुआ और वे वहां से चले गए। बाद में जब वे फिर से उसी जगह लौटे, तो कैबरेरा भी वहां पहुंच गया और वह उनपर चिल्लाया तथा उनसे वहां से जाने को कहा। अभियोजकों के अनुसार पीड़ित कैबरेरा का सामना करने के लिए अपनी कार से बाहर निकला। कैबरेरा ने पीड़ित के सिर पर मुक्का मारा और इसके बाद अपनी पिस्तौल निकालकर गोली चलाई। उन्होंने कहा कि हालांकि पीड़ित को गोली नहीं लगी। इसके बाद कैबरेरा ने 911 पर फोन कर कहा कि पीड़ित ने उसपर हमला किया, जिसके बाद उसने गोली चला दी, लेकिन एक प्रत्यक्षदर्शी ने इस बात को झूठा बताया। शिकागो पुलिस विभाग में पिछले आठ साल से कार्यरत कैबरेरा को सीने में दर्द की शिकायत के बाद अस्पताल ले जाया गया, जहां पता चला कि कैबरेरा ने वाहन चलाते समय शराब पी रखी थी।

दिलीप कुमार के पुश्तैनी घर के मालिक ने ठुकराया सरकारी कीमत पर संपत्ति बेचने का प्रस्ताव

पेशावर। अपने समय के महानतम बालीवुड अभिनेता दिलीप कुमार के पाकिस्तान स्थित पुश्तैनी घर के मालिक ने अपनी संपत्ति को सरकारी कीमत पर बेचने से इनकार कर दिया है। दिलीप कुमार का यह घर पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में स्थित है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के गृह राज्य खैबर पख्तूनख्वा की सरकार ने दिलीप कुमार के पेशावर में चार मर्ला यानी 101 वर्गमीटर में फैले इस मकान की कीमत 80.56 लाख रुपए लगाई थी। इस संपत्ति के मालिक का कहना है कि वह इसके लिए के लिए 25 करोड़ रुपए की मांग रखेगा, क्योंकि प्रशासन ने इसके बहुत कम दाम लगाए हैं। मकान के मालिक हाजी लाल मुहम्मद ने कहा है कि जब उससे पेशावर प्रशासन संपर्क करेगा तब वह इस संपत्ति के लिए 25 करोड़ रुपए मांगेगा। मुहम्मद ने कहा कि उसने 2005 में सारी औपचारिकताएं पूरी कर 51 लाख रुपए में यह संपत्ति खरीदी थी और उसके पास मकान के सारे कागजात हैं। उसने कहा कि 16 साल बाद इस संपत्ति की कीमत मात्र 80.56 लाख रुपए तय करना सरकार के लिए उचित नहीं है। मुहम्मद ने कहा कि मोहल्ला खुदादाद किस्सा ख्वानी बाजार स्थित संपत्ति बहुत महंगी है और यहां प्रति मर्ला पांच करोड़ रुपए की दर है, ऐसे में वह अपने वकील के मार्फत प्रशासन से 25 करोड़ रुपए मांगेगा। उसने कहा कि चार मर्ला संपत्ति महज 80 लाख रुपए में कैसे बेची जा सकती है? इससे पहले पेशावर में ही बॉलीवुड अभिनेता राज कपूर के पैतृक मकान के मालिक ने छह मर्ला यानी 151.75 वर्गमीटर में फैली संपत्ति 'कपूर हवेली' के लिए 200 करोड़ रुपए मांगे थे, जबकि सरकार ने इसकी कीमत 1.50 करोड़ रुपए तय की थी। यह मकान भी किस्सा ख्वानी बाजार में ही है जिसे अभिनेता के दादा दीवान बशेश्वरनाथ कपूर ने 1918–22 के बीच बनवाया था। पिछले महीने खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री के विशेष सूचना सहायक कामरान बंगश ने कहा था कि उन्हें उम्मीद है कि प्रांत सरकार दोनों ही मकानों को पुरातात्विक संग्रहालयों में तब्दील करने के लिए उनके मालिकों के साथ सौहार्दपूर्ण हल पर पहुंच जाएगी।

स्पर्म भी देते हैं अपने प्रतियोगी को जहर

जन्म से पहले ही शुरू हो जाती है प्रतियोगिता

लंदन। किसी भी जन्म की शुरूआत ही एक भयानक प्रतियोगिता से होती है। जीव से पैदा हुए शुक्राणु अपने प्रतियोगियों को जहर देकर खत्म कर देते हैं। बर्लिन के शोधकर्ताओं ने बताया है कि जब प्रजनन प्रक्रिया के समय किसी नर से वीर्य छूटते हैं, तब लाखों की संख्या में शुक्राणु अंडा कोशिका की ओर बढ़ते हैं। सब बेहद तेजी में। सब चाहते हैं कि वो अंडा कोशिका से मिलकर एक नए जीव को उत्पत्ति करें। लेकिन सफलता किसी एक को ही मिलती है। शुक्राणुओं के अंडा कोशिका तक पहुंचने की काबिलियत उनके पास मौजूद प्रोटीन आरएसी1 की मात्रा पर निर्भर करती है। अगर आरएसी1 प्रोटीन की मात्रा उपयुक्त है तो हर एक शुक्राणु की ताकत और गति अच्छी होगी। अगर यह प्रोटीन नहीं है तो इसकी वजह से नपुंसकता पैदा होती है। जब शुक्राणु एग सेल

यानी अंडा कोशिका की ओर तैरना शुरू करते हैं तो सिर्फ किस्मत ही साथ नहीं देती। उस समय हर शुक्राणु की प्रतियोगी क्षमता भी मायने रखती है। चूहों पर किए गए इस अध्ययन के मुताबिक कुछ शुक्राणु बेहद स्वार्थी या सेल्फिश होते हैं। इसमें उनकी मदद करता है एक खास तरह का डीएनए सेगमेंट। यह सेगमेंट जेनेटिक इनहेरिटेंस यानी अनुवांशिक उत्तराधिकार के नियमों को तोड़ता है। इसी से शुक्राणुओं की सफलता का दर तय होता है। बर्लिन स्थित मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट फॉर मॉलिक्यूलर जेनेटिक्स में हुए इस अध्ययन में बताया गया है कि कैसे जेनेटिक फैक्टर जिसे 'टी-हैप्लोटाइप' कहते हैं वह फर्टिलाइजेशन की सफलता को तय करता है। पहली बार रिसर्चर्स ने ये बात पता कि है कि जिस स्पर्म के पास 'टी-हैप्लोटाइप' जेनेटिक फैक्टर होता है, वह ज्यादा ताकतवर होता है। 'टी-हैप्लोटाइप' जेनेटिक फैक्टर वाले शुक्राणु अपने प्रतियोगियों से ज्यादा तेज और फर्टिलाइजेशन में ज्यादा आक्रामक होते हैं। ये अपने लक्ष्य तक एकदम सीधे जाते हैं। इन्हें किसी से कोई मतलब नहीं होता। 'टी-हैप्लोटाइप' जेनेटिक फैक्टर और आरएसी1 प्रोटीन वाले स्पर्म के अंदर से केमिकल सिग्नल निकलते हैं जो अंडा कोशिका तक जाने का उन्हें सीधा और सुरक्षित रास्ता बताते हैं। मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट फॉर मॉलिक्यूलर जेनेटिक्स के निदेशक बर्नहार्ड हर्मेन बताते हैं कि 'टी-हैप्लोटाइप' जेनेटिक फैक्टर वाले शुक्राणु उन प्रतियोगियों को निष्क्रिय कर देते हैं जिनके पास ये जेनेटिक फैक्टर नहीं होता। यानी उन्हें जहर देकर मार देते हैं। बर्नहार्ड ने बताया कि 'टी-हैप्लोटाइप' स्पर्म अन्य शुक्राणुओं को जहर देकर मार देते हैं। साथ ही उसी समय एक ऐसा एंटीडोट निकालते हैं जिससे वह खुद सुरक्षित रह सकें।

डब्ल्यूएचओ की टीम चीन के वुहान शहर की करेगी पूरी तरह से छानबीन

वुहान। चीन के वुहान में कोरोना वायरस की उत्पत्ति की जांच कर रही विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की टीम के एक सदस्य ने बताया कि चीन ने उन्हें हर स्थान पर जाने और हर उस कर्मी से मिलने की अनुमति दे दी, जिसका उन्होंने आग्रह किया था। पीटर डेसजक ने बताया कि टीम के सदस्यों ने अपनी जांच में शामिल करने के लिए स्थानों और लोगों की एक सूची दी थी जिसपर कोई आपत्ति नहीं जताई गई है। ब्रिटेन में जन्मे प्राणी विज्ञानी डेसजक ने कहा, हमसे पूछा गया था कि हम कहां जाना चाहते हैं। हमने अपनी एक सूची दी थी जिसे स्वीकार कर लिया गया। वह अमेरिका के न्यूयॉर्क सिटी के एनजीओ इको हेल्थ अलायंस के अध्यक्ष भी हैं। उन्होंने बताया कि टीम ने स्थलों का दौरा पूरा कर लिया है और अगले कुछ दिन डेटा को खंगालेंगे और चीन के विशेषज्ञों से सलाह मशविरा करेंगे और अपनी रवानगी से पहले एक समाचार ब्रीफिंग में अपनी पड़ताल का सारांश पेश करेंगे। डेसजक ने कहा, मैं यह नहीं बता सकता हूं कि हमें क्या मिला है क्योंकि हम उस समय पर हैं, जहां टीमें अलग-अलग रास्ते, विभिन्न मुद्दों को देखते हुए एक साथ आ रही हैं।

री-एजुकेशन कैंप में उइगर महिलाओं के साथ होता है रेप

शिविर से भागी महिला बंदी ने बताई चीन की हैवानियत

बीजिंग। चीन उइगरों पर जुल्म करता है। अजान पर पहरा, टोपी-बुर्के पर पाबंदी जैसी बातें तो पहले भी सामने आती रहती हैं। ये तो दुनिया जानती है कि 2014 से ही चीन ने उइगरों के लिए ट्रेनिंग कैंप के नाम पर कंसंट्रेशन कैंप बनाए, जहां उइगर पुरुषों-महिलाओं को रखा जाता है। इन ट्रेनिंग कैंपों से खबर बाहर नहीं आती। इस बार इस कैंप से एक महिला ने बाहर आकर जो कहा उसे सुनकर हैवानियत भी शर्मशार हो जाएगी। चीन की क्रूरता और हैवानियत का खुलासा बीबीसी ने अपनी रिपोर्ट में किया है। कंसंट्रेशन कैंप में रह रही महिला ने अपनी आपबीती सुनाते हुए कहा है कि चीन की कम्युनिस्ट सरकार की तरफ से चलाए जा रहे री एजुकेशन कैंप में महिलाओं के साथ पूरी योजना के

साथ रेप किया जा रहा है। उन्हें यौन प्रताड़ना का शिकार बनाया जा रहा है और यातनाएं दी जा रही हैं। महिला ने कहा कि आधी रात के बाद किसी भी वक्त वे सेल में आ जाते और कुछ औरतों को उठा कर ले जाते थे। वहां कोई सर्विलांस कैमरा नहीं होता था। फिर उनके साथ मास्क पहना कोई आदमी बलात्कार करता था। महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार भी होता था।

म्यांमार में बढ़ते विरोध प्रदर्शनों से डरी सैन्य सरकार ने स्थगित की इंटरनेट सेवा

यंगून। म्यांमार में आंग सान सू की की निर्वाचित सरकार का तख्तापलट करने के बाद सैन्य शासन के खिलाफ बढ़ रहे विरोध प्रदर्शन के मद्देनजर इंटरनेट सेवा को अगले आदेश तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। शुक्रवार-शनिवार की मध्य रात्रि मोबाइल इंटरनेट सेवा बाधित होनी शुरू हुई और शनिवार सुबह ब्रॉडबैंड सेवा भी बंद कर दी गई। इंटरनेट में बाधा एवं बंदी पर नजर रखने वाले लंदन आधारित सेवा प्रदाता 'नेटब्लॉक' ने बताया कि शनिवार दोपहर के बाद से म्यांमार में इंटरनेट सेवा करीब-करीब पूरी तरह से बाधित है और संपर्क केवल 16 प्रतिशत ही रह गया है। सैन्य सरकार ने बढ़ते विरोध के मद्देनजर शुक्रवार को संचार ऑपरेटरों तथा इंटरनेट सेवा प्रदाताओं को ट्विटर और इंस्टाग्राम

के इस्तेमाल पर भी रोक लगाने का आदेश दिया है। उसका कहना है कि इन मंचों से लोग फर्जी खबरें प्रसारित कर रहे हैं। सैन्य शासन पहले ही फेसबुक के इस्तेमाल पर रोक लगा चुका है, लेकिन यह पूरी तरह से प्रभावी नहीं है। माना जा रहा है कि इंटरनेट पर पांबदी की जल्दबाजी तख्तापलट के बढ़ते विरोध को रोकने के लिए है, क्योंकि शनिवार को सड़कों पर कुछ बड़े प्रदर्शन तख्तापलट के खिलाफ देखने को मिले। करीब एक हजार प्रदर्शनकारियों, जिनमें फैक्टरी कामगार एवं छात्र प्रमुख रूप से शामिल थे- ने शनिवार सुबह यंगून की मुख्य सड़क पर मार्च निकाला जहां उन्हें रोकने के लिए दंगा रोधी साजो-सामान के साथ करीब 100 पुलिस कर्मी तैनात किए गए थे। मार्च में शामिल लोग चिल्ला रहे थे कि सैन्य तानाशाही जानी चाहिए। मार्च के दौरान उन्होंने हवा में हाथ उठाकर तीन उंगलियों से सलामी दी जो पड़ोसी थाईलैंड में विरोध का प्रतीक बन चुका है। हालांकि, प्रदर्शन शांतिपूर्ण रहा। संचार बंद करने तक भीड़ तितर-बितर हो चुकी थी, लेकिन उसके दोबारा जुटने की जानकारी नहीं मिल सकी है। म्यांमार में काम कर रही नॉर्वे की दूरसंचार कंपनी टेलीनॉर ने कहा कि उसे शुक्रवार को इंस्टाग्राम एवं ट्विटर बंद करने के आदेश मिले थे। ट्विटर ने एक बयान में कहा गया है कि वह आदेश से बहुत चिंतित है। इसके प्रवक्ता ने कहा कि यह कदम जनसंवाद एवं आवाज उठाने के अधिकार को कमतर करता है। उल्लेखनीय है कि तख्तापलट के बाद से ही सोशल मीडिया समाचार का स्वतंत्र स्रोत बना हुआ है और इसके साथ ही यह प्रदर्शनकारियों के विरोध आयोजित करने का हथियार भी साबित हुआ है।

दस हजार यहूदियों की हत्या की आरोपी 95 वर्षीय नाजी महिला को किशोर अदालत सुनाएगी सजा

बर्लिन। जर्मनी में हिटलर की सहयोगी 95 साल की एक नाजी महिला को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 10000 लोगों की हत्या का दोषी ठहराया गया है। यह महिला उस समय नाजियों के एक यातना गृह में सचिव के रूप में काम करती थी। अभी इस महिला की सजा को लेकर कोई ऐलान नहीं हुआ। जर्मनी की गोपनीयता कानून के तहत इस महिला की वास्तविक पहचान को छिपाकर इर्मगार्ड के रूप में संबोधित किया गया है। अपराध के समय इस महिला की उम्र 21 साल के कम थी। इसलिए, जर्मनी के कानून के हिसाब से इस महिला को सजा के लिए किशोर अदालत में पेश किया जाएगा। जिसके बाद इसके वीभत्स जुर्म को लेकर सजा का ऐलान होगा। उल्लेखनीय है कि जर्मनी में 21 साल के कम उम्र के नागरिकों को अपराध के लिए किशोर अदालत सजा सुनाती है। यह महिला जून 1943 से अप्रैल 1945 के बीच पोलैंड के शहर ग्दान्स्क से 20 मील की दूरी पर स्थित स्टुथोफ कैंप के कमांडर की सचिव के रूप में काम करती थी। अभियोजकों ने कहा कि महिला ने स्वीकार किया था कि उसके कैंप में बहुत से पत्राचार और कई फाइलें ऐसी थीं जिसमें उसे कैदियों की कुछ हत्याओं के बारे में बहुत कुछ पता था। हालांकि, उसने इस जानकारी से इनकार किया था कि उस समय हजारों लोगों को गैस चैंबर में मारा गया था। पिछले साल, 93 वर्षीय एक व्यक्ति

को हैम्बर्ग के एक किशोर न्यायालय में 5,230 हत्याओं के लिए दोषी ठहराया गया था। वह भी स्टुथोफ कैंप में 17 साल की उम्र में गार्ड का काम करता था। माना जाता है कि 60,000 से अधिक लोग स्टुथोफ कैंप में नाजियों के हाथों मारे गए थे। यह जर्मनी की सीमा के बाहर स्थापित होने वाला पहला यातना शिविर था। 1939 में जर्मनी द्वारा विश्व युद्ध भड़काने के बाद हिटलर ने यहूदियों को जड़ से मिटाने के लिए अपने अंतिम हल (फाइनल सोल्यूशन) को अमल में लाना शुरू किया। इस दौरान जर्मनी और पोलैंड में कई यातना शिविरों का निर्माण किया गया। इसमें सबसे बड़ा था ऑश्विज के नाजी होलोकॉस्ट सेंटर। हिटलर की खुफिया एजेंसी एसएस यूरोप के अधिकतर देशों से यहूदियों को पकड़कर यहां लाती थी। जहां काम करने वाले लोगों को जिंदा रखा जाता था, जबकि जो बूढ़े या अपंग लोग होते थे उन्हें गैस चेंबर में डालकर मार दिया जाता था। इन लोगों के सभी पहचान के सभी दस्तावेजों को नष्ट कर हाथ में एक खास निशान बना दिया जाता था। नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी (एनएसडीएपी) को नाजी कहा जाता था। नाजी पार्टी जर्मनी में एक राजनीतिक पार्टी थी जो 1919 में प्रथम विश्व युद्ध के बाद स्थापित हुई थी। नाजी नेतृत्व का कहना था कि दुनिया से यहूदियों को मिटाना जर्मन लोगों और पूरी इंसानियत के लिए फायदेमंद होगा। हालांकि असल में यहूदियों की ओर से उन्हें कोई खतरा नहीं था। इसके लिए उन्होंने उम्र, लिंग, आस्था या काम की परवाह नहीं की।

एशिया का सबसे बड़ा एंटीना बनकर तैयार

बीजिंग। पड़ोसी देश चीन ने हाल ही में एशिया का सबसे विशाल एंटीना बनाया है जो काम करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। तियानवेन चीन का पहला मंगल अभियान है, लेकिन यह दुनिया का पहला ऐसा अभियान है जिसमें प्रोब, लैंडर और रोवर तीनों एक साथ भेजे गए हैं। इसे चीन ने पिछले साल जुलाई में प्रक्षेपित किया था। इनके लिए, जो चीन ने एंटीना तैयार किया है वह 72 मीटर लंबा एंटीना है और इसका वजन 2700 टन है। इस एंटीना का आकार 10 बास्केटबॉल के कोर्ट जितना बड़ा है। जानकारी के अनुसार इसे उपयोग के लिए हाल ही में नेशनल एस्ट्रोनॉमिकल ऑब्जर्वेटरी ऑफ द चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेस को प्रदान किया गया है। इस प्रोजेक्ट के डिप्टी चीफ डिजाइनर ली चुनलेई ने बताया कि मंगल से वापस आंकड़े भेजना एक तरह से पृथ्वी पर एक चमकती लेजर प्वाइंटर भेजने के जैसा है। यह दस फरवरी के आसपास मंगल की कक्षा में प्रवेश करेगा जो चीन के नए साल के ठीक एक दिन पहले का समय होगा। चीनी वैज्ञानिकों का कहना है कि यह एंटीना दिशा की सटीकता से पहचान करने में भी सक्षम है। इस समय तियानवेन-1 पृथ्वी से 40 करोड़ किलोमीटर दूर है और जल्द ही मंगल की गुरुत्व सीमा में प्रवेश करने वाला है।

फ्लाइट के नीचे लैंडिंग गियर से चिपका था लड़का, 19000 फीट पर उड़ने के बाद भी जिंदा बचा

लंदन। फ्लाइट के निचले हिस्से में लैंडिंग गियर से चिपककर 16 साल के लड़के के यात्रा करने की घटना सामने आई है। लंदन से उड़ान भरने के बाद जब फ्लाइट नीदरलैंड के होलैंड पहुंची तो एयरपोर्ट स्टाफ को लैंडिंग गियर के पास लड़के के मौजूद होने की जानकारी मिली। करीब 19 हजार फीट की ऊंचाई पर बेहद ठंड में रहने की वजह से लड़का हाईपोथर्मिया का शिकार हो गया था। इसकी वजह से उसे हॉस्पिटल में भर्ती कराना पड़ा जहां उसका इलाज किया जा रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, लड़के ने लैंडिंग गियर से चिपककर करीब 510 किमी की यात्रा पूरी की। होलैंड के मास्ट्रिच्ट एयरपोर्ट पर फ्लाइट लैंड करने के बाद उसे उतारा गया। बताया जा रहा है कि लड़का तुर्की एयरलाइंस की कार्गो फ्लाइट के लैंडिंग गियर से चिपका हुआ था। एक दिन पहले ही यह फ्लाइट केन्या से इस्तांबुल होते हुए, लंदन पहुंची थी। घटना सामने आने के बाद स्थानीय अधिकारियों ने कहा है कि वे इस बात की भी जांच करेंगे कि क्या यह मानव तस्करी का मामला तो नहीं है। मास्ट्रिच्ट एयरपोर्ट के एक प्रवक्ता ने बताया कि लड़का काफी भाग्यशाली था कि इस तरह यात्रा करने के बाद भी जीवित बच सका। इससे पहले भी कुछ मौकों पर लोगों के लैंडिंग गियर से चिपककर यात्रा करने की घटना सामने आई है, लेकिन ज्यादातर मौकों पर लोगों को जान गंवाना पड़ता है।

मानव अधिकार आयोग के चेयरमैन का विभिन्न समाजों ने रैणी ब्राह्मण समाज के नेतृत्व में किया सम्मान

» मदरलैंड, देशबंधु जोशी

रैणी प्रवास पर रहे मानवाधिकार आयोग के चेयरमैन गोपाल कृष्ण व्यास का विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों ने राजस्थान ब्राह्मण समाज के रैणी तहसील अध्यक्ष श्रीकांत सैदावत कानूनगो के नेतृत्व में साफा माला पहनाकर सम्मान किया।

अध्यक्ष गोपाल कृष्ण व्यास ने विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों को मानवाधिकार की जानकारी दी ओर आमजन के हित मे बनाए गए कानूनों को जानकारी दी। व बताया कि सुप्रीम कोर्ट के निदेर्शों से अब समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति को भी न्याय मिलेगा, वकील भी निशुल्क होगा, पैसों के अभाव में कोई भी व्यक्ति न्याय से वंचित ने हो,कानून की दृष्टि में सभी बराबर है। इसके लिए लीगल अथॉरटी बनाई गई है जिसका आने वाले समय में प्रत्येक जिला मुख्यालय पर अलग से कार्यालय होगा।

यदि कहीं गलत हो रहा हो , अधिकारो का हनन हो रहा हो तो जनहित याचिका लगाए। मुझे भी पत्र व्यवहार करे। आपकी हर समस्या का समाधान किया जाएगा।इस मौके पर एसएसबी कमांडेंट आर के व्यास, जगनमोहन शर्मा,देवीचरण शर्मा पी ई ओ,मनोहर शर्मा रीडर, सरपंच प्रतिनिधि शिवचरण सैदावत, पूर्व सरपंच हरिसिंह मीणा, एडवोकेट सत्येंद्र सैदावत रैणी, ओ पी जाट, आर के टाडा, महेश शर्मा, दीनदयाल फौजी, राकेश शर्मा, ताराचंद व्यास आदि मौजूद रहे।

रिपब्लिक टीवी के विकास शर्मा का अचानक निधन पत्रकारिता जगत के लिए अत्यंत दुखदः आचार्य दीदी

» मदरलैंड संवाददाता

जयपुर रिपब्लिक भारत जैसे राष्ट्रीय चेनल के जाने माने पत्रकार एवं दबंग एंकर विकास शर्मा के आकस्मिक निधन पर विप्र परशुराम शक्ति की प्रधान अध्यक्ष ज्योतिषाचार्य सरस्वती देवकृष्ण गौड़ ने अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि 36 वर्ष की इतनी कम्र उम्र में एंकर विकास शर्मा का अचानक यू संसार से विदा हो जाना पत्रकारिता जगत एवं हम सबके लिए अपूरणीय क्षति है। भारत के जाने माने चैनल रिपब्लिक भारत पर अपने सटीक आंकलन एवं अपनी रौबदार आवाज के साथ बहुत ही बेबाकी से खबरों की एंकरिंग करने वाले विकास शर्मा अपने व्यक्तिगत जीवन में भी अपनी बात स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के पक्षधर रहे है।विकास शर्मा के निधन से पत्रकारिता जगत ने एक बहुत ही योग्य व होनहार एंकर को खो दिया। आचार्य दीदी ने विप्र परशुराम शक्ति की पूरी टीम के माध्यम से एंकर विकास शर्मा के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने बताया कि बहुत ही कम उम्र में विकास शर्मा ने देश भर में एंकर एवं पत्रकारिता का जो परचम लहराया है वो कभी भी नहीं भुलाया जा सकेगा।पत्रकारिता जगत में विकास शर्मा की रौबदार गूंजती आवाज एवं उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

संक्षिप्त समाचार

कब्बडी स्टार प्रदीप नरवाल ने किया आरकेबी का पोस्टर किया लांच

मदरलैंड संवाददाता, बहरोड़। वन्दे मातरम्स्पोर्ट्स बैनर तले होने वाले कब्बडी टुनार्मेंट राजस्थान कबड्डी बैश के पोस्टर का अनावरण नरवाल कबड्डी एकेडमी में कबड्डी स्टार प्रदीप नरवाल एवं नरवाल कबड्डी एकेडमी के हैड कौच नरेश नरवाल के द्वारा किया गया।राजस्थान कबड्डी बैश के बारे में जानकारी देते हुए लीग के प्रवक्ता ऋषभ भारद्वाज ने बताया कि लीग के ट्रायल 7 फरवरी से दिल्ली से शुरू हो रहें हैं।उन्होंने बताया कि ट्रायल पूरे भारत में 30 जगह आयोजित होगें एवं टुनार्मेंट अप्रैल माह में नीमराना में आयोजित किया जायेगा।टूनार्मेंट में कुल आठ टीमों के बीच खिताब को जीतने के लिए 27 मुकाबले होंगे और खिताब जीतने वाली टीम को दो लाख रुपये नगद दिये जायेंगे एवं उपविजेता टीम को एक लाख का ईनाम दिया जायेगा।इनके अलावा और भी बहुत सारे आकर्षक इनाम खिलाड़ियों को वितरित किये जायेंगे।राजस्थान कब्बडी बैश की कार्यकारी टीम में लीग कमिश्नर विपिन भारद्वाज, लक्ष्मी नारायण, मनोज सिंह, कमलेश भारद्वाज, ललित शर्मा, मोनु वर्मा, शमशाद पठान, गोपाल चैधरी हैं, लीग सीईईओ संजीव भारद्वाज एवं लीग प्रवक्ता ऋषभ भारद्वाज हैं।

रामपाल जांगिड़ को छात्रावास कार्यकारी अध्यक्ष बनाया

मदरलैंड संवाददाता, बहरोड़। कस्बे के जांगिड़ छात्रावास मे रविवार को डॉ शिवराम जांगिड़ की अध्यक्षता में एक साधारण मीटिंग का आयोजन किया गया।जिसमें सभी समाज के लोगों ने रामपाल जांगिड़ को छात्रावास का कार्यकारी अध्यक्ष वहीं शांतिलाल जांगिड़ को महासचिव, घनश्याम जांगिड़ को सह सचिव व महेश जांगिड़ को सचिव बनाया गया।इस दौरान रामपाल जांगिड़ ने कहा कि समाज की हर एक समस्या उठाना हमारा सबसे पहला काम रहेगा।इस दौरान संजय शर्मा प्राध्यापक, दयावंत जांगिड़, महेंद्र जांगिड़, महावीर जांगिड़, धन सिंह, मातादीन जांगिड़, शिवराज, रोशन लाल, अरविंद सहित समाज के अनेक लोग मौजूद रहे।

जखराना में युवाओं ने किया भामाशाह का सम्मान

मदरलैंड संवाददाता, बहरोड़।बहरोड़ के जखराना ग्राम में भामाशाह एडवोकेट वीरेंद्र मेहता के द्वारा खेल मैदान में युवाओं के लिए शारीरिक व्यायाम का सामान उपलब्ध कराया गया था।जिसका उद्घाटन आज युवाओं ने माला व साफा पहनाकर स्वागत किया और मेहता ने ट्रैक की मरम्मत कराने की घोषणा की।इस मौके पर छोटू प्रधान, देवेंद्र ठाकुर, चमन यादव, प्रेमपाल यादव, अतुल यादव, सचिन यादव, बलिया यादव, मोहित यादव, अंकित यादव, सचिन, डॉक्टर कर्मवीर यादव, सत्यवीर कुमार, अंकित कुमार, प्रतीक यादव, राजकुमार प्रजापत, गोलू, अंकित मेहता, मोंटू, धीरज कुमार, राहुल, सत्यव्रत यादव, कपिल यादव, अजीत, हरिओम डेलिकेट, विवेक मेहरा, रोशन, सुंन्दर व अन्य युवा साथी मौजूद रहे।

होटल आंगन में मरते-मरते बचे पांच पत्रकार

कार्यक्रम की कवरेज करने पहुंचे पत्रकार होटल की लिफ्ट में फंसे एक की हालत सीरियस पहुंचाया एस एम एस हॉस्पिटल

मदरलैंड संवाददाता, जयपुर। होटल आंगन में आयोजित कार्यक्रम का कवरेज करने पहुंचे पत्रकार होटल की लिफ्ट में फंस गए। जिसमें एक पत्रकार की हालत भी गंभीर उसे तुरंत २..२. में भेजा गया।अन्य चार में एक के सीने में अभी तक दर्द है।आपको बता दें की एक कार्यक्रम को कवरेज करने होटल आंगन एमआई रोड आकाशवाणी के सामने स्थित मैं पहुंचे पत्रकार।जहां उन्हें मालूम हुआ कि कार्यक्रम टेरिस पर रखा गया है तो वह है लिफ्ट के माध्यम से ऊपर कार्यक्रम कवरेज करने के लिए पहुंचे लेकिन लिफ्ट बीच में फस गई ।जिसके कारण पत्रकारों की जान पर बन आई पत्रकारों ने अंदर से होटल वालों को कई फोन किए मगर होटल वालों ने किस प्रकार की कोई मदद नहीं करी ।उसके पश्चात कार्यक्रम आयोजकों को फोन किए उनके द्वारा भी कोई मदद नहीं मिली। फिर पत्रकारों ने अपने पत्रकार साथियों एवं पुलिस को फोन किया तो कुछ पत्रकारों ने लोहे के सरियो के माध्यम से थोड़ा दरवाजा खोल ।ताबड़तोड़ कोशिश कर पांचो पत्रकारों को सुरक्षित बाहर निकाला।जिसमें एक की हालत गंभीर और दूसरे के सीने में दर्द अभी भी चालू है बाकी तीन अन्य स्वास्थ्य।अब सवाल यह उठता है कि आखिर होटल मैनेजमेंट क्या कर रहा था आखिर ऐसी घटिया लिफ्ट खराब लिफ्ट हम जनता के लिए क्यों लगाई गई आपको बता दें कि इस कार्यक्रम में काफी छोटे-छोटे बच्चे भी शामिल थे अगर वह लिफ्ट में फस जाते तो उनकी दुर्घटना का जिम्मेदार आखिर कौन होता। मामले की गंभीरता को देखते हुए एवं पत्रकार की हालत को देखते हुए तुरंत प्रभाव से होटल मालिक एवं समस्त स्टाफ पर कार्यवाही करने हेतु पत्रकारों द्वारा जयपुर विधायकपुरी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है पुलिस द्वारा तुरंत प्रभाव से कार्रवाई शुरू कर दी गई है पुलिस की जानकारी में यह भी निकल कर आया कि होटल द्वारा किसी प्रकार की कोई परमिशन इस कार्यक्रम की नहीं ली गई और ना ही होटल में सैनिटाइजर या मास्क इत्यादि का पालना की जा रही है तो ऐसे में पत्रकारों ने पुलिस प्रशासन से मांग करि है कि ऐसी होटल पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए !लिफ्ट में फंसे पांच पत्रकारों के नाम सनी आत्रेय रमेश भगत गोविंद सैनी शंकर लाल सैनी सुरेंद्र शर्मा मौजूद थे।

जावली में भागवत कथा में भगवान के जन्मोत्सव पर लखेरा परिवार ने बाटी बधाइयां

» मदरलैंड, गिर्राज प्रसाद सोलंकी

लक्ष्मणगढ़ उपखंड क्षेत्र के ग्राम जावली में चल रही श्रीमद्भागवत कथा का चतुर्थ दिवस चतुर्दस में आचार्य पंडित राधा वल्लभ शास्त्री बवेखर के द्वारा भगवान राघवेंद्र सरकार का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया संपूर्ण जावली नगरी राममय में हो गई ।राम कथा मां शबरी के यहां भगवान ने जाति पाति को छोड़कर मां शबरी के यहां झूठे बेर खाए और शाम के समय भगवान श्री कृष्ण का जन्म जेल में भगवान का जन्म जेल में प्रगट होना वसुदेव जी के द्वारा भगवान श्री कृष्ण को यमुना से पार करके और यशोदा मैया के यहां पहुंचाया मैया यशोदा के यहां सभी ब्रज वासियों ने धूमधाम से और ग्राम जावली के समस्त श्रोताओं ने धूमधाम से भगवान का उत्सव मनाया। सभी आगंतुक माता बहने भगत जनों ने कथा आयोजन में बड़ा आनंद लिया। और सब ने बोल कर के नाच करके भगवान का जन्मोत्सव मनाया। खूब गाई बधाइयां, खूब नाचते गाते भरपूर आज कथा में ग्राम वासियों ने नंदोत्सव का आनंद उठाया। इस आयोजन में मदनलाल, हरिप्रसाद, रमेश, महेश, राजू, गिर्राज, दिनेश, सोनू, धीरज ,गोलू , लक्ष्मी द्रोपती अंजू सुंदर कमलेश, रितु , अनीता, मंजू, माया, निर्मला, इत्यादि लखेरा परिवार ने आज जावली गांव में खूब बाटी बधाइयां । नंद के आनंद भयो जय कन्हैया लाल की हाथी घोड़ा जी ने और जी ने पाल कि पंडित राधा वल्लभ शास्त्री नगर के श्री मुख से नंद के आनंद भयो जय कंहैया लाल की नंद के आनंद भयो जय कंहैया लाल की हाथी ने घोड़ा दिन और जी नेपाल कि भगवान श्री कृष्ण का जन्म नाच करके धूमधाम से मनाया कथा में सभी श्रद्धालुओं ने गांव के श्रोताओं ने बड़ी भाव से नाथ करके भगवान का जन्म उत्सव मनाया। जिसमें संपूर्ण जावली क्षेत्र की जनता ने कथा का श्रवण कर कर लाभ उठाया और व्यासपीठ से भागवत आचार्य जी ने कहा कि जब धरती पर पाप बढ़ जाता है तो भगवान स्वयं आकर के अवतार लेते हैं। इसलिए व्यक्ति को ईश्वर की आराधना करते हुए सात्विक भोजन करना चाहिए अहिंसा मदिरापान से दूरी बनाए रखना चाहिए।

शिक्षक परिजन बैठक में कोरोना गाइडलाइन को लेकर की गई चर्चा

» मदरलैंड, अशोक भारद्वाज

कठूमर। रा.बा.उ.मा.वि में प्राचार्य बीना मीणा की अध्यक्षता में रविवार को हुई शिक्षक परिजन बैठक में कोरोना एडवाइजरी को लेकर चर्चा की गई। कठूमर उपखंड मुख्यालय पर स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय कठूमर की व्याख्याता सपना मीणा ने बताया कि रविवार को प्राचार्य बीना मीणा की अध्यक्षता में शिक्षक व अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में बताया कि सोमवार 8फरवरी से 6 7 8 कक्षा की छात्राओं का विद्यालय आने का समय सुबह 10:30 बताया गया। और बैठक में प्राचार्य बीना मीणा ने अभिभावकों से कहा कि आप अपने बच्चों को खाने का टिफिन, पानी की बोतल के साथ मास्क लगाकर और समझाते हुए कि सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए स्कूल भेजें।साथ अभिभावकों को आश्वस्त किया कि स्कूल परिसर में बच्चों का पूर्णता ध्यान रखा जाएगा।किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाएगी। इस मौके पर व्याख्याता बीना कुमारी मीना, उषा गुप्ता, वरिष्ठ अध्यापिका आभा गुप्ता, अध्यापक श्रीमती मीरा जैन, सरवन लाल, जगमोहन जाटव सहित अनेक अभिभावक मौजूद रहे।

बैठक में मौजूद शिक्षक व अभिभावकों को कोरोना को लेकर निर्देश देती प्राचार्य बीना मीना।

भारी वाहनों को डायवर्ट करने के चलते हाईवे पर लगा लम्बा जाम

» मदरलैंड संवाददाता

बहरोड़। कस्बे के चैराहे से भारी वाहनों को अलवर, नारनौल व कुण्ड रोड़ की और डायवर्ट करने के चलते दिल्ली-जयपुर हाईवे पर लम्बा जाम लग गया। आपको बता दे कि किसान आंदोलनकारी अभी भी दिल्ली-जयपुर हाईवे के शाहजहॉपुर बोर्डर पर बैठे हुए हैं। जिसके चलते भारी वाहनों को शाहजहॉपुर से पहले बहरोड़ चैराहे से अलव, नारनौल व कुण्ड रोड़ की ओर डायवर्ट किया जा रहा है। जिससे हाईवे पर काफी लम्बा जाम लग गया है। जिसके चलते वाहन चालकों और राहगीरों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। पुलिस जाम को खुलवाने का प्रयास कर रही है।

विधायक ने विद्यालय खेल मैदान की चार दिवारी का किया शिलान्यास

» मदरलैंड, नागपाल शर्मा

माचाड़ी कस्बे में राजगढ़ लक्ष्मणगढ़ व रैणी विधानसभा क्षेत्र के क्षेत्रीय विधायक जौहरी लाल मीणा ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय माचाड़ी के खेल मैदान की सुरक्षा के लिए FFC मद से पांच लाख रुपए की लागत से बनने वाली चारदीवारी का शिलान्यास किया। शिलान्यास करने से पहले सभी अतिथियों का फूल माला व साफा बांधकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर विधायक ने कहा कि क्षेत्र के विकास के लिए धन की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। इस पर कुछ लोगों ने क्षेत्रीय विधायक से खेल मैदान के साथ-साथ गांव में हो रहे अतिक्रमण हटवाए जाने की मांग की। उन्होंने कहा कि गांव का पुराना बस स्टैंड जो कि पहले काफी चौड़ाई पर था। लेकिन अब कुछ प्रभावशाली लोगों द्वारा दुकानों के आगे पक्के चबूतरे बनाकर बस स्टैंड को सकड़ा करते जा रहे हैं। अतः गांव में हो रहे इन अतिक्रमणो को हटवाया जाए । भूमि पूजन अध्यापक पंडित सुभाषचन्द शर्मा द्वारा मंत्रोच्चार के साथ करवाया गया। इस अवसर पर विद्यालय प्रधानाचार्य कैलाश चंद मीणा व शाला स्टाफ, रैणी विकास अधिकारी रमेश चंद्र मीणा, हल्का पटवारी जगराम मीणा ग्राम विकास अधिकारी मुकेश मीणा, पंडित राजेश शर्मा, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष सीताराम सैनी, ब्लॉक कांग्रेस संगठन मंत्री लक्ष्मीनारायण सैनी, पूर्व उपसरपंच नोदयाराम सैनी, मनीराम धाकड़, सरपंच पती आनंद सिंह, रामदयाल सैनी, कबूल सैनी, रघुवीर सैनी, डालचंद सैनी, गुटियारी, बाबूलाल यादव, रमेश यादव मैदान में खेलने वाले प्रेमी बच्चों सहित ग्रामीण लोग उपस्थित रहे

शहीदो को भगवान समझकर पूजा करेः हुडला

शहीद रामनरेश की मूर्ति का किया अनावरण

» मदरलैंड, राहुल जोशी

महवा उपखण्ड के पावटा कस्बे में शहीद राम नरेश गुर्जर की मूर्ति का अनावरण विधायक ओमप्रकाश हुड़ला ने किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता कर्नल सिद्धार्थ सूबे जी कमान अधिकारी 123 पैदल पल्टन (प्रा० सेना)ग्रेनेड ने की। उन्होंने मौजूद आम जन को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस धरा के लिए सम्मान की बात हैं कि यहां पर शहीद रामनरेश जैसे वीर पुरुष ने जन्म लिया हैं।विधायक ने कहा कि हमारें सैनिक देश की एकता, अखण्डता एवं सुरक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करते है। साथ ही जो शहीद होते है उनकी न तो कोई जात होती और न ही कोई पात। आने वाली पीढ़ी को शहीदों की मूर्तियों एवं स्मारकों पर मेले आयोजित करके उन्हें शहीदों की गाथाएं सुनाएं ताकि उनमें देशभक्ति की भावना जागे। उन्होंने वीरांगनाओं को प्रणाम और शहीदों को नमन करते हुए कहा कि शहीदों की शहादत निरर्थक नहीं जायेगी। उन्होंने कहा कि केवल राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरा देश शहीदों के परिवारजन के साथ हर परिस्थिति में साथ खड़ा हुआ है।इस दौरान उन्होंने पावटा के लोगो कि जन भावनाओ का सम्मान करते हुए तीन जो नई सड़के बनाई जाएगी उनका नाम शहीद राम नरेश गुर्जर,शहीद फतेह सिंह ,शहीद दिनेश भंडारी के नाम पर किए जाने कि घोषणा भी की। उन्हें पावटा के लोगो को हर घर जल पहुचाये जाने के वादे को पूरा करने के लिए संकल्प लेते हुए कहा कि पावटा के हर घर में 2023 तक जल पहुच जायेगा उन्होंने घोषणा की राजकीय प्राथमिक विधालय संस्कृत को राजकीय माध्यमिक संस्कृत विधालय में क्रमोन्नत जल्द किया जाएगा। दौरान रत्तीराम पहलवान ,अजित सिंह महवा, मुकेश गुरुजी ,कैप्टेन भरत सिंह,भगवान सिंह सरपंच बड़ागांव, नाहरसिंह पूर्व सरपंच अमरपुर, बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

भारतीय सिन्धु सभा के सदस्यों ने की प्रेम प्रकाश आश्रम के संत से मुलाकात

» मदरलैंड, हीरालाल भूरानी

खैरथल । भारतीय सिन्धु सभा खैरथल के सदस्यों की टीम ने आज प्रेम प्रकाश आश्रम खैरथल में एक बैठक का आयोजन आश्रम के संत इन्द्र सांई की अध्यक्षता में की।बैठक में सिन्धी समाज की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई तथा समाज में व्याप्त कुरुतियों को लेकर चर्चा की गई तथा उन्हें मिटाने का संकल्प लिया। भारतीय सिन्धु सभा के संभाग प्रभारी गिरधारी लाल ज्ञानानी ने बताया कि सिन्धु सभा के सदस्यों द्वारा समाज हित में कार्य करने में पीछे नहीं रहते हैं।इस दौरान आश्रम के संत ने सदस्यों को समाज हित में और भी बहुत सक्रिय हो कर कार्य करने को प्रेरित किया। बैठक में बाबूलाल गोरवानी, हीरालाल भूरानी, मास्टर प्रताप सिंह कटहरा, विजय बच्चानी, मास्टर जेसा राम सहित अन्य सदस्यों ने बैठक में अपने विचार रखे।

बहरोड़ में आरएसएस के जयपुर प्रांत प्रचारक को एकत्रित की गई समर्पण राशि सौंपी

» मदरलैंड, मयंक जोशी

बहरोड़। राष्ट्रीय स्वम सेवक संघ के जयुपर प्रान्त प्रचारक ड़ा शैलेन्द्र बहरोड़ पधारे और राजेश्वर कालेज बहरोड में आरएसएस, विश्व हिंदू परिषद, बजरग दल, हिन्दू जागरण मंच सहित अनेक कार्यकर्ताओ से अयोध्या में बन रहे राम मंदिर का विषय रखा। उन्होंने कहा कि 800 साल के इतिहास में यह हिन्दू समाज के सघर्ष के बाद यह दिन आया है। आज अयोध्या में श्रीराम मंदिर ही नहीं देश का राष्ट्र मन्दिर का निर्माण हो रहा है।जिसके लिए देश का हर नागरिक बढ़ - चढ़ कर समर्पण कर रहे है।राम मंदिर के लिए बच्चे अपनी गुल्लक तोड़कर पैसे अर्पण कर रहे हैं तो कही बुजर्ग अपनी पेंशन दे रहे है।कहा कि राम मंदिर के लिए 10 रुपये देने वाला भी उतना ही महत्व रखता है और करोड़ देने वाला भी।उन्होंने कहा कि आज हमारी जिम्मेदारी है कि हम हर गांव और हर घर पहुँचे लोग मन्दिर के लिए समर्पण के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे है।इन निधि संकलन में अपना बहुमूल्य समय दे रहे कार्यकताओं का उत्साह बढ़ाया। ओम यादव ने ग्राम गुवाना के समस्त नागरिकों द्वारा दी गई 85000 हजार की राशि प्रान्त प्रचारक ड़ा शैलेन्द्र को रामन्दिर के लिए समर्पण की। उसके बाद राजस्थान भाजपा किसान मोर्चा के उपाध्यक्ष ओमप्रकाश व उनके भाई रिटायर्ड कंर्नल अशोक यादव ने 151000रू, विकी ने 11000रू, अरूण यादव ने 1100रू, प्रेम ने 5100रू, रविन्द्र ने 11000रू और इनके अलावा लोगों ने राम मन्दिर के लिए राशि समर्पण की। इस अवसर पर जिला प्रचारक रतिराम, विभाग कार्यवाह कैलाश कल्ला, हुक्म यादव, सुमित यादव, सोनू तिवाड़ी, धर्मबीर, हरिसिह, मनोज यादव, ओम यादव, नवीन शर्मा, विजय यादव, देविंदर यादव, कमल यादव, राहुल सैनी व विनोदपाल सहित अनेक कार्यकता उपस्थित रहे।

बहरोड़ में आरएसएस के जयपुर प्रांत प्रचारक को समर्पण राशि सौंपते कार्यकर्ता।

सांसद बालक नाथ ने राजगढ़ लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र में प्रधानमंत्री सड़क योजना किया शिलान्यास

» मदरलैंड, महेश मीणा

रैणी। सांसद बालक नाथ व राजगढ-लक्ष्मणगढ विधायक जौहरी लाल मीना ने प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत रैणी क्षेत्र में सड़कों का शिलान्यास किया और जगह जगह पर जन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए सम्बन्धित उच्चाधिकारियों को दिशा-निर्देश भी दिये । अलवर जिले की पंचायत समिति रैणी क्षेत्र 1143 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत रैणी से झाकडा जाने वाली सड़क का शिलान्यास रैणी उपखण्ड कार्यालय के समीप नसीया जी चौराहे पर सांसद बालक नाथ व राजगढ-लक्ष्मणगढ विधायक जौहरी लाल मीना ने शिलान्यास किया इसके बाद इसी क्रम में रैणी से करणपुरा , रैणी से भजेडा तथा डेरा से सालोली तक जाने वाली सड़क का शिलान्यास किया गया है इन सभी कार्यक्रमो में सांसद बालक नाथ व राजगढ-लक्ष्मणगढ विधायक जौहरी लाल साथ साथ ही रहे तथा भाजपा और कांग्रेस दोनों ही पार्टी के कार्यकर्ता भी अपने अपने नेताओं के साथ ही एक ही ग्रुप में दिखाई दिए । फिर इसके बाद लगभग दोपहर को रैणी कृष्णा मैरिज होम में एक साथ सभी ने खाना भी खाया। इन सभी कार्यक्रमो में राजगढ नगरपालिका अध्यक्ष व क्षेत्र के सभी सरपंच गण , पार्षद , डायरेक्टर , पूरा रैणी प्रशासन सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे । इस दौरान सरपंच रामपुरा , सरपंच रैणी सहित सभी ने रैणी में कोलेज खुलवाने के लिए ज्ञापन दिया गया और रामपुरा सरपंच राजेश मीना ने अपनी पंचायत क्षेत्र में खारा पानी होने के कारण रामपुरा पंचायत के सभी गावों को जल जीवन मिशन योजना के तहत शामिल करने के लिए ज्ञापन दिया गया।

वसूली के नाम पर न किया जाए किसान, मजदूर का उत्पीड़न: देशराज

» राजकुमार

रुड़की। किसानों की समस्याओं को लेकर रविवार को झबरेडा विधायक देशराज कर्णवाल ने विद्युत विभाग रूडकी उप महाप्रबन्धक एवं सभी 5 विद्युत उपखण्ड भगवानपुर झबरेडा रामनगर रुडकी मंगलौर मखदूमपुर के सर्किल अधिकारियों, सम्बन्धित अधिक्षण अभियन्ता एवं यात्रिक अभियन्ताओं के साथ बैठक कर विद्युत विभाग की जन समस्याओं एवं विभागीय समीक्षा की।

विधायक देशराज कर्णवाल ने विद्युत विभाग द्वारा बकाया वसूली अभियान के नाम पर किसानों, मजदूरों के उत्पीडन की बात कहते हुए नराजगी जताई। कहा कि क्षेत्र से आए दिन इसकी सूचनाएं मिल रही है। झबरेडा विधायक ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि बिजली चोरी और बकाया वसूली अभियान के नाम पर क्षेत्र के किसानों, मजदूर परिवारों को मुकदमेंबाजी कर परेशान न किया जाये। विधायक ने उपमण्डल अधिकारी राहुल जैन को निर्देशित किया कि क्षेत्र में लटकते हुए तारों एवं जर्जर हो चुके पोल (खम्भे) इन्सुलेटिड और ब्रेकिट को तत्काल प्रभाव से बदलवाना सुनिश्चित करें। क्षेत्र में सभी अधिकारी जनता के साथ समन्वय बनाकर सरकार के निदेशों का पालन करे। बैठक में शहरी विकाश मंत्री एवं शासकीय प्रवक्ता प्रतिनिधि सुशील त्यागी ने भी विभागीय अधिकारियों से कहा कि सुखिंया बटोरने के लिये किसानों पर बिजली के झूटे सच्चे मुकदमें दर्ज करने की होड न करे। विभाग और उपभोक्ता एक गाडी के दो पहीये है जिनका संचालन समन्वय के साथ होना चाहिये। सुशील त्यागी ने झबरेडा क्षेत्र की एसडीओ अनिता सैनी की कार्यशैली पर कडी नाराजगी करते हुए अपनी कार्यशैली में सुधार लाने के लिये कहा। सुशील त्यागी की शिकायत पर झबरेडा विधायक ने कहा की इसे लेकर उच्चाधिकारियों से वार्ता की जायेगी।

रजनीश शास्त्री बने अध्यक्ष

मदरलैंड संवाददाता, रुड़की। रामनगर चैक स्थित एक होटल में अर्चक पुरोहित महासभा के चुनाव संपन्न हुए इस दौरान चुनाव में आचार्य रजनीश शास्त्री को फिर से अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी मिली। चुनाव अधिकारी आचार्य पंडित रमेश सेमवाल, पंडित सुनील ध्यानी, वासुदेव पंत ने बताया कि पंडित आचार्य रजनीश शास्त्री ने अध्यक्ष पद पर अपना कब्जा करते हुए आचार्य कैलाश शास्त्री को 10 मतों से पराजित किया। उपाध्यक्ष पद पर हरीश निर्विरोध चुने गए, कोषाध्यक्ष पद आचार्य जगदीश पैन्यूली विजय रहे। अध्यक्ष आचार्य रजनीश शास्त्री ने कहा कि अर्चक पुरोहित महासभा मजबूती के साथ समाज के लोगों के लिए काम करेगी। इस दौरान अर्चक पुरोहित महासभा के हरीश डिमरी, ज्योति प्रसाद, देवेंद्र सेमवाल, प्रमोद वशिष्ठ, पंडित मनोज सेमवाल, श्रीबाल गोविंद, कीर्तिराम, राजेंद्र नौटियाल, कृष्णा चमोली, अनुज नौटियाल, प्रेमचंद नैथानी, पंडित चंद्रमोहन पैन्यूली, पंडित देवी सेमवाल, प्रकाश नौटियाल, मुकेश पैन्यूली, चंद्रमोहन गैरोला, संजीव प्रसाद, शक्ति प्रसाद, संदीप प्रसाद, गंगा प्रसाद, राजेश सेमवाल, प्रवीण नौटियाल, जयप्रकाश अंथवाल, दिवाकर चमोली, नरेश नौटियाल, रामलोचन पैन्यूली, गंगाराम पैन्यूली, मायाराम नौटियाल, महेश चंद जोशी उपस्थित रहे।

प्रदीप बत्रा ने किया पार्क का निरीक्षण, बोले और लाई जाएगी सुंदरता

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। भाजपा विधायक प्रदीप बत्रा ने रविवार को बोट क्लब के पास पंडित दीनदयाल उपाध्याय पार्क का बारीकी से निरीक्षण किया। इस दौरान विधायक ने कहा कि शहर को क्लीन सिटी और मॉडर्न सिटी बनाने का सपना लगभग पूरा हो चुका है। अब शहर के पार्कों को और बेहतर बनाया जा रहा है। जिसमें बोट क्लब स्थित पंडित दीनदयाल पार्क भी शामिल है, जिसे और भी सुंदर बनाया जा रहा है। ताकि बच्चों के साथ साथ शहर के अन्य लोग भी पार्क में आ सकेंगे। भाजपा विधायक ने कहा कि बच्चों के खेलने का कोई पार्क नहीं था इसलिए पार्क के अंदर कोई अतिक्रमण ना हो इसलिए पार्क के दोनों ओर रेलिंग लगवाई गई है उन्होंने बताया कि पार्क तीन लाख की लागत से तैयार हुआ है। लगातार रुड़की को स्मार्ट सिटी बनाने का कार्य चल रहा है बाहर से आने वाले लोग भी रुड़की शहर से प्रेरणा लेते हैं। उन्होंने कहा कि शहर के विकास में कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ी जाएगी। भाजपा सरकार लगातार विकास कार्यों को कराने में जुटी है। विकास में कोई कमी आड़े नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि 2022 के चुनाव में भी भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ उत्तराखण्ड में सरकार बनाएगी।

संक्षिप्त समाचार

व्यापार मंडल चुनावः आपत्तियों के सुनवाई के दौरान उलझे व्यापारी

मदरलैंड संवाददाता, रुड़की। व्यापार मंडल चुनाव को लेकर आपत्तियों पर सुनवाई के पहले दिन ही व्यापारी आपस में उलझ गए। बीटी गंज के व्यापारियों ने मतदाता सूची में अन्य व्यापारियों के नाम जोड़ने की मांग उठाई। वहीं आपत्ति की सुनवाई करने वाले पदाधिकारियों ने मतदाता सूची में नए नाम जोड़ने से इनकार करते हुए केवल मतदाता सूची के नामों पर ही आपत्ति देने की बात कही। जिससे हंगामा बढ़ गया। रुड़की में प्रांतीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमंडल के चुनावों पर शुरू से ही विवादों के बादल मंडरा रहे हैं। हाल ही में कुछ व्यापारियों और नगर निगम के एक पार्षद ने चुनाव प्रक्रिया में धांधली का आरोप लगाया था। जिसकी शिकायत पर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने व्यापारियों की एक बैठक बुलाकर आपत्तियों के निस्तारण की प्रक्रिया को पूरा करने के बाद चुनाव कराने के निर्देश दिए थे। जिसको लेकर छह से दस फरवरी तक आपत्तियों के निस्तारण के लिए बीटीगंज स्थित एक धर्मशाला में कैंप शुरू किया। कैंप का समय शाम को छह से आठ रखा गया। आपत्ति निस्तारण के लिए लगाया गए कैंप में पहले दिन ही विवाद हो गया। बीटीगंज के व्यापारी नरेश प्रिंस का आरोप है कि सैंकड़ों व्यापारियों के नाम मतदाता सूची में नहीं है। उन्होंने उन नामों को सूची में जोड़ने की मांग की। जिसके लिए चुनाव अधिकारी तैयार नहीं हुए। चुनाव अधिकारी प्रमोद गोयल का कहना है कि मतदाता सूची में जो नाम हैं उनको लेकर कोई आपत्ति है तो वह स्वीकार की जाएगी। जिलाध्यक्ष सौरभ भूषण शर्मा ने कहा कि चुनाव कमेटी मामले में सही निर्णय लेकर काम कर रही है। व्यापारियों की जो भी समस्याएं हैं, उन्हें सुना जा रहा है।

इंजीनियरिंग के लापता छात्र समेत 3 शव बरामद

मदरलैंड संवाददाता, मंगलौर। पुलिस ने एक महिला समेत 3 शव बरामद किए हैं। इनमें एक शव की शिनाख्त हो गई है। मृतक इंजीनियरिंग कॉलेज के एक छात्र का बताया गया है जिसकी गुमशुदगी पिरान कलियर थाने में दर्ज है वहीं दो अन्य शवों की शिनाख्त नहीं हो पाई है। पुलिस शिनाख्त कराए जाने का प्रयास कर रही है। पुलिस के अनुसार रविवार को सूचना मिली कि मोहम्मदपुर पावर हाउस पर जाल में 3 शव फंसे हैं। इस पर नारसन चौकी प्रभारी लक्ष्मण सिंह तथा उप निरीक्षक भज राम चैहान मौके पर पहुंचे। पुलिस ने तीनों शवों को बाहर निकाला। जिसमें एक शव किसी 35 वर्षीय महिला का मिला, जो काफी पुराना लग रहा है। दूसरे शव की भी शिनाख्त नहीं हो पाई है लेकिन उसके हाथ में एक अंगूठी मिली है जिस पर उर्दू में कुछ लिखा हुआ है इससे यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि यह किसी मुस्लिम युवक का शव हो सकता है, जो 40 वर्षीय युवक का बताया गया है। तीसरे शव की शिनाख्त हुई है। यह मनीष पुत्र रोहित का बताया गया है जो कि क्षेत्र के किसी इंजीनियरिंग कॉलेज में शिक्षा ग्रहण करने बिहार से आया हुआ था। 30 जनवरी को वह अचानक लापता हो गया था। जिसके बाद उसकी गुमशुदगी कलियर थाने में दर्ज कराई थी। बरामद शव मनीष का है। इसकी शिनाख्त उसके पिता रोहित निवासी बिनवलिया थाना कोईयर पश्चिमी चंपारण बिहार ने की। कोतवाल मंगलौर यशपाल सिंह बिष्ट ने बताया कि तीनों शव पंचनामे के बाद पोस्टमार्टम हेतु भेज दिये गये है। जिस महिला का शव मिला है उससे मिलते जुलते हुलिए की एक महिला की गुमशुदगी रानीपुर थाने में दर्ज है उसके परिजनों को इस संबंध में सूचना दी गई है।

6 किलो गांजे के साथ दबोचे 2 आरोपी, 2 फरार भी गिरफ्तार

मदरलैंड संवाददाता, कलियर। पुलिस ने नशे के कारोबार में लिप्त दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपितों के कब्जे से 6 किलो गांजा बरामद हुआ है। आरोपित विशाखापट्टनम से गांजा लाकर हरिद्वार और कलियर के आसपास के इलाकों में बेचने का काम करते थे। कलियर थानाध्यक्ष जगमोहन रमोला ने बताया कि पिछले दिनों पुलिस कप्तान ने नशे के कारोबार पर अंकुश लगाने के लिए निर्देश दिए थे। बताया कि शनिवार देर शाम पुलिस बावन दरा पुल के पास चेकिंग का अभियान चला रहे हुए थी। इसी दौरान दो युवक आते दिखाई दिए। शक होने पर पुलिस ने उन्हें रोकने का प्रयास किया। पुलिस को देख दोनों आरोपित भागने लगे। पुलिस ने घेराबंदी कर दोनों आरोपितों को दबोच लिया। पूछताछ में उन्होंने अपने नाम आसिफ पुत्र नबी हसन व तौकीर पुत्र इलियास निवासी भैसाराडी थाना छपार, मुजफ्फरनगर बताए। थानाध्यक्ष ने बताया कि आशीष के पास से 3 किलो 700 ग्राम और तौकीर के पास से 2 किलो 900 ग्राम गांजा बरामद हुआ है। पूछताछ में आरोपितो ने बताया कि वह गंजे को विशाखापट्टनम से सस्ते दामों पर खरीद कर लाते हैं और फिर उसे हरिद्वार तथा कलियर क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में महंगे दामों पर बेचने का काम करते हैं। पुलिस ने पकड़े गए आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उनका चालान कर दिया है। आरोपियों को पकड़ने वाली टीम में थाना अध्यक्ष जगमोहन रमोला, उप निरीक्षक नीरज मेहरा, कांस्टेबल संजय पाल, शमशेर, अरविंद, सुबोध कुमार, तेजपाल, मनीषा आदि शामिल रहे। उधर सिविल लाइन कोतवाली पुलिस ने नशे के कारोबार में लिप्त लंबे समय से फरार चल रहे दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है। कोतवाल राजेश शाह ने बताया कि बंदा रोड निवासी उस्मान पुत्र गुलफाम व आसिफ पुत्र इकबाल को नशे के कारोबार में लिप्त पाए जाने पर गिरफ्तार किया गया था। न्यायालय से जमानत मिलने के बाद दोनों आरोपी को कोर्ट में पेश नहीं हो पा रहे थे। न्यायालय के आदेश पर पुलिस ने गत रात्रि दबिश देकर दोनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश कर दिया है। सिविल लाइन कोतवाल राजेश शाह ने बताया कि दोनों स्मैक के कारोबार में लिप्त थे।

पवेलियन मैदान मे आयोजित बैंड प्रदर्शन

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। स्वर्णिम विजय मशालवर्ष के उपलक्ष्य मे उपकरण और बैंड प्रदर्शन बंगाल अभियंता समूह एवं केंद्र रुड़की के पवेलियन मैदान मे आयोजित किया गया। विजय मशाल का रविवार को रुड़की मे ये सातवाँ दिन रहा। इस आयोजन का मुख्य उदेश्य युवा पीढ़ी को सेना की तरफ प्रेरित करना तथा भारतीय सेना द्वारा युद्ध मे इस्तेमाल किए गए हथियार एवं उपकरणों से अवगत करना था। इस प्रदर्शन मे बेहद गर्मजोशी के साथ रुड़की स्टेशन के सभी सैनिको एवं बंगाल अभियंता समूह एवं केंद्र, रुड़की के बैंड द्वारा दिल को छूने वाली देश भक्ति संगीत की मधुर ध्वनि ने दर्शको के मन को मोह लिया। कार्यक्रम के जरिये देश के लोगो को भारतीय वीरों की कुर्बानी को याद दिलाया गया। सभी उपस्थित दर्शको ने भारतीय सेना के इस प्रयास का तहे दिल से धन्यवाद किया।

नम आंखो से दी सुरेंद्र राकेश को श्रद्धांजलि, भावुक हुए बेटा, पत्नी

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। पूर्व कैबिनेट मंत्री स्व. सुरेंद्र राकेश को रविवार को उनकी पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

कार्यक्रम में कांग्रेस नेताओं के साथ ही दूसरे दलों, सामाजिक संगठनों व क्षेत्रवासियों ने भी भारी संख्या में शिरकत की। सभी ने दो मिनट का मौन रख और उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर दिवंगत कैबिनेट मंत्री को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। बीड़ी इंटर कॉलेज में श्रद्धांजलि समारोह आयोजित हुआ। कांग्रेस विधायक ममता राकेश ने अपने पति स्व. कैबिनेट मंत्री सुरेंद्र राकेश की पुण्यतिथि पर नमन से श्रद्धांजलि अर्पित की। विधायक ममता राकेश ने कहा कि स्व. सुरेंद्र राकेश ने क्षेत्र के चहुमुखी विकास के लिए कार्य किया है। उन्हीं की वजह से भगवानपुर क्षेत्र में जितना भी विकास हुआ है उसमें उनकी अहम भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि सबसे ज्यादा विकास कार्य भगवानपुर क्षेत्र में हुए हैं। भगवानपुर में पीजीआई, बस स्टैंड, तहसील मुख्यालय आदि उन्हीं की देन है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र की जनता के लिए वह हमेशा तत्पर रहते थे। उन्होंने गरीबों के हक की लड़ाई लड़ी। कांग्रेस प्रदेश सचिव अभिषेक राकेश ने नम आंखों से श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर पूर्व राज्य मंत्री मनोहरलाल शर्मा, सुशील राठी, वीरेंद्र रावत, पूनम भगत, पीसीसी सदस्य उदय सिंह पुंडीर, एससी मोर्चा प्रदेश मंत्री अरविंद कुमार, सेठ पाल परमार, संजय पालीवाल, राजेंद्र चैधरी एडवोकेट, सत्येंद्र शर्मा, नासीर पर्वेज, मुनीर आलम, नरेश सैनी, सलीम खान, वीरेंद्र सैनी, पहल सिंह, कंवरपाल सैनी, राव सुभान अली, देवेंद्र अग्रवाल, प्रदीप त्यागी, महिपाल सैनी, वीरेंद्र ठाकुर, गोपाल सिंह सुनील कुमार चैधरी आदि शामिल रहे।

वापस लिए जाए तीनों काले कृषि कानूनः पदम रोड़

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। भारतीय किसान यूनियन (टिकैत गुट) ने रविवार को मासिक पंचायत में फिर से तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग दोहराई। बैठक में कृषि कानूनों के खिलाफ हो रहे प्रदर्शन को धार देने के लिए चक्का जाम और गाजीपुर बॉर्डर के लिए कूच करने का निर्णय भी लिया गया। प्रशासनिक भवन में भाकियू (टिकैत गुट) की मासिक पंचायत में यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष चैधरी पदम सिंह रोड ने कहा कि देशभर का किसान तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग को लेकर आंदोलनरत है लेकिन केंद्र की सरकार गूंगी और बहरी बनी हुई है। उन्होंने कहा कि जब तक तीनों काले कानून वापस नहीं लिए जाते तब तक किसानों का आंदोलन बदस्तूर जारी रहेगा। उन्होंने बताया कि बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया है कि यदि केंद्र सरकार तीनो कानूनों को वापस नहीं लेती तो कार्यकर्ता सड़कों पर उतर कर चक्का जाम करेंगे और इसकी रणनीति तैयार की जा रही है जिसका जल्द ही खुलासा कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि दिल्ली बॉर्डर पर चल रहे आंदोलन का समर्थन देने के लिए जनपद हरिद्वार से भाकियू कार्यकर्ता गाजीपुर बॉर्डर के लिए कूच करेंगे। उन्होंने कहा कि जब तक केंद्र सरकार कृषि कानूनों को वापस नहीं लेती तब तक किसानों का आंदोलन जारी रहेगा और किसान एकजुट होकर इस आंदोलन को कामयाब करेंगे। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष नाजिम, युवा जिलाध्यक्ष संजीव कुशवाहा, मुबारिक अली फर्जी, रिजवान आदि भी मौजूद रहे।

आज से खुलेंगे सभी स्कूल, विद्यालयों ने पूरी की तैयारियां

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। करीब 11 महीने बाद शिक्षा व्यवस्था पटरी पर लौटने जा रही है। सरकार के निर्देशों के बाद सोमवार से कक्षा 6 से 8वीं तक के बच्चों को कक्षाओं में बैठाने की तैयारी स्कूल प्रबंधन ने कर ली है। ट्रांसपोर्टेशन से लेकर कक्षाओं तक में और स्कूल परिसर में शारीरिक दूरी और मास्क का पालन करना जरूरी रहेगा। अभिभावक भी बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तैयार दिखाई दे रहे हैं।

बच्चों के स्कूल जाने से उन्हें परीक्षा की तैयारी में मदद मिलेगी। शिक्षा विभाग ने कक्षा 6 से 8 तक के स्कूलों को 8 फरवरी से खोलने के प्रस्ताव पर मुख्यमंत्री की मोहर लगने के बाद आदेश जारी कर दिया है। यूके बोर्ड और सीबीएसई समेत अन्य बोर्ड के स्कूलों में 8 फरवरी से कक्षा 6 से 8वी तक की कक्षाएं चलेंगी।

स्कूलों में पहले से 9वी, 12वीं तक के छात्रों की कक्षाएं चल रही हैं। इन छात्रों को पढ़ाने की प्रक्रिया के तहत ही अन्य कक्षाओं के बच्चों को भी पढ़ाया जाएगा।

स्कूल संचालकों और प्रधानाचार्यो ने कक्षाओं में सीटिंग व्यवस्था शारीरिक दूरी के साथ करने का फैसला लिया है। वहीं सैनेटाइजर और मास्क अनिवार्य रहेगा।

श्री मारवाड़ कन्या पाठशाला प्रबंधक राम अवतार अग्रवाल एडवोकेट का मानना है कि जब 9वीं से 12वीं तक के बच्चों की कक्षाएं शुरू हुई तभी अन्य कक्षाओं के लिए भी व्यवस्था पूर्ण कर ली गई थी। स्कूलों में सैनेटाइजेशन की मशीनें लगी हैं।

लॉर्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल संचालक राजकुमार उपाध्याय के मुताबिक सीईओ ने सभी प्रधानाध्यापकों और एबीएसए को स्कूलों में बच्चों को शारीरिक दूरी के साथ बैठाकर पढ़ाने के निर्देश दिए हैं, जिसकी तैयारी प्राइमरी स्कूलों में भी शुरू हो गई है। बच्चों के लिए मास्क और सैनेटाइजर की व्यवस्था की जा रही है।

अशोक नगर स्थित सनराईज पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य राजेंद्र सिंह रावत व ढंडेरा स्थित योगेश्वर पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्या उर्मिला पुंडीर का कहना है कि शिक्षा विभागों के आदेशों को देखते हुए पूरे विद्यालय परिसर, कक्षाओं को सैनेटाइज करा दिया गया है।

विद्यालय में प्रवेश से पहले छात्रों को मुख्य द्वार पर ही सैनेटाइज किया जाएगा। मास्क के साथ ही छात्र विद्यालय में प्रवेश कर पाएंगें। उधर मंगलौर मे भी सरकार के आदेश के बाद स्कूलों को खोलने की तैयारी शुरू हो गई है। सोमवार से कक्षा 6 से लेकर 8 तक के छात्र अपने-अपने स्कूलों में जाकर शिक्षा ग्रहण करेंगे।

लंबे समय से बंद पड़े स्कूल में बनी कक्षाओं को नगर पालिका ने सैनेटाइज कराया है। ताकि संक्रमण के फैलने का खतरा न रहे। इस संबंध में सभी विद्यालयों को सैनेटाइज कराए जाने का कार्य पिछले दो दिनों से चल रहा है। रविवार को भी पालिका ने यह कार्य चलाया तथा सभी विद्यालयों को संपूर्ण रूप से सैनेटाइज कराया।

दौड़ लगा आईएमए ने दी साथी कर्मियों, चिकित्सकों को श्रद्धांजलि

मदरलैंड संवाददाता, रुड़की। आईएमए से जुड़े चिकित्सक रविवार सुबह रन फॉर लाइफ सेवियर कार्यक्रम के तहत सिविल लाइंस बोट क्लब में साथी कर्मियों, चिकित्सकों को श्रद्धांजलि दी। आईएमए अध्यक्ष डॉ. विकास त्यागी ने कहा कि कोरोना पर काफी हद तक काबू पा लिया गया है। अब कारोना से बचाव को वैक्सीनेशन का काम भी तेजी से चल रहा है। जिसके बाद पूरा देश कोरोना मुक्त हो जाएगा। कोरोना से पीड़ित मरीजों का उपचार करने में कई सहयोगियों ने अपनी जान तक कुर्बान कर दी है।

उनकी कुर्बानियों को भुलाया नहीं जा सकता है। उन्हीं चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों की याद में रन फॉर लाइफ सेवियर कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के जरिये उन चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों को आईएमए श्रद्धांजलि दे रहा है। आईएमए के संयुक्त सचिव डॉ. आशिमा ग्रोवर ने कहा कि चिकित्सक मरीज की जान बचाने के लिए अपनी जान की बाजी तक लगा देता है। कोरोना काल में ऐसे तमाम उदाहरण पूरे देश ने देखे हैं। सिविल अस्पताल के सीएमएस डॉ. संजय कंसल ने कहा कि कोरोना काल की चुनौतियों का चिकित्सक और स्वास्थ्य कर्मियों ने डटकर मुकाबला किया है। उसकी जितनी भी सराहना की जाए वह कम है। इसके बाद सभी चिकित्सकों ने दौड़ शुरू की। आईएमए अध्यक्ष डॉ. विकास त्यागी ने बताया कि डॉ. वीरिका साहरन ने 21 किलोमीटर की फुल मैराथन की। उन्होंने बताया कि इस दौरान एक लाख रुपये फंड भी एकत्रित किया गया। इस मौके पर डॉ. संजय गर्ग, डॉ. नवीन अग्रोही, डॉ. चंद्रशेखर ग्रोवर, डॉ. जेएम भटनागर, डॉ. भार्गव, डॉ. प्रवीण सालार, डॉ. सीमा सालार, डॉ. आभा अग्रोही, डॉ. अंकुर सैनी, डॉ. अंकुर सक्सेना, डॉ. सविता गोठी आदि चिकित्सक मौजूद रहे।

नकली नोट गिरोह का भंडाफोड़, तीन तस्कर गिरफ्तार

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। भगवानपुर पुलिस ने नकली नोट छाप कर बाजार में चलाने वाले गिरोह के 3 सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपितों के कब्जे से स्कैनर, प्रिंटर मशीन, पेपर कटर, स्केल, पेपर शीट व 27900 की नकली करेंसी बरामद की है। सिविल लाइन कोतवाली में पत्रकारों से वार्ता में सीओ मंगलौर ने बताया कि भगवानपुर पुलिस को सूचना मिली कि क्षेत्र में नकली नोट छाप कर बाजार में चलाने वाला गिरोह सक्रिय है। इस पर पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू की। पुलिस को नकली नोट छापने वाले आरोपितों के सोनाली पुल के पास महाकाल मंदिर के पास खड़े होने की सूचना मिली। इस पर पुलिस ने बताए गए स्थान की घेराबंदी कर ली। पुलिस को देख आरोपितों ने भागने का प्रयास किया लेकिन पुलिस ने 3 आरोपितों को दबोच लिया। पूछताछ में आरोपितो ने अपने नाम संजय पुत्र राजा राम निवासी ग्राम टकाभरी थाना भगवानपुर, सुरेश पुत्र रंजीत निवासी मिजार्पुर ग्रंट थाना बिहारीगढ़, अमरीश पुत्र तिरपाल ग्राम गोकुलपुर थाना कोतवाली देहात, सहारनपुर बताए। आरोपियों ने नकली नोट छापने की बात स्वीकार की है। आरोपियों की निशानदेही पर एक कलर स्कैनर, प्रिंटर, मशीन पेपर, कटर, स्केल, पेपर शीट, व 27900 की नकली करेंसी बरामद की है। सीओ पंकज गैरोला ने बताया कि आरोपित संजय ने बताया कि वह काफी समय से इस धंधे को करते आ रहे हैं। आरोपी संजय पूर्व में भी नकली नोट बनाने के मामले में जेल जा चुका है। जेल से छूटने के बाद उसने यू ट्यूब से नकली नोट बनाने की तरीका सीख कर बाजार से स्कैनर प्रिंटर मशीन, जीएसएम पेपर खरीदा। जिसका रोमैट्रियल असली नोट जैसा लगता है। बताया स्कैन करने से नकली नोट बिल्कुल असली जैसा लगता है और बाजार में आसानी से चलाया जा सकता है।

एक बार इंक डालने से 8000 कलर और 6000 ब्लैक प्रिंट निकाले जा सकते हैं। इसमें 2000 से 10 रुपये तक का नोट तैयार कर सकते हैं। आरोपी ने बाद में प्रिंटर सुरेश को बेच दिया।

सुरेश को उसने नोट छापने की पूरी ट्रेनिंग दी और इसकी एवज में 17000 में प्रिंटर और 20000 उसे सिखाने की एवज में लिए। आरोपियों के मुताबिक नकली नोट की छपाई सुरेश के फूलों के फार्म में जाकर करते थे। आरोपी पिछले 2 माह से यह धंधा कर रहे थे। सीओ के मुताबिक आरोपित छापे गए नकली नोटों को हरिद्वार और सहारनपुर में चलाते थे। नोट छापने के बाद संजय ने प्रिंटर अमरीश को बेच दिया।

बरामद नकली नोट एक व्यक्ति को देने थे। सीओ ने बताया कि पकड़े गए आरोपी शातिर किस्म के हैं। उनके अपराधिक इतिहास की जानकारी जुटाई जा रही है। संजय के खिलाफ भगवानपुर में भी दो मुकदमे दर्ज हैं। आरोपियों को पकड़ने वाली टीम में थानाध्यक्ष पीडी भट्ट, दारोगा बृजपाल सिंह, संत सिंह, कांस्टेबल करण कुमार, सचिन कुमार आदि मौजूद रहे।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

वैश्विक बाजारों में मजबूती के रुख से बीते सप्ताह तेल-तिलहन की कीमतें सुधरीं

नई दिल्ली। बीते सप्ताह सरकार की ओर से कच्चे पाम तेल पर आयात शुल्क और उपकर में वृद्धि किए जाने के फैसले तथा स्थानीय मांग में आई तेजी के बाद सीपीओ सहित बाकी देशी तेल-तिलहनों की कीमतों में सुधार आया। इस दौरान लगभग सभी तेल-तिलहनों के भाव लाभ दशार्ते बंद हुए। बाजार के जानकार सूत्रों ने कहा कि पिछले सप्ताह सरकार ने (सीपीओ) ने आयात शुल्क और उपकर मिलाकर 5.5 प्रतिशत की वृद्धि की है जिसका बाकी खाद्य तेल कीमतों पर अनुकूल असर हुआ। इसके अलावा कोरोना वायरस का प्रकोप कुछ कम होने से कारोबार फिर से हरकत में आया है जिसकी वजह से विभिन्न खाद्य तेलों की स्थानीय मांग भी बढ़ी है। हरियाणा से गुजरात में बिनौला तेल 10,750 रुपए क्विन्टल के भाव भेजा गया है जो इस तेल की मांग बढ़ने का संकेत देता है। उन्होंने कहा कि देशी सोयाबीन दाना की मांग बढ़ी है क्योंकि सरसों के मुकाबले यह 15 रुपए किलो सस्ता बैठ रहा है और इसका भाव लगभग बिनौला तेल के बराबर आ गया है। महाराष्ट्र के शोलापुर और लातूर के तेल संयंत्रों में सोयाबीन का भाव बढ़कर 4,850 रुपए क्विन्टल हो गया। इसके अलावा सोयाबीन खली की निर्यात मांग में आई तेजी को देखते हुए समीक्षाधीन सप्ताह में सोयाबीन तेल-तिलहनों के भाव में भी सुधार आया। सूत्रों ने कहा कि गुजरात की जगह इस बार मध्य प्रदेश के सोयाबीन साल्वेंट की देश के विभिन्न भागों में आपूर्ति की जा रही है। जिसकी वजह से मध्य प्रदेश में इस स्थानीय तेल का भाव 10,550

रुपये से बढ़कर 10,650 रुपये क्विन्टल हो गया। सूत्रों ने कहा कि कर्नाटक और महाराष्ट्र में सूरजमुखी दाना के भाव न्यूनतम समर्थन मूल्य से 15 से 20 प्रतिशत नीचे हैं, जो किसानों को आगे इसकी खेती करने से हतोत्साहित करेगा। एक समय में देश अपनी जरूरत भर के सूरजमुखी का उत्पादन खुद कर लेता था लेकिन मौजूदा समय में हम काफी मात्रा में इस तेल के आयात पर निर्भर हो गये हैं। सोयाबीन दाना और लूज के भाव पिछले सप्ताहांत के मुकाबले क्रमशः 75 रुपये और 140 रुपये के सुधार के साथ क्रमशः 4,725-4,775 रुपये और 4,625-4,675 रुपये प्रति क्विन्टल पर बंद हुए। सोयाबीन दिल्ली के भाव पिछले सप्ताहांत के स्तर पर पूर्ववत रहा, जबकि सोयाबीन इंदौर और डीगम तेल के भाव क्रमशः 110 रुपये और 200 रुपये की गिरावट के साथ क्रमशः 11,650 रुपये और 10,800 रुपये प्रति क्विन्टल पर बंद हुए। सोयाबीन इंदौर का भाव शुक्रवार से सुधरा है और आगे इसमें सुधार होने की संभावना है। सोयाबीन डीगम में गिरावट का कारण स्थानीय सोयाबीन तेल के उत्पादन में आया सुधार है। पिछले असप्ताहांत सरसों दाना 300 रुपये सुधरकर 6,325-6,375 रुपये क्विन्टल और सरसों दादरी तेल 750 रुपये सुधरकर 12,500 रुपये क्विन्टल तथा सरसों पक्की और कच्ची घानी तेल की कीमतें 90-90 रुपये के सुधार के साथ क्रमशः 1,940-2,050 रुपये और 2,070-2,185 रुपये प्रति टिन पर बंद हुईं। निर्यात गतिविधियों में आई तेजी के बीच मूंगफली दाना सप्ताहांत में 175 रुपए के सुधार के साथ 5,665-5,730 रुपये क्विन्टल और मूंगफली गुजरात तेल 500 रुपये के सुधार के साथ 14,250 रुपए क्विन्टल पर बंद हुआ। मूंगफली सॉल्वेंट रिफाइंड की कीमत भी समीक्षाधीन सप्ताहांत में 90 रुपये सुधरकर 2,270-2,330 रुपये प्रति टिन बंद हुई। आयात शुल्क और उपकर में वृद्धि किये जाने के बाद कच्चे पाम तेल (सीपीओ) का भाव 100 रुपये सुधरकर 9,900 रुपये पर बंद हुआ। रिफाइंड पामोलिन दिल्ली का भाव 11,400 रुपये पर अपरिवर्तित बना रहा जबकि पामोलीन कांडला (बिना जीएसटी) 50 रुपये सुधरकर 10,650 रुपए क्विंटल हो गया। समीक्षाधीन सप्ताहांत में बिनौला तेल भी 100 रुपए बढ़कर (बिना जीएसटी के) 10,500 रुपए क्विंटल हो गया।

टेलीग्राम बना दुनिया का सबसे ज्यादा डाउनलोड किया जाने वाला ऐप

मुंबई। इंस्टेंट मैसेजिंग सॉफ्टवेयर टेलीग्राम सबसे ज्यादा डाउनलोड होने वाला ऐप बन गया है। इसने टिकटॉक, फेसबुक और व्हाट्सएप जैसे ऐप्स को पीछे छोड़ दिया है।

डेटा एनालिटिक्स फर्म सेंसर टावर की रिपोर्ट के मुताबिक, जनवरी 2021 में टेलीग्राम दुनियाभर का मोस्ट डाउनलोडेड नॉन-गेमिंग ऐप रहा है। माना जा रहा है कि टेलीग्राम को व्हाट्सऐप की नई पॉलिसी को लेकर हुए विवाद का सीधा फायदा मिला है। रिपोर्ट के मुताबिक जनवरी 2021 में टेलीग्राम को 6.3 करोड़ से ज्यादा डाउनलोड्स मिले हैं। इसे सबसे ज्यादा भारत में (24 फीसदी) डाउनलोड किया गया है। यह जनवरी 2020 के मुकाबले 3.8 गुना है। वहीं इंडोनेशिया के यूजर्स टेलीग्राम डाउनलोड करने के मामले में दूसरे नंबर पर रहे हैं। लिस्ट में दूसरा सबसे ज्यादा डाउनलोड होने वाला ऐप टिकटॉक रहा, जिसके ठीक बाद सिग्नल और फेसबुक ने अपनी जगह बनाई है। वॉट्सऐप तीसरे से पांचवें स्थान पर पहुंच गया है। सेंसर टॉवर के अनुसार दिसंबर 2020 में टिकटॉक सबसे ज्यादा डाउनलोड किया जाने वाला ऐप था। इस दौरान टेलीग्राम टॉप-5 में भी नहीं था। वॉट्सऐप के पॉलिसी विवाद ने यूजर्स को जनवरी के महीने में टेलीग्राम पर स्विच करने के लिए पुश दिया। जिसके बाद वॉट्सऐप दिसंबर 2020 में तीसरे स्थान से फिसलकर जनवरी 2021 में पांचवें स्थान पर आ गया।

संक्षिप्त समाचार

सरकार ने एमएसपी पर खरीदा 18 फीसदी अधिक धान

नई दिल्ली। तीन नए कृषि सुधार कानूनों के खिलाफ दिल्ली की विभिन्न सीमाओं पर किसानों के जारी विरोध प्रदर्शन के बीच चालू विपणन सत्र में अब तक 1.16 लाख करोड़ रुपए के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर धान की खरीद 18 फीसदी बढ़कर 614.25 लाख टन की हो चुकी है। एक सरकारी बयान में कहा गया कि चालू खरीफ बाजार सत्र 2020-21 में सरकार एमएसपी की मौजूदा योजनाओं के अनुसार किसानों से एमएसपी मूल्य पर खरीफ 2020-21 फसलों की खरीद जारी रखे हुए है। जैसा कि पिछले सत्रों में किया गया था। गौरतलब है कि खरीफ विपणन सत्र अक्टूबर से शुरू होता है। सरकार ने पांच फरवरी तक 614.27 लाख टन धान की खरीद की है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में 521.93 लाख टन की खरीद से 17.69 प्रतिशत अधिक है। बयान में कहा गया। चालू खरीफ विपणन सत्र में 1,15,974.36 करोड़ रुपए के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के खरीद अभियान से लगभग 85.67 लाख किसान पहले ही लाभान्वित हो चुके हैं। धान की अभी तक की 614.27 लाख टन की कुल खरीद में से, पंजाब ने अकेले 202.82 लाख टन का योगदान दिया है, जो कुल खरीद का 33.01 फीसदी हिस्सा है। केंद्र राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम और अन्य कल्याणकारी योजनाओं के तहत अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए गेहूं व चावल आदि की खरीद करता है। यह, बाजार की कीमतें एमएसपी से नीचे आने पर दाल, तिलहन, मोटे अनाज और कपास जैसे अन्य फसलों की भी खरीद करता है। हजारों किसान, जो मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के हैं। दिल्ली-सीमाओं पर दो महीने से अधिक समय से विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। उनकी मांग है कि पिछले साल सितंबर में लागू किए गए तीन कृषि कानूनों को रद्द किया जाए।

कंपनियों के तिमाही परिणाम तय करेंगे बाजार की दिशा: विश्लेषक

नई दिल्ली। शेयर बाजारों की दिशा इस सप्ताह कंपनियों के तिमाही परिणामों तथा वैश्विक संकेतकों से तय होगी। विश्लेषकों ने कहा कि इस सप्ताह कोई बड़ा आर्थिक घटनाक्रम नहीं है, इसलिए कंपनियों के तिमाही परिणाम और वैश्विक संकेतक बाजार को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि बजट और रिजर्व बैंक की मौद्रिक समीक्षा जैसे बड़े घटनाक्रम बीते चुके हैं। ऐसे में अब निवेशकों की धारणा फिर से बुनियादी कारक तय करेंगे। बजट और कंपनियों के तिमाही नतीजे अच्छे रहने से दीर्घावधि की दृष्टि से बाजार की धारणा सकारात्मक हुई है। हालांकि विश्लेषकों का मानना है कि बीते सप्ताह जोरदार उछाल के बाद इस सप्ताह बाजार में कुछ करेक्शन आ सकता है। किसी बड़े घटनाक्रम के अभाव में इस सप्ताह कंपनियों के तिमाही नतीजों की वजह से शेयर विशेष गतिविधियां देखने को मिल सकती हैं। सप्ताह के दौरान बीपीसीएल, एनएमडीसी, धनलक्ष्मी बैंक, टाटा स्टील, बैंक ऑफ इंडिया, गेल, एचसीएल इन्फोसिस्टम्स और अशोक लेलैंड के तिमाही नतीजे आएंगे। बाजार के जानकारों ने कहा कि चूंकि प्रमुख घटनाक्रम पीछे छूट चुके हैं, अब निवेशकों का रुख फिर से बुनियादी कारक और वैश्विक घटनाक्रम तय करेंगे। इस सप्ताह बाजार में कुछ करेक्शन आ सकता है। हमारा मानना है कि आगे चलकर बाजार का यह रुख कायम रहेगा। बाजार की दिशा कंपनियों के वित्तीय नतीजों जैसे बुनियादी कारकों से तय होगी। बजट के साथ कंपनियों के भविष्य के मजबूत अनुमानों से दीर्घावधि में बाजार के सकारात्मक ढांचे की पुष्टि होती है। सप्ताह के दौरान शुक्रवार को औद्योगिक उत्पादन (आईआईपी) तथा मुद्रास्फीति के आंकड़े आने है।

सेंसेक्स की प्रमुख 10 कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 5.13 लाख करोड़ बढ़ा

नई दिल्ली। व्यापक रूप से सकारात्मक बाजार रुख के बीच बीते सप्ताह सेंसेक्स की प्रमुख 10 कंपनियों का बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) सामूहिक रूप से 5,13,532.5 करोड़ रुपए बढ़ गया। इस दौरान बैंकों के बाजार पूंजीकरण में सबसे अधिक बढ़त देखने को मिली। सेंसेक्स की कंपनियों में एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण सबसे अधिक 1,13,516.92 करोड़ रुपए बढ़कर 8,79,735.51 करोड़ रुपए, भारतीय स्टेट बैंक का बाजार मूल्यांकन 99,063.86 करोड़ रुपए बढ़कर 3,50,781.86 करोड़ रुपए, एचडीएफसी की बाजार हैसियत 61,836.61 करोड़ रुपए बढ़कर 4,89,877.33 करोड़ रुपए, आईसीआईसीआई बैंक की 53,606.61 करोड़ रुपए की वृद्धि के साथ 4,24,379.96 करोड़ रुपए, कोटक महिंद्रा बैंक का बाजार पूंजीकरण 53,395.91 करोड़ रुपए बढ़ोतरी के साथ 3,92,741.04 करोड़ रुपए, रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन 51,254.37 करोड़ रुपए बढ़कर 12,19,708.39 करोड़ रुपए, बजाज फाइनेंस के बाजार पूंजीकरण 48,375.71 करोड़ रुपए बढ़कर 3,33,758.06 करोड़ रुपए, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज की बाजार हैसियत 16,942.01 करोड़ रुपए बढ़कर 11,85,021.85 करोड़ रुपए, इन्फोसिस का बाजार मूल्यांकन 13,907.56 करोड़ रुपए के उछाल के साथ 5,41,947.58 करोड़ रुपए और हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड का 1,632.94 करोड़ रुपए बढ़कर 5,33,431.50 करोड़ रुपए रहा।

फरवरी के पहले सप्ताह में बिजली की मांग पिछले साल की तुलना में बढ़ी

नई दिल्ली। देश की व्यस्त समय की बिजली की मांग या दिन में सर्वाधिक आपूर्ति फरवरी के पहले सप्ताह में ऊंचे स्तर पर बनी हुई है। फरवरी के पहले सप्ताह में शुक्रवार तक बिजली की आपूर्ति पिछले साल की इसी अवधि के 176.38 गीगावॉट के रिकॉर्ड स्तर को पार कर गई है। इससे पता 6चलता है कि देश में बिजली का उपभोग बढ़ रहा है। बिजली मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, एक फरवरी को पूरी की गई व्यस्त समय की बिजली की मांग 187.71 गीगावॉट रही। दो फरवरी को यह 188.15 गीगावॉट, तीन फरवरी को 188.11 गीगावॉट, चार फरवरी को 183.81 गीगावॉट और पांच फरवरी को 184.34 गीगावॉट रही। इस महीने व्यस्त समय की बिजली की मांग फरवरी, 2020 में पूरी की गई मासिक रिकॉर्ड बिजली की मांग 176.38 गीगावॉट से अधिक रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि इन आंकड़ों से पता चलता है कि इस साल फरवरी महीने में बिजली के उपभोग में वृद्धि ऊंचे स्तर पर रहेगी।

उनका कहना है कि यदि महीने के पहले पांच दिन में बिजली की आपूर्ति एक साल पहले के मासिक रिकॉर्ड स्तर से अधिक रहती है, तो चालू महीने में बिजली की मांग कहीं ऊंचे स्तर पर रहेगी। व्यस्त समय की बिजली की मांग 30 जनवरी को अपने सर्वकालिक उच्चस्तर 189.64 गीगावॉट पर पहुंची थी। इससे पहले 28 जनवरी को यह 188.45 गीगावॉट के उच्चस्तर पर रही थी। पिछले महीने बिजली मंत्री आर के सिंह ने भरोसा जताया था कि बिजली की मांग जल्द 200 गीगावॉट के आंकड़े पर पहुंच जाएगी। सिंह ने कहा था, ''28 जनवरी को बिजली की मांग और आपूर्ति 1,88,452 मेगावॉट के नए उच्चस्तर पर पहुंची है।

वीवो कर रही नए स्मार्टफोन एस9 5जी पर काम

चीन में 6 मार्च को कर सकती है लॉन्च

नई दिल्ली। चाइनीज कंपनी वीवो अपनी एस-सीरीज में एक नए स्मार्टफोन वीवो एस9 5जी पर काम कर रही है। वीवो चीन में 6 मार्च को एस9 स्मार्टफोन लॉन्च कर सकती है। यह खुलासा हुआ है एक लेटेस्ट लीक से। जाने-माने टिप्स्टर डिजीटल चैट स्टेशन ने आने वाले हैंडसेट के कुछ स्पेसिफिकेशन्स का खुलासा किया है। लीक से पता चलता है कि यह जानकारी वीवो एस9 5जी स्मार्टफोन से जुड़ी है। हाल ही में वीवो के एक फोन को मॉडल नंबर वी2072ए के साथ गूगल प्ले कंसोल पर देखा गया था। इस लिस्टिंग से खुलासा हुआ था कि वीवो के आने वाले फोन में डाइमेंसिटी 1100 (एमटी6891 मॉडल नंबर) चिपसेट होगा। अनुमान के मुताबिक, डिवाइस को

चीनी मार्केट में वीवो एस9 5जी नाम से लॉन्च किया जा सकता है। लिस्टिंग से फोन में 1080 x 2400 पिक्सल फुलएचडी+ रेजॉलूशन डिस्प्ले, 12 जीबी रैम व ऐंड्रॉयड 11 ओएस होने का खुलासा हुआ था। गूगल प्ले कंसोल पर देखी गई फोन की तसावीर से पता चला था कि इसमें आगे की तरफ दो फ्रंट कैमरों के लिए एक चौड़ी नॉच दी जाएगी। डिजिटल चैट स्टेशन से खुलासा हुआ है कि कथित वीवो एस9 5जी में 90 हट्र्ज. रिफ्रेश रेट वाली ओलेड डिस्प्ले होगी। वीवो ने इससे पहले एस-सीरीज के स्मार्टफोन्स में एमोलेड पैनल दिया है। हालांकि, अब ऐसा लगता है कि आने वाली एस-सीरीज के हैंडसेट को हाई-रिफ्रेश रेट सपॉर्ट करने वाली स्क्रीन के साथ लाया जाएगा। लीक के मुताबिक, फोन में 44 मेगापिक्सल सेल्फी कैमरा होगा। लेकिन अभी सेकंडरी सेल्फी लेंस के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

वीवो एस9 5जी में रियर पर 64 मेगापिक्सल प्राइमरी कैमरा दिया जाएगा। हैंडसेट को पावर देने के लिए 4000एमएएच बैटरी दी जा सकती है। एक चीनी टिप्स्टर ने हाल ही में दावा किया था कि डाइमेंसिटी 1100 वाले वीवो एस9 5जी में 6.44 इंच नॉच डिस्प्ले दी गई है। इसके अलावा फोन में 44 मेगापिक्सल ड्यूल सेल्फी कैमरा सेटअप होने का भी पता चला था। हैंडसेट को 3सी सर्टिफिकेशन प्लैटफॉर्म पर भी देखा गया था जिससे 33वाट रैपिड चार्जर होने का पता चला था।

पेट्रोल और डीजल की कीमत स्थिर

मुंबई। घरेलू बाजार में ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने लगातार दूसरे दिन रविवार को पेट्रोल और डीजल के दाम में कोई बदलाव नहीं किया है। इसके 2 दिन पहले दिल्ली में पेट्रोल-डीजल के दाम 30-30 पैसे बढ़ गए थे। दिल्ली में पेट्रोल 86.95 रुपए प्रति लीटर और डीजल 77.13 रुपए प्रति लीटर है। ये दाम ऑल टाइम हाई पर हैं। दिल्ली में पेट्रोल-डीजल के दाम में कोई बदलाव नहीं हुआ है। पेट्रोल कल के भाव में 86.95 रुपए प्रति लीटर डीजल 77.13 रुपए प्रति लीटर हैं। मुंबई में भी पेट्रोल-डीजल के दाम में बदलाव नहीं हुआ है। पेट्रोल के दाम 93.49 रुपए प्रति लीटर और डीजल के दाम 83.99 रुपए प्रति लीटर हैं। कोलकाता में भी पेट्रोल-डीजल के दाम में वृद्धि नहीं हुई है। पेट्रोल के दाम 88.30 रुपए प्रति लीटर और डीजल के दाम 80.71 रुपए प्रति लीटर हैं। चेन्नई में भी पेट्रोल-डीजल के दाम में इजाफा नहीं हुआ है। पेट्रोल के दाम 89.39 रुपए प्रति लीटर और डीजल के दाम 82.33 रुपए प्रति लीटर हैं। इसी तरह बेंगलुरु में भी पेट्रोल-डीजल के दाम में बढ़ोतरी नहीं हुई है। पेट्रोल के दाम 89.85 रुपए प्रति लीटर और डीजल के दाम 81.76 रुपए प्रति लीटर हैं।

रियलमी एक्स7 प्रो पर जबर्दस्त ऑफर

नई दिल्ली। भारत में रियलमी ने अपने दो नए स्मार्टफोन- रियलमी एक्स7 और रियलमी एक्स7 प्रो को लॉन्च कर दिया है। फोन की सेल अगले हफ्ते शुरू होगी। रियलमी एक्स प्रो की कीमत 29,999 रुपये है। वहीं, रियलमी एक्स7 की कीमत 19,999 रुपये (6जीबी) और 21,999 रुपये (8जीबी) है। अगर आप भी रियलमी एक्स सीरीज के इन नए स्मार्टफोन को खरीदने का मन बना रहे हैं, तो कंपनी आपके लिए एक खास स्कीम लेकर आई है। इस स्कीम का नाम रियल अपग्रेड प्रोग्राम है। इसके तहत यूजर असल कीमत के 70 प्रतिशत देकर फोन खरीद सकते हैं। कंपनी के अपग्रेड

प्रोग्राम के तहत आप 29,999 रुपये वाले रियलमी एक्स प्रो को 20,999 रुपये और रियलमी एक्स7 के 6जीबी रैम वाले वेरियंट को 19,999 रुपये की बजाय 13,999 रुपये में खरीद सकते हैं। रियलमी इस खास स्कीम को फ्लिपकार्ट के साथ पार्टनरशिप में लेकर आई है। अपग्रेड प्रोग्राम की शुरूआत 10 फरवरी से होगी। इसमें यूजर्स को चेकआउट के समय फोन की कीमत का केवल 70 प्रतिशत की देना होगा। फोन खरीदने के एक साल बाद अगर यूजर इस फोन को अपने पास रखना चाहेंगे तो उन्हें बाकी 30 प्रतिशत का भुगतान करना होगा। खास बात है कि अगर आप उस वक्त अपने मौजूदा रियलमी एक्ससीरीज डिवाइस को लेटेस्ट लॉन्च हुए डिवाइस से अपग्रेड करना चाहते हैं, तो आपको इसके लिए आपको मौजूदा फोन कंपनी को वापस करने के साथ ही नए फोन की कीमत का 70 प्रतिशत देना होगा। ऐसा करने पर आप हर साल नए रियलमी डिवाइस को 30 प्रतिशत की छूट के साथ खरीद सकते हैं। कंपनी ने स्मार्टफोन्स में इन-बिल्ट लॉक की व्यवस्था की है। ऐसे में अगर आप एक साल बाद फोन को अपग्रेड नहीं करते हैं या बाकी के 30 प्रतिशत का पेमेंट नहीं करते हैं, तो आपका फोन ऑटोमैटिकली लॉक हो जाएगा। इसके साथ ही अगर एक साल बाद आप अपने डिवाइस को अपग्रेड करना चाहते हैं, तो आपको मौजूदा स्मार्टफोन अच्छी वर्किंग कंडिशन में बॉक्स, चार्जर और ऐक्सेसरीज के साथ वापस करना होगा। इस ऑफर के बारे में कंपनी का कहना है कि वह चाहती है कि यूजर्स को रियलमी एक्स सीरीज के फ्लैगशिप डिवाइस का शानदार एक्सपीरियंस मिलना जारी रहे और इसके लिए उनकी जेब पर भी ज्यादा असर न पड़े। यह ऑफर खास फ्लिपकार्ट पर उपलब्ध है। इस ऑफर का फायदा सबसे ज्यादा उन यूजर्स को होगा जो हर साल अपने स्मार्टफोन को अपग्रेड करते हैं। कंपनी ने इस स्कीम में खुद को नुकसान से बचाने के लिए डिवाइसेज में खास इंतजाम किए हैं।

एमजी झेडएसईवी 2021 आठ को होगी लांच

नई दिल्ली। भारत में ऑटोमोबाइल सेक्टर की कंपनी एम मोटर्स 8 फरवरी को एमजी झेडएसईवी 2021 लॉन्च करने जा रही है। कंपनी ने अभी तक इस कार के बारे में कोई डीटेल शेयर नहीं की है। कंपनी के यूके मॉडल में हेक्सागॉनल फ्रंट ग्रिल दिए गए हैं। इसके अलावा इस कार में नए बंपर, एलईडी हेडलाइट लैम्प्स और इंटिग्रेटेड एलईडी डीआरएलएस (डेटाइम रनिंग लैंप्स) दिए गए हैं। कार में नई स्टाइलिंग के साथ अलॉय वील्ज दिए गए हैं। इस कार को 5 तरीके चार्ज किया जा सकता है। इसके लिए ग्राहकों को ऑनबोर्ड चार्जिंग केबल, एस फास्ट चार्जर, डीलरशिप्स पर 50 केडब्ल्यू डीसी सुपर फास्ट चार्जर, एक्सटेंडेड और चार्ज ऑन द गो जैसे विकल्प मिलते हैं। जेडएस ईवी में 44.5 केडब्ल्यूएच बैटरी पैक है। एक बार फुल चार्ज होने पर यह इलेक्ट्रिक एसयूवी 340 किलोमीटर तक चलेगी। इस लिथियम-आयन बैटरी को 50 केडब्ल्यू डीसी चार्जर से 40 मिनट में 80 पर्सेंट चार्ज किया जा सकता है, जबकि स्टैंडर्ड 7.4 केडब्ल्यू चार्जर से चार्ज करने में करीब 7 घंटे का समय लगेगा। कंपनी इस इलेक्ट्रिक एसयूवी के साथ 7.4 केडब्ल्यूएच चार्जर भी देगी। एमजी की इस इलेक्ट्रिक एसयूवी का मोटर 141 बीएचपी की पावर और 353 एनएम पीक टॉर्क जेनरेट करता है। कंपनी का दावा है कि जेडएस ईवी मात्र 8 सेकंड में 0-100 किलोमीटर प्रति घंटा की स्पीड पकड़ लेगी। इसकी बैटरी वॉटर और डस्ट प्रूफ है। कंपनी ने कहा है कि जेडएस ईवी की भारत में 1 लाख किलोमीटर से ज्यादा टेस्टिंग की गई है। कार के न्यू जेनेरेशन मॉडल में कंपनी अपडेटेड इंटीरियर और एक्स्टीरियर दे सकती है। इसके अलावा कंपनी कार पावरट्रेन में भी बदलाव कर सकती है।

आठ को लॉन्च होगा मी 11 स्मार्टफोन

नई दिल्ली। चाइनीज कंपनी द्वारा बनाया गया मी 11 स्मार्टफोन 8 फरवरी को लॉन्च होगा। इसके लांच से पहले ही कीमत का खुलासा हो गया है। शाओमी के इस फ्लैगशिप फोन को दिसंबर में स्नैपड्रैगन 888 चिपसेट के साथ सबसे पहले लॉन्च किया गया था। मी 11 स्मार्टफोन में 120 हट्र्ज. एमोलेड डिस्प्ले, 108एमपी ट्रिपल कैमरे, 55वाट फास्ट चार्जिंग सपॉर्ट जैसे फीचर्स दिए गए हैं। ग्लोबल लॉन्च से पहले, 91 मोबाइल्स की एक रिपोर्ट में टिप्स्टर सुधांशु के हवाले से यूरोपीय मार्केट की कीमत का खुलासा किया गया है। मी 11 स्मार्टफोन के बेस मॉडल यानी 8 जीबी रैम व 128 जीबी स्टोरेज की कीमत 799 यूरो (करीब 70 हजार रुपये) होगी। वहीं 8 जीबी रैम व 256 जीबी स्टोरेज वेरियंट की कीमत 899 यूरो (करीब 78,500 रुपये) है। बता दें कि मी 11 के बेस मॉडल की कीमत चीन में 3,999 युआन (करीब 45,000 रुपये) और 12 जीबी रैम व 256 जीबी स्टोरेज वेरियंट की कीमत 4,699 युआन (करीब 52,900 रुपये) है। खबरों के मुताबिक, ग्लोबल मार्केट में 12 जीबी रैम वेरियंट लॉन्च नहीं किया जाएगा। शाओमी मी 11 के ग्लोबल वेरियंट में सभी स्पेसिफिकेशन्स चीन में लॉन्च हुए वेरियंट वाले ही होने की उम्मीद है। हैंडसेट ऐंड्रॉयड 11 बेस्ड एमआईयूआई 12.5 स्किन के साथ आता है। मी 11 में ट्रिपल रियर कैमरा सेटअप दिया गया है जो 108 मेगापिक्सल, 13 मेगापिक्सल वाइड-ऐंगल और 5 मेगापिक्सल टेलिफोटो लेंस के साथ आता है। स्मार्टफोन में 20 मेगापिक्सल फ्रंट कैमरा दिया गया है। हैंडसेट में 50वाट वायरलेस और 50वाट वायर्ड चार्जिंग सपॉर्ट के साथ 4500 एमएएच बैटरी दी गई है। याद दिला दें कि मी 11 में 6.81 इंच ई4 एमोलेड डिस्प्ले है जिसका रेजॉलूशन क्यूएचडी+, रिफ्रेश रेट दिया गया है। फोन की सुरक्षा के लिए गोरिल्ला ग्लास विक्टस दिया गया है। हैंडसेट में फ्लैगशिप क्वालकॉम स्नैपड्रैगन 888 चिपसेट दिया गया है।

पुजारा , ऋषभ ने भारतीय टीम को संभाला, 257/ 6, इंग्लैंड पहली पारी 578 रन

चेन्नई। इंग्लैंड के साथ पहले टेस्ट मैच में भारतीय टीम अच्छी शुरूआत नहीं कर पायी है। मैच के तीसरे दिन भारतीय टीम ने अपनी पहली पारी में 257 रनों पर ही छह विकेट गंवा दिये। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक आर अश्विन 8 और वाशिंगटन सुंदर 33 रन बनाकर खेल रहे थे। वहीं इससे पहले मेहमान टीम इंग्लैंड ने अपनी पहली पारी में 578 रन बनाये थे। इस प्रकार भारतीय टीम अभी भी 321 रनों से पीछे है और अभी उसे फॉओआन भी बचाना है। इंग्लैंड के विशाल स्कोर का पीछा करते हुए भारतीय टीम की शुरूआत अच्छी नहीं रही। सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा 6 रन ही बना पाये। रोहित को जोफ्रा आर्चर ने चौथे ओवर की तीसरी गेंद पर जोस बटलर के हाथों कैच करा दिया।

इसके बाद आर्चर ने इंग्लैंड को दूसरी सफलता दिलाते हुए ओपनर शुभमन गिल का विकेट लिया। भारत का स्कोर 50 के पार ही हुआ था कि आर्चर की 10वें ओवर की दूसरी गेंद पर गिल जेम्स एंडरसन के हाथों कैच आउट होकर पेवेलियन लौट गये। शुभमन ने 28 गेंदों का सामना करते हुए 5 चौकों की मदद से 29 रन बनाए।

इसके बाद चेतेश्वर पुजारा और ऋषभ पंत ने टीम को संभालने का प्रयास किया। ऋषभ ने आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए 91 रन बनाये पर वह शतक नहीं लगा पाये जबकि पुजारा ने 73 रनों की अच्छी पारी खेली।

डॉम ने चौथा विकेट ऋषभ का लिया उस समय वह 91 रन पर बल्लेबाजी कर रहे थे। ऋषभ ने डॉम की 57वें ओवर की चौथी गेंद पर छक्का लगाने की कोशिश की और जैक लीच के हाथों कैच आउट हो गए। डॉम ने 88 गेंदों पर 91 रन की पारी खेली जिसमें 9 चौके और 5 छक्के शामिल थे। ऋषभ और पुजारा के बीच पांचवें

● विराट, रोहित और रहाणे विफल रहे

विकेट के लिए 119 रन की साझेदारी से भारतीय टीम कुछ संभली। जब भारतीय टीम का स्कोर 192 था तो डॉम की ही गेंद पर पुजारा रूट के हाथों कैच आउट हो गए और ये साझेदारी टूट गई। पुजारा ने 143 गेंदों पर 11 चौकों की मदद से 73 रन बनाए।

उपकप्तान आजिंक्य रहाणे आज चल नहीं पाए और मात्र एक रन पर ही अपना विकेट गंवा बैठे। रहाणे डॉम की गेंद पर रूट के हाथों कैच आउट हुए। ये डॉम का दूसरा विकेट था।

वहीं कप्तान विराट कोहली भी अच्छी वापसी नहीं कर पाये और 48 गेंदों पर केवल 11 रन बनाकर डॉम की गेंद पर ओली पोप के हाथों कैच आउट हुए। इंग्लैंड की ओर से डॉम ने चार जबकि आर्चर ने दो विकेट लिए। इससे पहले आज सुबह आठ विकेट पर

555 रनों से आगे खेलते हुए इंग्लैंड ने तीसरे दिन 23 रन जोड़े और अपने बचे हुए दोनो विकेट गंवा दिये। जेम्स एंडरसन आउट होने वाले अंतिम बल्लेबाज रहे। वो 1 रन बनाकर अश्विन की गेंद पर आउट हुए। वहीं, लीच 14 रनों पर नाबाद रहे। टीम इंडिया की ओर से जसप्रीत बुमराह और आर अश्विन ने 3-3 विकेट लिए। वहीं, शाहबाज नदीम और ईशांत शर्मा ने 2-2 विकेट लिए। इंग्लैंड की ओर से जो रूट ने 218, सिबली ने 87 और स्टोक्स ने 82 रन बनाये। टीम इंडिया को नौवीं सफलता मिली। जसप्रीत बुमराह ने डॉम बैस को एलबीडब्लू आउट किया है। बैस 34 रन बनाकर आउट हुए हैं। इसी के साथ बुमराह ने अपना तीसरा विकेट लिया।

संक्षिप्त समाचार

किसान आंदोलन पर बातचीत के पक्ष में कपिल

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव ने इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में भारतीय टीम से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद की है। इसके साथ ही कपिल ने किसान आंदोलन पर कहा कि वह इस मामले में किसानों और सरकार के बीच बातचीत के पक्ष में हैं। कपिल ने अपने एक ट्विट में लिखा, मैं बस भारत से प्यार करता हूं, मैं चाहता हूं कि किसानों और सरकार के बीच यह मामला जल्द समाप्त हो जाए। इस मामले पर हम विशेषज्ञों को बात करने दें। एक बात सबसे अहम है और वो है हमारा तिरंगा। इससे पहले किसान आंदोलन को लेकर विदेश हस्तियों की बयान बाजी के बीच ही भारतीय टीम के कप्तान विराट कोहली, रोहित शर्मा, सचिन तेंदुलकर और रवि शास्त्री ने केंद्र सरकार के समर्थन में ट्वीट किए थे। सभी सेलिब्रेटिज ने विदेशी पॉपस्टार रिहाना और ग्रेटा थुनबर्ग पर भारत के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप का आरोप लगाते हुए सरकार का समर्थन किया था।

गूगल पर 120 साल के दिखे शास्त्री

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच रवि शास्त्री को लेकर सर्च इंजन गूगल ने एक ऐसी गलती कर दी है। जिससे उसके कामकाज पर सवाल उठने लगे हैं। गूगल पर रवि शास्त्री सर्च करने पर उनकी उम्र 120 साल दिखाई दे रही थी। इसके अलावा उनका जन्म साल 1900 का दिख रहा था हालांकि गूगल की अब इसे ठीक कर दिया है। शास्त्री की उम्र 58 साल है। शास्त्री ने अपने करियर के दौरान 80 टेस्ट और 150 एकदिवसीय मैच खेले हैं। शास्त्री ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में करीबा 7000 रन बनाए हैं। वहीं इसके साथ-साथ ही उन्होंने 280 विकेट भी लिए हैं। शास्त्री ने 17 साल की उम्र में मुंबई की ओर से रणजी में पदार्पण किया था। शास्त्री ने 21 फरवरी 1981 को वेलिंगटन में डेब्यू किया था। इसके दो साल बाद ही वह टीम इंडिया की ओर से टेस्ट में पारी की शुरूआत करने लगे। शास्त्री ने टेस्ट क्रिकेट में बतौर ओपनर बेहतरीन प्रदर्शन किया। उन्होंने 17 मैचों में 44.04 की औसत से 1101 रन बनाये हैं। क्रिकेट से संन्यास के बाद उन्होंने क्रिकट कमेंट्री से लोकप्रियता हासिल की। 2017 में भारतीय टीम का मुख्य कोच बनाया गया।

नयी खेलो इंडिया योजना ला रहा खेल मंत्रालय

नई दिल्ली। केन्द्रीय खेल मंत्रालय जल्द ही नयी खेलो इंडिया योजना लाने जा रहा है। खेल मंत्रालय के अनुसार इस योजना को वित्त मंत्रालय की अनुमति के बाद अधिसूचित किया जाएगा। 'खेलो इंडिया योजना' विषय पर शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल मंत्रालयों संबंधी एक संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट के अनुसार, विभाग को पहले आवंटित निधि का सही तरीके से उपयोग करने के ठोस प्रयास करने चाहिए और फिर पर्याप्त संसाधनों को प्राप्त करने की पहल करनी चाहिए। इस समिति ने सुझाव दिया कि विभाग को खेल के क्षेत्र में संसाधन हासिल करने के लिये निजी, कारपोरेट क्षेत्र में सम्पर्क करना चाहिए। रिपोर्ट के अनुसार समिति का यह भी मानना है कि नयी खेलो इंडिया योजना को सांसद निधि योजना के साथ जोड़े जाने की जरुरत है। इस रिपोर्ट में समिति की सिफारिशों पर सरकार की ओर से कहा गया है कि सांसद निधि योजना के साथ खेलो इंडिया योजना को जोड़ने की सिफारिश पर संशोधन के समय विधिवत जांच की जायेगी। इसके साथ ही कहा गया है कि वर्तमान खेलो इंडिया योजना 31 मार्च 2021 तक प्रभावी रहेगी। नयी खेलो इंडिया योजना को लेकर टिप्पणियां मांगी गई थी। ये टिप्पणियां प्राप्त होने पर नयी खेलो इंडिया योजना हेतु व्यय वित्त आयोग ज्ञापन को वित्त मंत्रालय के समक्ष अनुमति के लिये पेश की जाएगी और इसके बाद ही योजना को अधिसूचित किया जायेगा।''

चीन में शीतकालीन ओलंपिक खेलों के बहिष्कार की अपील खारिज

टोक्यो। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने चीन में अगले साल होने वाले शीतकालीन ओलंपिक खेलों के बहिष्कार की अपील ठुकरा दी है। इससे पहले अल्पसंख्यकों के मानव अधिकार उल्लंघनों की रिपोर्टों को देखते हुए 180 समूहों के एक गठबंधन ने बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक खेलों का बहिष्कार करने की अपील की थी। शीतकालीन खेलों का उद्घाटन चार फरवरी 2022 को होगा तथा कोरोना वायरस महामारी के बावजूद इन खेलों को आयोजित करने की योजना है। इस गठबंधन में तिब्बती, उइगर, मंगोलियाई और हांगकांग से जुड़े समूह शामिल हैं। गठबंधन के सदस्यों ने विभिन्न सरकारों को पत्र भेजकर ओलंपिक का बहिष्कार करने की अपील की थी जिससे चीन सरकार पर दबाव डाला जा सके। इन समूहों ने इससे पहले अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) से चीन की जगह किसी अन्य देश को खेलों की मेजबानी सौंपने का भी आग्रह किया था। वहीं आईओसी ने कहना है कि वह केवल एक खेल संस्था है और उसका काम राजनीति करना नहीं है।

यूरो रैपिड शतरंज मे खेलते नजर आयेंगे विदित

नासिक। भारत के विदित गुजराती चैम्पियन शतरंज टूर ऑनलाइन चैंपियनशिप के तीसरे दौर में ओपेरा यूरो रैपिड शतरंज में खेलेंगे। इस प्रतियोगिता मे 16 खिलाड़ी राउंड रॉबिन आधार पर पहले तीन दिन मे 15 राउंड खेलेंगे। इसका आशय यह है कि हर दिन 5 राउंड का मुकाबला होगा। पहले दिन की शुरूआत में विदित अमेरिका के सैम शंकलंद के साथ खेलेंगे जबकि विश्व चैम्पियन मेगनस कार्लसन अमेरिका के वेसली सो का सामना करेंगे। वहीं फ्रांस के एमवीएल के सामने रूस के डुबोव, अर्मेनिया के अरोनियन के सामने चीन के डिंग होंगे जबकि पिछले टूनार्मेंट के विजेता अजरबैजान के रद्जाबोव का मुकाबला जर्मनी के ब्लूबम से होगा। ओपेरा यूरो रैपिड टूनार्मेंट में इस बार विदित के सामने शीर्ष 8 मे जगह बनाने का एक और अवसर रहेगा।

जिला स्तरीय लेदर बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता का आगाज आज से

पहला मैच पत्रकार जूनियर व अधिवक्ता एकादश वहीं दूसरा जीएम इलेवन व लालबर्रा आरसीसी के मध्य खेला जाएगा

भोपाल। मध्य प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ एवं आरसीसी क्लब के संयुक्त तत्वाधान में स्वर्गीय हनी विश्वास एवं स्वर्गीय बीएस पालीवाल की स्मृति में जिला स्तरीय लेदर बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता का आगाज आज दिनांक 7 फरवरी को बालाघाट के उत्कृष्ट विद्यालय के खेल मैदान में किया जाएगा।

पहला मैच सुबह 8 बजे से पत्रकार जूनियर व अधिवक्ता एकादश के मध्य खेला जाएगा और वही दूसरा मैच 12बजे से जीएम इलेवन व लालबर्रा आरसीसी के मध्य खेला जाएगा। इस मैच का प्रसारण क्रिक हीरोज एप्लीकेशन के माध्यम से लाइव स्कोरिंग कि जाएगी। आयोजन समिति के अध्यक्ष इंद्रजीत भोज, ओमेंद्र बिसेन, मयूर वाहने, मधुकर हरपाल, राजेश नगपुरे, मोनू चतुर्मोहता, नईम खान, ललित प्रधान, शंकर कनौजिया, जहरलाल अंगारे, रजनीश राहंगडाले, संदीप भीमटे, राहुल सोनी, राजू राजूलकर, दिनेश वासनिक, शब्बीर भाई, रोहित, पुष्पराज, हर्षित फुलसुंगे, गब्बर, आकाश श्रीवास्तव, अकाश राजपूत, शुभम मेश्राम, प्रमोद कनौजिया, नितिन ठाकरे, शौर्य देशमुख ,कार्तिक फुलसुंगे, प्रदीप राहंगडाले, शतायु , अमित वैद्य सभी ने खेल प्रेमी जनता से अधिक संख्या में उपस्थिति की अपील की है।

पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में टीम इंडिया की खराब शुरूआत

नई दिल्ली। इंग्लैंड के साथ खेले जा रहे पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में टीम इंडिया की पहली पारी की शुरूआत खराब रही है। सलामी रोहित शर्मा केवल छह रन बनाकर आउट हो गये।

इस प्रकार टीम इंडिया ने 19 रनों के अंदर ही अपना एक विकेट गंवा दिया था। तीसरे दिन इंग्लैंड की टीम अपनी पहली पारी में 578 रन बनाकर आउट हो गयी। तीसरे दिन 8 विकेट पर 555 रनों से आगे खेलते हुए इंग्लैंड ने तीसरे दिन 23 रन जोड़े और अपने बचे हुए दोनो विकेट गंवा दिये। जेम्स एंडरसन आउट होने वाले अंतिम बल्लेबाज रहे। वह 1 रन बनाकर अश्विन की गेंद पर आउट हुए। वहीं, लीच 14 रनों पर नाबाद रहे। टीम इंडिया की ओर से जसप्रीत बुमराह और आर अश्विन ने 3-3 विकेट लिए। वहीं, शाहबाज नदीम और ईशांत शर्मा ने 2-2 विकेट लिए। इंग्लैंड की ओर से जो रूट ने 218, सिबली ने 87 और स्टोक्स ने 82 रन बनाये। टीम इंडिया को नौवीं सफलता मिली। जसप्रीत बुमराह ने डॉम बैस को एलबीडब्लू आउट किया है।

बैस 34 रन बनाकर आउट हुए हैं। इसी के साथ बुमराह ने अपना तीसरा विकेट लिया।

डेविस कप कोच अख्तर अली नहीं रहे

कोलकाता। भारतीय डेविस कप टेनिस टीम के पूर्व कप्तान और कोच अख्तर अली का निधन हो गया है। वह पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे। भारतीय डेविस टीम के वर्तमान कोच जीशान अली के पिता अख्तर ने कोलकाता में अंतिम सांस ली। वह 83 वर्ष के थे। सर्व और वॉली गेम की अपनी विशेष कोचिंग शैली के लिये लोकप्रिय रहे अख्तर ने लिएंडर पेस और जीशान सहित कई अन्य खिलाड़ियों को निखारा है। पारिवारिक सूत्रों के अनुसार उन्हें दो सप्ताह पहले शहर के एक अस्पताल में ले जाया गया था जहां डॉक्टरों ने उनके सीने में गांठ के साथ ही प्रोस्टेट कैंसर पाया था। वह पहले से ही पर्किन्सन रोग से पीड़ित थे। दिल्ली में जूनियर राष्ट्रीय शिविर चला रहे जीशान अपने पिता के साथ कुछ समय उनके साथ रहने के बाद सोमवार को ही वापस लौटै थे। पूर्व कोच के निधन पर दिग्गज खिलाड़ी विजय अमृतराज ने ट्वीट किया, ''अख्तर अली शानदार कोच थे। उन्होंने भारतीय टेनिस की बहुत सेवा की। जीशान और उनके परिवार के प्रति मेरी संवेदना हैं।'' अख्तर अली ने 1958 से लेकर 1964 तक आठ डेविस कप मुकाबलों में हिस्सा लिया।

राष्ट्रीय टेबल टेनिस स्पर्धा के लिए मध्य प्रदेश सीनियर टीमें घोषित

इन्दौर। पंचकुला में 15 फरवरी से 23 फरवरी 2021 तक खेली जाने वाली राष्ट्रीय सीनियर टेबल टेनिस चैम्पियनशिप के लिये मध्य प्रदेश की टीमों की घोषणा कर दी गई है। मध्य प्रदेश टेबल टेनिस संगठन के महासचिव जयेश आचार्य ने बताया कि ओम सोनी की अध्यक्षता में श्रीमती रिंकू आचार्य, प्रमोद गंगराडे ने राज्य स्पर्धा में खिलाड़ियों के प्रदर्शन के आधार पर राष्ट्रीय स्पर्धा में भाग लेने वाली टीमों का चयन किया। मध्यप्रदेश की टीमें इस प्रकार हैः- सीनियर पुरूष टीम :- 1. पंकज विश्वकर्मा, इंदौर 2. रोहन जोशी,

इंदौर 3. रोशन जोशी, इंदौर 4. सुजय चतुवेर्दी,ग्वालियर 4. हेमंत रमन इंदौर सीनियर महिला टीम :- 1. अनुषा कुटुम्बले 2. खुशी जैन 3. सारवी बिस्ट 4. अंबिका जायसवाल 5. वैदेही बोयत 6. लक्ष्या बियानी (सभी इंदौर) दोनों टीमों के लिये प्रतीश जंजीरे तथा कुणाल सिंह ठाकुर प्रशिक्षक होंगे। जूही जंजीरे प्रबंधक/महिला प्रशिक्षक नियुक्त की गई है। मध्य प्रदेश की टीमों का विशेष प्रशक्षिण शिविर वरिष्ठ प्रशिक्षक प्रमोद सोनी, रिंकु आचार्य, नीलेश वेद तथा कलीम खान के मागदर्शन में अभय प्रशाल में जारी है। मध्य प्रदेश की टीमो को ओम सोनी, जयेश आचार्य, आलोक खरे, प्रमोद गंगराडे तथा अमित कोटिया की उपस्थिति में एक सादे समारोह में सम्मानित कर खिलाड़ियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए शुंभकामनाएं दी। टीमें 13 फरवरी को इंदौर से प्रस्थान करेगी। टीमों की किट खेल विभाग तथा स्टेग इंटरनेशनल द्वारा प्रायोजित की गई है।

नयी खेलो इंडिया योजना ला रहा खेल मंत्रालय

नई दिल्ली। केन्द्रीय खेल मंत्रालय जल्द ही नयी खेलो इंडिया योजना लाने जा रहा है। खेल मंत्रालय के अनुसार इस योजना को वित्त मंत्रालय की अनुमति के बाद अधिसूचित किया जाएगा। 'खेलो इंडिया योजना' विषय पर शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल मंत्रालयों संबंधी एक संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट के अनुसार, विभाग को पहले आवंटित निधि का सही तरीके से उपयोग करने के ठोस प्रयास करने चाहिए और फिर पर्याप्त संसाधनों को प्राप्त करने की पहल करनी चाहिए। इस समिति ने सुझाव दिया कि विभाग को खेल के क्षेत्र में संसाधन हासिल करने के लिये निजी, कारपोरेट क्षेत्र में सम्पर्क करना चाहिए। रिपोर्ट के अनुसार समिति का यह भी मानना है कि नयी खेलो इंडिया योजना को सांसद निधि योजना के साथ जोड़े जाने की जरुरत है। इस रिपोर्ट में समिति की सिफारिशों पर सरकार की ओर से कहा गया है कि सांसद निधि योजना के साथ खेलो इंडिया योजना को जोड़ने की सिफारिश पर संशोधन के समय विधिवत जांच की जायेगी। इसके साथ ही कहा गया है कि वर्तमान खेलो इंडिया योजना 31 मार्च 2021 तक प्रभावी रहेगी। नयी खेलो इंडिया योजना को लेकर टिप्पणियां मांगी गई थी। ये टिप्पणियां प्राप्त होने पर नयी खेलो इंडिया योजना हेतु व्यय वित्त आयोग ज्ञापन को वित्त मंत्रालय के समक्ष अनुमति के लिये पेश की जाएगी और इसके बाद ही योजना को अधिसूचित किया जायेगा।''

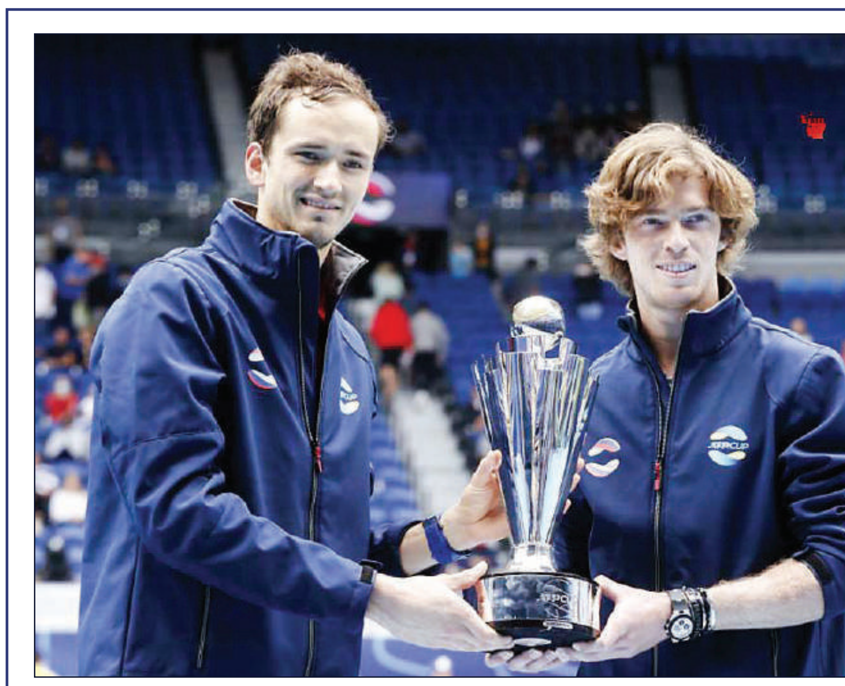

मेलबोर्न में रुस के एटीपी कप विजेता डेनिल मेदवेदेव व एंड्रे रुबलेव ट्राफी के साथ पोज देते हुए।

आईपीएल में अवसर नहीं मिलने से निराश हैं रुट

चेन्नई। इंग्लैंड की टेस्ट टीम के कप्तान जो रूट अपने शानदार प्रदर्शन के बाद भी आईपीएल खेलने का अवसर नहीं मिलने से निराश हैं। रुट ने कहा है कि वह भी आईपीएल खेलना चाहते हैं। रुट टेस्ट क्रिकेट में शीर्ष बल्लेबाजों में माने जाते हैं पर उन्हें टी20 टीम में जगह नहीं मिल पाती है। रुट ने भारतीय टीम के खिलाफ पहले ही टेस्ट में दोहरा शतक लगाया है। इससे पहले श्रीलंका में भी उन्होंने दोहरा शतक लगया था। रुट ने इस साल 2021 की शुरूआत शानदार तरीके से की है। रूट ने श्रीलंका के खिलाफ अब तक 228 और 186 रन की पारी खेली हैं। वहीं भारत के खिलाफ पहले ही टेस्ट में उन्होंने 218 रन बनाये हैं। रूट की शतकीय पारी को लेकर सोशल मीडिया पर बधाई देने वालों में आईपीएल की पूर्व फ्रेंचाइजी राइजिंग पुणे सुपरजाइंट्स के मालिक व आरपीजी के चेयरमैन हर्ष गोयनका भी शामिल थे। अपने ट्वीट ने गोयनका ने कहा, ' जो रूट जब मुझसे मिले थे तो वह मुझसे पूछ रहे थे कि कोई भी टीम मुझे आईपीएल के लिए क्यों नहीं ले रहा है। आईपीएल में आने के लिए मुझे और क्या करने की जरूरत है !'रूट को आईपीएल में किसी फ्रेंचाइजी की ओर से नहीं चुने जाने की वजह छोटे फॉर्मेट में उनका खराब प्रदर्शन भी हो सकता है। रुट ने मई 2019 से कोई टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं खेला है। 32 टी20 मैचों में रूट के नाम 893 रन दर्ज हैं। इस दौरान उनका बल्लेबाजी औसत 35.7 जबकि स्ट्राइक रेट 126.3 रहा है। 30 वर्षीय रूट पहली बार साल 2018 के आईपीएल ऑक्शन में शामिल हुए थे पर किसी भी फ्रेंचाइजी ने अपने साथ जोड़ने में रुचि नहीं दिखाई।

दक्षिण अफ्रीका और भारतीय टीमें करेंगी संयुक्त अभ्यास

नई दिल्ली। भारतीय तैराकी महासंघ ने तैराकी और वाटरपोलो के विकास के लिए दक्षिण अफ्रीकी तैराकी से करार किया है। अब दोनों देशों में तैराकी और वाटरपोलो का संयुक्त रूप से विकास किया जायेगा। इसके तहत दक्षिण अफ्रीका और भारतीय टीमें संयुक्त अभ्यास शिविर में भाग लेंगी और एक दूसरे के खिलाफ खेलेंगी। महासंघ के अध्यक्ष आर एन जयप्रकाश ने कहा ,'' हमें भरोसा है कि इससे भारत में तैराकी और वाटरपोलो बेहतर होगा। ''दक्षिण अफ्रीका तैराकी में काफी मजबूत है और इसके खिलाड़ियों ने ओलंपिक खेलों और फिना विश्व चैम्पियनशिप में कई पदक जीते हैं। उससे भारतीय टीम को लाभ होगा।

स्व.आलोक माहेश्वरी स्मृति क्रिकेट टूनार्मेंट

सारिक वसीम-11, इन्डो राइडर गुजरात, फाइन स्टार रायपुरने अपनी दूसरे दौर मे जीत दर्ज की

भोपाल। प्रथम मैचमें सॉई-11 वर्सेस सारिक वसीम-11 के बीच खेला गया जिसमें सॉई-11 ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 8 ओवर मे89 रन बनाये जिसके जबाव में सारिक वसीम-11 ने लक्ष्य का पीछा करते हुये लक्ष्य प्राप्त कर मैच जीत लिया। जिसमें अनिकेत को बेहतर प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ दा मैच दिया गया ।दूसरेमैच में इन्डो राइडर गुजरात वर्सेस आरसीसी वनखेडी-11 के बीच खेला गया जिसमें इन्डो राइडर गुजरातने 8 ओवर में 117 रन का विशाल स्कोर बनाया जिसके जबाव में आरसीसी वनखेडी लक्ष्य का पीछा करते हुये 94 रन पर ही ढेर हो गई। जिसमें मैन ऑफ दा मैच आनंद निजाम को उनकी आक्रामक बल्लेबाजी के चलते दिया गया ।तीसरामैच सेमी

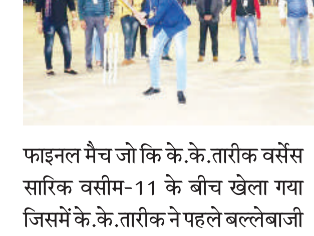

फाइनल मैच जो कि के.के.तारीक वर्सेस सारिक वसीम-11 के बीच खेला गया जिसमें के.के.तारीक ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 93 रन बनाये, जिसके जबाव में सारिक वसीम-11ने लक्ष्य प्राप्त कर लिया और मैच अपने नाम किया। इसमें मैन ऑफ दा मेच अमोल को उनके 83 रनो की बेहतरीन बल्लेबाजी के चलते दिया गया चौथामैच फाइन स्टार रायपुरवर्सेससॉई-11 के बीच खेला गया जिसमें सॉई-11 ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 54 रन बनाये और फाइन स्टार रायपुरने लक्ष्य प्राप्त कर लिया ।जिसमें मैन ऑफ दा मैच कामिल को उनकी बेहतरीन गेंदबाजी के चलते दिया गया। स्व. आलोक माहेश्वरी टेनिस गेंद क्रिकेट प्रतियोगिता में माननीय चिकित्सा शिक्षा एवं गैस राहत मंत्री श्रीविश्वास कैलाश सारंग जी, अभिषेक गोपाल भार्गव जी एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता अरूणेश्वर सिंहदेव जी का मुख्य आतिथ्य प्राप्त हुआ।

newsdesk@motherlandvoice.org
editor@motherlandvoice.org

रानी मुखर्जी की फिल्म 'ब्लैक' को 16 साल हुए पूरे, फिल्म के लिए तैयार नहीं थी अभिनेत्री

मुंबई। संजय लीला भंसाली की फिल्म 'ब्लैक' को 16 साल पूरे हो गए हैं। इस मौके पर रानी मुखर्जी ने एक चौंकाने वाला खुलासा किया है। उन्होंने कहा कि पहले वे यह भूमिका निभाने के लिए तैयार नहीं थीं। फिल्म में रानी ने दिव्यांग लड़की मिशेल मैकनेली का रोल निभाया है। रानी का कहना है कि 'जब संजय ने मुझे यह रोल ऑफर किया तो मैं इसे करने के लिए तैयार नहीं थी। इसके पीछे की वजह फिल्म या किरदार को लेकर कोई संदेह नहीं था, क्योंकि उनके साथ काम करना हर अभिनेता का सपना होता है। मैं भी यह मौका पाकर खुश थी लेकिन एक अभिनेता के तौर पर मुझे भरोसा नहीं था कि मैं ये काम कर पाऊंगी। मैंने इस बारे में संजय से चर्चा भी की, क्योंकि यह बहुत ही मुश्किल रोल था। मैं पहले इस रोल को लेकर बहुत डरी हुई थी।'

अभिनेत्री ने आगे बताया कि जब उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास है कि मैं ये किरदार निभा लूंगी और वो मुझे हर कदम पर इसके लिए मार्गदर्शन देंगे, तब मुझमें इसे लेकर आत्मविश्वास जागा। संजय ने अपना वादा पूरा किया। मुझे गहन प्रशिक्षण दिया गया। मैंने साइन लैंग्वेज सीखी। ऐसे लोगों के साथ मैंने 6 महीने तक बातचीत की और उनकी जिंदगी को करीब से देखा, तब कहीं जाकर मैं मिशेल का किरदार निभाने के लिए सक्षम हो पाई।' इस फिल्म को देखने के बाद दिलीप कुमार ने उनके अभिनय की सराहना की।

रानी ने बताया कि दिग्गज अभिनेता दिलीप कुमार ने फिल्म देखने के बाद मुझे एप्रीसिएशन लेटर भेजा। मुझे लगता है कि एक अभिनेता के रूप में मिली तारीफों में ये मेरे लिए सबसे अहम है कि उन जैसे दिग्गज अभिनेता ने मेरी सराहना की। ये मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है।

अमृता पुरी को सेना की जिंदगी पर आधारित स्क्रिप्ट्स से है लगाव

मुंबई। अभिनेत्री अमृता पुरी को सेना की जिंदगी पर आधारित स्क्रिप्ट्स से खास लगाव है। उनका कहना है कि उनके दादा के भाई जंग के सिलसिले में जेल जा चुके हैं और उनके फूफा भी कारगिल की लड़ाई में शामिल हो चुके हैं। यही वजह है कि किसी जवान या उनके परिवारों की जिंदगी पर आधारित स्क्रिप्ट्स से वह खास लगाव रखती हैं। अब तक अमृता ऐसी दो परियोजनाओं का हिस्सा बन चुकी हैं, जो इसी विषय वस्तु पर आधारित रही है। अमृता कहती हैं कि 'मैंने अपने दादाजी के छोटे भाई से सुना है कि किस तरह से चीन के साथ जंग के दौरान उन्हें युद्ध बंदी बनाकर रखा गया था। उनका नाम कर्नल तिलक पुरी है और वह आज भी जिंदा हैं। उन्होंने हमें बताया था कि किस तरह से उन्हें छह महीने युद्ध बंदी के तौर पर गुजारे थे। उन्हें भारत-तिब्बत सीमा से पकड़ा गया था।' उन्होंने कहा कि 'आर्मी ने उन्हें लापता घोषित कर दिया, यह मान लिया गया कि उनकी मौत हो चुकी है। हालांकि उनकी पत्नी इस बात को नकारती रहीं। उनका मानना रहा कि वह जिंदा हैं और जरूर लौटेंगे और वह लौटे। हालांकि कई ऐसे भी लोग रहे, जिन्होंने अपनी वापसी नहीं की। मेरे फूफा भी कारगिल की जंग में शामिल हो चुके हैं और मैं जानती हूं कि उनकी गैर-मौजूदगी मेरी बुआ को कितनी खलती थी। वह कैसे हैं, कहां हैं, कोई नहीं जानता था, बस दिल में सकारात्मक सोच रखते हुए वह अपने बच्चों के लिए डटी रहीं।' बता दें कि अमृता अब तक सेना पर आधारित प्रोजेक्ट 'प्रिजनर ऑफ वॉर' और 'जीत की जिद' का हिस्सा रह चुकी हैं। एक कलाकार के तौर पर उन्हें इनकी कहानियां काफी पसंद आई।

दिशानी पटानी

अपने डाइट प्लान को दिशा ने दिया धोखा

बॉलीवुड अभिनेत्री दिशानी पटानी ने अपने डाइट प्लान को धोखा दिया। दिशा ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर एक वीडियो पोस्ट किया। इस वीडियो में वह एक फ्लोरल बोट नेक ब्लाउज पहने नजर आ रही हैं और वह कार में बैठी हुई हैं। उन्होंने कैप्शन में लिखा कि 'भोजन को धोखा देने की दिशा में।' वर्कफ्रंट की बात करें तो दिशा अगली बार फिल्म 'राधे' में नजर आएंगी। इस फिल्म में वह सलमान खान और रणदीप हुड्डा की सह-अभिनेत्री के रूप में दिखाई देंगी। इस फिल्म को प्रभुदेवा द्वारा निर्देशित किया गया है। इसके अलावा वह 'एक विलेन 2' के सेट पर फिल्म निमार्ता मोहित सूरी के साथ फिर से जुड़ने के लिए उत्सुक हैं। अभिनेत्री ने इससे पहले अपनी 2020 की फिल्म 'मलंग' पर मोहित के साथ सहयोग किया है। साथ ही दिशा को फिल्म 'केटीना' में भी देखा जाएगा, जो एकता कपूर द्वारा निर्मित है। फिल्म में अक्षय ओबेरॉय और सनी सिंह भी हैं।

पतली पट्टी जैसे टॉप में नजर आई तारा सुतारिया, यूजर्स ने किया ट्रोल

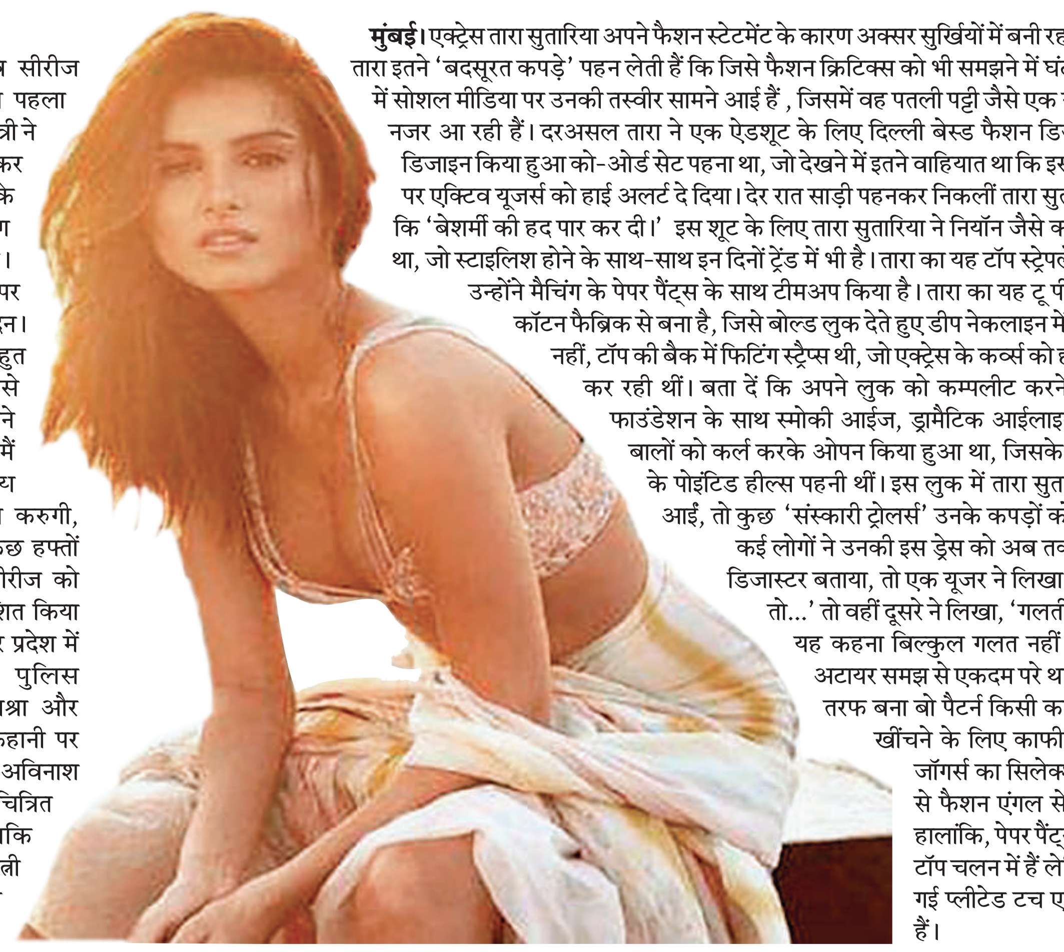

मुंबई। एक्ट्रेस तारा सुतारिया अपने फैशन स्टेटमेंट के कारण अक्सर सुर्खियों में बनी रहती हैं। वह कभी-कभार तारा इतने 'बदसूरत कपड़े' पहन लेती हैं कि जिसे फैशन क्रिटिक्स को भी समझने में घंटों लग जाते हैं। हाल ही में सोशल मीडिया पर उनकी तस्वीर सामने आई हैं , जिसमें वह पतली पट्टी जैसे एक स्टाइलिश टॉप को पहने नजर आ रही हैं। दरअसल तारा ने एक ऐडशूट के लिए दिल्ली बेस्ड फैशन डिजाइनर मंदिरा विर्क का डिजाइन किया हुआ को-ओर्ड सेट पहना था, जो देखने में इतने वाहियात था कि इसने तुरंत सोशल मीडिया पर एक्टिव यूजर्स को हाई अलर्ट दे दिया। देर रात साड़ी पहनकर निकलीं तारा सुतारिया को लोगों ने कहा कि 'बेशर्मी की हद पार कर दी।' इस शूट के लिए तारा सुतारिया ने नियॉन जैसे क्लासिक कलर को चुना था, जो स्टाइलिश होने के साथ-साथ इन दिनों ट्रेंड में भी है। तारा का यह टॉप स्ट्रेपलेस बो पैटर्न में है, जिसे उन्होंने मैचिंग के पेपर पैंट्स के साथ टीमअप किया है। तारा का यह टू पीस अटायर पूरी तरह से कॉटन फैब्रिक से बना है, जिसे बोल्ड लुक देते हुए डीप नेकलाइन में डिजाइन किया है। यही नहीं, टॉप की बैक में फिटिंग स्ट्रैप्स थी, जो एक्ट्रेस के कर्व्स को हाइलाइट करने का काम कर रही थीं। बता दें कि अपने लुक को कम्पलीट करने के लिए तारा ने न्यूड फाउंडेशन के साथ स्मोकी आईज, ड्रामैटिक आईलाइनर, ब्लशी चिक्स और बालों को कर्ल करके ओपन किया हुआ था, जिसके साथ उन्होंने टैन कलर के पोइंटिड हील्स पहनी थीं। इस लुक में तारा सुतारिया की तस्वीरें सामने आईं, तो कुछ 'संस्कारी ट्रोलर्स' उनके कपड़ों को देख बिगड़ गए।

कई लोगों ने उनकी इस ड्रेस को अब तक का सबसे बाद फैशन डिजास्टर बताया, तो एक यूजर ने लिखा, 'हवा का झोंका आया तो...' तो वहीं दूसरे ने लिखा, 'गलती से टॉप खुला गया तो।' यह कहना बिल्कुल गलत नहीं होगा कि तारा का यह अटायर समझ से एकदम परे था। बस्टियर में सामने की तरफ बना बो पैटर्न किसी का भी ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिए काफी है। क्रॉप टॉप के साथ जॉगर्स का सिलेक्शन ऐसा है, जो दूर-दूर से फैशन एंगल से मैच नहीं कर रहा है। हालांकि, पेपर पैंट्स के साथ इन दिनों क्रॉप टॉप चलन में हैं लेकिन पैंट्स में क्रिएट की गई प्लीटेड टच एकदम बेवजह लग रही हैं।

उर्वशी ने 'इंस्पेक्टर अविनाश' का पहला शूटिंग शेड्यूल किया पूरा

अभिनेत्री उर्वशी रौतेला ने वेब सीरीज 'इंस्पेक्टर अविनाश' के शूटिंग का पहला शेड्यूल पूरा कर लिया है। अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर फोटो शेयर कर यह जानकारी दी। उन्होंने फोटो के साथ कैप्शन लिखा कि 'शूटिंग का पहला शेड्यूल पूरा। इंस्पेक्टर अविनाश की सेट पर पहले शेड्यूल का आखिरी दिन। जब मुझे ये रोल मिला तो मैं बहुत एक्साइटेड हुई और इसे निबंध करने के लिए मैने बहुत होमवर्क किया। मैं इस अविश्वसनीय चालक दल को मिस करुगी, जिनके साथ पिछले कुछ हफ्तों समय बिताया।' इस सीरीज को नीरज पाठक द्वारा निर्देशित किया गया है। यह सीरीज उत्तर प्रदेश में अपराध के खिलाफ पुलिस अधिकारी अविनाश मिश्रा और उनके युद्ध की सच्ची कहानी पर आधारित है। इंस्पेक्टर अविनाश को रणदीप हुड्डा द्वारा चित्रित किया जाएगा, जबकि उर्वशी रणदीप की पत्नी पूनम मिश्रा की भूमिका में हैं।

फिल्म 'राधेश्याम' का प्री-टीजर हुआ रिलीज

मुंबई। बहुप्रत्याशित 'राधे श्याम' के निमार्ताओं ने फिल्म का एक छोटा प्री टीजर जारी किया है, जिसमें फिल्म से 'लवर बॉय' प्रभास की झलक दिखाई गई है। टीजर की शुरूआत प्रभास की ब्लॉकबस्टर हिट 'बाहुबली' के लुक से होती है जिसे 'साहो' तक दिखाया गया है, जिसके बाद उन्हें शाम को हल्की बर्फबारी के बीच चलते हुए दिखाया गया है, जिसमें सभी चीजें बेहद प्यारी दिख रही हैं। स्टार के व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द प्री-टीजर दिखाना, कुछ ऐसा है जो भारतीय सिनेमा में पहली बार देखा गया है। फि ल्म की पहली घोषणा के बाद से, प्रशंसक पैन-इंडिया स्टार प्रभास को फिल्म में खूबसूरत अदाकारा पूजा हेगड़े के साथ रोमांस करते देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। लगभग एक दशक के बाद प्रभास को रोमांटिक भूमिका निभाते हुए देखना दिलचस्प होगा। स्टार को आखिरी बार 'डार्लिंग' में लवर बॉय के अवतार में देखा गया था। 'राधेश्याम' एक बहुभाषी फिल्म होगी जो राधा कृष्ण कुमार द्वारा निर्देशित और गुलशन कुमार व टी-सीरीज द्वारा प्रस्तुत होगी। यह यूवी क्रिएशंस द्वारा निर्मित है। फिल्म में प्रभास और पूजा हेगड़े मुख्य भूमिकाओं में हैं, जबकि सचिन खेडकर, प्रियदर्शी, भाग्यश्री, मुरली शर्मा ने प्रमुख भूमिकाओं में हैं। फिल्म भूषण कुमार, वामसी और प्रमोद द्वारा निर्मित है।

मेरी तीन फिल्में रिलीज के लिए तैयार: सलमान

मुंबई। बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान की फिल्म 'राधे' ईद के मौके पर सिनेमाघरों में रिलीज करने के लिए तैयार हैं। इस फिल्म को सिंगल स्क्रीन एंटरटेनर के तौर पर रिलीज करने की बात कही गई है। इसके अलावा सलमान की तीन और फिल्म रिलीज के लिए तैयार हैं। सलमान ने कहा कि 'मेरी फिल्म 'टाइगर 3', 'किक 2' और 'कभी ईद कभी दीवाली' रिलीज के लिए तैयार हैं, लेकिन सिंगल स्क्रीन थिएटर्स वालों के यहां बहुत कम फिल्में रिलीज हो रही हैं। आजकल, सिंगल स्क्रीन सिनेमाघर कब्रिस्तान की तरह महसूस होते हैं, क्योंकि वहां कोई भी फिल्म देखने के लिए नहीं आ रहा है। जाहिर है, कुछ लोग फिर भी इन्हें चला रहे हैं तो कुछ थिएटर बंद हो गए हैं। ये ठीक नहीं है। हम अभिनय के प्रोफेशन में हैं और फिल्में बनाते हैं लेकिन हम उन्हें रिलीज कहां करेंगे? यह कैच-22 जैसी स्थिति है क्योंकि हम दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। सिंगल स्क्रीन थिएटरों में मेरी अच्छी पकड़ है, इसलिए उन्होंने मुझसे सिंगल स्क्रीन में 'राधे' रिलीज करने का अनुरोध किया है।' सलमान ने इंस्टाग्राम पर एक बयान जारी कर अटकलों को विराम दे दिया था। सलमान ने कहा था कि वे अपनी फिल्म को केवल थिएटरों में रिलीज करेंगे, ना कि सीधे ओटीटी पर ले जाएंगे। बता दें कि देशभर के प्रदर्शकों ने सलमान खान से अनुरोध किया था कि वे अपनी फिल्म केवल सिनेमाघरों में रिलीज करें। इस पर उन्होंने सिनेमाघरों से फिल्मों की स्क्रीनिंग के दौरान सभी सुरक्षात्मक कदम उठाने का आग्रह किया था।